दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१६

༄༅། །བཙུན་པ་དབང་པོས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་མཛད་པའི་
མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྔགས་འགའ་ཞིག་
བོད་སྐད་དུ་བཀྲོལ་བ་དང་བཅས་པ་བཞུགས་སོ།།

भदन्त-इन्द्रेण संकलिताः

सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्राः

भोटानुवादसहिताः

[संशोधितं संस्करणम्]



लिप्यन्तरकर्ता सम्पादकश्च
ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५५० खीस्ताब्द-२००६

མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྔགས་འགའ་ཞིག་
བོད་སྐད་དུ་བསྒྲོལ་བ་དང་བཅས་པ་བཞུགས་སོ།།

सूत्र-तन्त्रोद्भवाः कतिपयधारणीमन्त्राः
भोटानुवादसहिताः

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES - 16

SŪTRA-TANTRODBHAVĀḤ KATIPAYADHĀRAṆĪMANTRĀḤ

(With Tibetan translation)

by

Bhadanta Indra

[Revised Edition]



Transcribed and Edited

by

Thinlay Ram Shashni

RARE BUDDHIST TEXTS RESEARCH UNIT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2550 C.E. 2006

RARE BUDDHIST TEXTS SERIES -16

Chief Editor : ***Prof. Geshe Ngawang Samten***

Publication In-charge : ***Samten Chhosphel, Ph.D.***

First Edition: 550 copies, 1997
2nd Edition (Revised): 550 copies, 2003
Reprinted: 1000 copies, 2006

Price : Rs. 55.00

Publisher :
Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, India.

ISBN: 81-87127-55-4

Printed at Surabhi Printers, Maldahiya,Varanasi

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१६

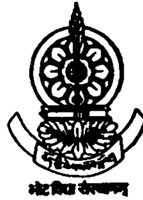
༄༅། །བཙུན་པ་དབང་པོས་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་མཛད་པའི་
མདོ་རྒྱུད་ལས་འབྱུང་བའི་གཟུངས་སྔགས་འགའ་ཞིག་
བོད་སྐད་དུ་བཀྲོལ་བ་དང་བཅས་པ་བཞུགས་སོ།།

भदन्त-इन्द्रेण संकलिता:

सूत्र-तन्त्रोद्भवा: कतिपयधारणीमन्त्रा:

भोटानुवादसहिता:

[संशोधितं संस्करणम्]



लिप्यन्तरकर्ता सम्पादकश्च

ठिनलेराम शाशनी

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द-२५५० खीस्ताब्द-२००६

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१६

प्रधान सम्पादक : प्रो० गेशे ङवङ् समतेन

प्रकाशन प्रभारी : डॉ० समतेन छोस्फेल

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९७
द्वितीय संस्करण(संशोधित) : ५५० प्रतियाँ, २००३
तृतीय संस्करण : १००० प्रतियाँ, २००६

मूल्य : रु० ५५.००

प्रकाशक : केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

ISBN: 81-87127-55-4

मुद्रक : सुरभि प्रिन्टर्स, मलदहिया, वाराणसी ।

प्रकाशकीय वक्तव्य

बौद्धपरम्परा में धारणीमन्त्रों को लौकिक एवं लोकोत्तर सिद्धियों का महत्त्वपूर्ण अङ्ग माना जाता है। परन्तु, मन्त्रों का वाचन या जप मात्र पर्याप्त नहीं है। सम्पूर्ण तन्त्र-शास्त्र और साधना के परिप्रेक्ष्य में मन्त्र को देखा जाना चाहिये। प्रत्येक मन्त्र के साथ साधना-पद्धति और गम्भीर दर्शन जुड़े हुये हैं। इन के समीचीन हृदयङ्गम और यथावत् ध्यानभावना से ही शास्त्रोल्लिखित सिद्धि की प्राप्ति होती है।

आज के इस भौतिकयुग में भी लोगों की इन पर इतनी आस्था है, यह इसी से प्रतीत होता है कि श़लु लोचावा द्वारा संगृहीत तथा भदन्त इन्द्र (चुन-प-वङ्-पो) द्वारा प्रतिसंस्कृत धारणीमन्त्रसंग्रह का प्रथम संस्करण शीघ्र ही समाप्त हो गया। आज इसके दूसरे संस्करण को प्रकाशित कर साधकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है।

इस ग्रन्थ के सम्पादक, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग में कार्यरत श्री ठिनलेराम शाशनी ने इस संस्करण में रोमन लिपि में भी लिप्यन्तरकर विभिन्न बौद्धतन्त्र ग्रन्थों के अद्यतनीय संस्करणों में उट्टङ्कित धारणीमन्त्रों, धारणीसंग्रह-आदि पाण्डुलिपियों तथा साधनमाला आदि में दिये हुए धारणी-मन्त्रों से इन मन्त्रों को मिलाकर यथासंभव शुद्ध करने का प्रयत्न किया है और सभी पाठों को टिप्पणी में दे दिया है। इस प्रकार यह संस्करण सामान्य पाठकर्ताओं, प्रबुद्धपाठकों एवं शोधकर्ताओं के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा।

इस ग्रन्थ के शुद्ध और सुरुचिपूर्ण सम्पादन के लिये हम इसके संस्कर्ता श्री ठिनलेराम शाशनी को साधुवाद के साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं तथा इस कार्य को निष्पन्न करने में सहयोगकर्ताओं के प्रति भी आभार व्यक्त करते हैं।

भवतु सर्व मङ्गलम्।

सारनाथ
28 जुलाई, 2003

प्रो० गेशे ङ्वङ् समतेन
(निदेशक)

•

དཔར་སྐྲུན་ཆེད་བརྗོད།

སངས་རྒྱས་པའི་ལུགས་ལ་གཟུངས་སྔགས་ནི་འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་དངོས་གྲུབ་སྒྲུབ་པའི་ཆ་ཤས་གལ་ཆེན་ཞིག་ཏུ་འདོད། འོན་ཀྱང་མཆོག་སྒྲུབ་པ་ལ་གཟུངས་སྔགས་ཀྱི་བཟླས་བརྗོད་ཙམ་གྱིས་མི་ཆོག་པར་གསང་སྔགས་ཀྱི་རྒྱུད་གཞུང་སྡེ་དང་བྱེ་བྲག་སོ་སོའི་གོ་བ་ཆགས་པའི་ཐོག་ནས་སྒྲུབ་ཐབས་ལ་ཞུགས་དགོས། གཟུངས་སྔགས་སོ་སོར་བསྒོམ་སྒྲུབ་ཀྱི་ཚུལ་དང་ལྟ་བའི་ཟབ་གནད་ཀྱི་གཞི་རྟེན་ཡོད་པས་དེ་དག་ཡང་དག་པར་ཁོང་དུ་ཆུད་པ་དང་ཚུལ་བཞིན་དུ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་ལ་གཞོལ་ན་གཞུང་ནས་བཤད་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་རིགས་རྣམས་འབྱུང་ནུས་པ་ཡིན་ནོ།།

དེང་ཕྱི་དངོས་པོ་གཙོ་ཆེར་འཛིན་པའི་དུས་འདིར་ཡང་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་གཟུངས་སྔགས་ལ་དད་མོས་ཆེན་པོ་ཡོད་པར་སྣང་། དེ་ཡང་ཞ་ལུ་ལོ་ཆེན་གྱིས་ཕྱོགས་བསྡུས་མཛད་ཅིང་། སློབ་དཔོན་བཙུན་པ་དབང་པོས་དག་ཞུས་གནང་བའི་གཟུངས་སྔགས་ཕྱོགས་བསྡུས་དཔར་ཐེངས་དང་པོ་དེ་དུས་ཡུན་ཐུང་དུ་ཞིག་ནང་ཆ་ཚང་རྫོགས་ཟིན་པར་བརྟེན། ད་ལན་དེབ་འདིའི་དཔར་ཐེངས་གཉིས་པ་ཉམས་ལེན་པ་རྣམས་ཀྱི་མདུན་དུ་བསྐྲུན་ཐུབ་པར་སྤྲོ་བ་ཆེན་པོ་བྱུང་།

ཆེས་དཀོན་གསུང་རབ་སྐྲུན་ཚན་གྱི་ལས་བྱེད་གཞུང་འདིའི་ཞུ་སྒྲིག་པ་ཚོ་དང་ལྷན་པ་འཕྲིན་ལས་རྣམ་ཤྲཱ་ཤྲཱི་ནས་པར་ཐེངས་འདིར་གཟུངས་སྔགས་རྣམས་ཀྱི་དབྱིན་ཡིག་གི་གཟུགས་སུ་སྒྲ་གཟུགས་ཕབ་བསྒྱུར་དང་། དེང་ལུགས་ལྟར་གཟུངས་སྔགས་རྣམས་དང་གཟུངས་བསྡུས་ལ་སོགས་པའི་རྩ་བའི་མ་དཔེ་ཁག་དང་། སྒྲུབ་ཐབས་ཀྱི་ཕྲེང་བ་ལ་

སོགས་པར་བསྟན་པའི་གཟུངས་སྔགས་རྣམས་དང་མཚུངས་བསྒྱུར་དང་སྦྲགས། ཞུས་དག་གང་ནུས་བྱས་ཏེ་མི་འདྲ་བ་རྣམས་འོག་མཆན་དུ་བཀོད་པ་འདི་ནི་གཟུངས་སྔགས་ཀློག་པ་པོ་སྤྱི་དང་། མཁས་པ་ཁག་དང་། ཉམས་ཞིབ་པ་རྣམས་ལ་ཕན་ཐོགས་ཆེན་པོ་ཡོད་པའི་རེ་བ་ཡོད།

དགའ་དད་སྤྲོ་གསུམ་གྱི་སྒོ་ནས་གཞུང་འདིའི་ཞུས་དག་དང་ཕྱོགས་བསྒྲིགས་གནང་མཁན་ཚེ་དང་ལྡན་པ་འཕྲིན་ལས་རྣམ་ཤྲཱཀྲཱི་ལ་བསྔགས་བརྗོད་དང་མ་འོངས་མདུན་ལམ་བཟང་པོའི་སྨོན་འདུན་ཡོད། གཞན་ཡང་བྱ་བ་འདི་མཐར་འཁྱོངས་ཡོད་པར་མཐུན་འགྱུར་གནང་མཁན་ཚང་མ་ལའང་ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ཞུ་རྒྱུ་ཡིན།

ཝཱཎ་དབུས་བོད་ཀྱི་ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་གཉེར་ཁང་གི་རིས་སྟོན་པ་དགེ་བཤེས་ངག་དབང་བསམ་གཏན་གྱིས་ཕྱི་ལོ་ ༢༠༠༣ ཟླ་ ༧ ཚེས་ ༢༨ ཉིན་བྲིས་པ་དགེ་ལེགས་འཕེལ།།

PUBLISHER'S NOTE

In the Buddhist tradition the *dharāṇi-mantras* constitute an important part in the process of realization of mundane and trans-mundane attainments. However, mere recitation or reading of *mantras* is not sufficient. One should look into them in the context of holistic picture of the entire tantric system and their gradual stages of practices. Each *mantra* is connected with the practical procedural methods as well as with sophisticated philosophical views. One can attain various realizations mentioned in the treatises with thorough understanding of the system and genuine meditational practices.

In this materialistic era also there is a great enthusiasm among the people in this very field of learning, as the first edition of the collection of *dharāṇi-mantra* of *Shalu Lotsawa* and revised by *btsun-pa-dbaṇ-po* (*Bhadant Indra*) sold-out so quickly. It is pleasure to bring out the second revised edition before the scholars and practitioners.

Mr. Thinlay Ram Shashni, who edited this second edition, is presently working in the Rare Buddhist Texts Research Unit. In this revised edition he has provided the romanised version based on lately published *dhāraṇi-mantras*, manuscripts of collection *dhāraṇi* and those in the *Sādhanamālā*. Correcting the obvious scribal mistakes and misprints in the respective sources, he has provided the varient readings in the footnotes. Thus, I hope that this edition will be useful for common folks, scholars and researchers as well.

I appreciate Mr. Thinlay Ram Shashni's effort to bring out this collection of *dhāraṇi-mantra* with upgraded revised version. I also thank those who have extended their cooperation in accomplishing this work.

May all beings be happy.

Sarnath : Prof. Geshe Ngawang Samten
28th July, 2003. (Director)

पुरोवाक्

प्रस्तुत ग्रन्थ को भोट आचार्य भदन्त इन्द्र (བཙུན་པ་དབང་པོ་) ने तत्कालीन भोट नरेश की आज्ञा के अनुसार महापण्डित श़लु लोच़ावा के द्वारा संगृहीत धारणीमन्त्रों को पुनः संकलितकर, प्रारम्भ और अन्त में कुछ महत्त्वपूर्ण धारणी-मन्त्रों को समाविष्टकर तथा ग्रन्थ का सम्यक् परिष्कारकर भोटानुवाद के साथ भोटलिपि में प्रकाशित किया है। प्रस्तुत ग्रन्थ में कुल 82 धारणीमन्त्र हैं। इनमें से अधिकांश वे हैं जो बौद्ध समाज में अत्यन्त प्रचलित हैं। अवशिष्ट वे हैं जो बौद्ध तान्त्रिक अनुष्ठानों से सम्बद्ध हैं।

भदन्त इन्द्र (བཙུན་པ་དབང་པོ་) द्वारा संगृहीत धारणी-मन्त्रों के संग्रह का द्वितीय संस्करण पाठकों के समक्ष परिमार्जन कर प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। अप्रत्याशित रूप से ग्रन्थ के प्रति पाठकों की रुचि, विशेषकर मठों में निवास कर रहे भिक्षुओं एवं विदेशी बौद्ध धर्मावलम्बियों के कारण ग्रन्थ का प्रथम-संस्करण शीघ्र ही बिक गया। इस से उत्साहित होकर मैंने ग्रन्थ का लाभ अधिकाधिक पाठकों को मिल सके, इस दृष्टि से प्रस्तुत संस्करण में धारणी-मन्त्रों का भोट-लिपि से नागरी-लिपि के अतिरिक्त रोमन-लिपि में भी लिप्यन्तर किया है।

इस ग्रन्थ की एक प्रति जिसे मैंने 'क' से संकेत किया है, मुझे श्री ङ्वङ् रिगजिन (वागिन्द्र विद्याधर), गाँव तिन्नों, जिला लाहुल एवं स्पिति के व्यक्तिगत संग्रह से प्राप्त हुई। वास्तव में उन्हीं की प्रेरणा एवं आग्रह पर ही मैंने इस ग्रन्थ को भोट लिपि से देवनागरी में लिप्यन्तर एवं सम्पादन करने का प्रयास किया। इसकी दूसरी 'ख' प्रति मुझे शान्तरक्षित पुस्तकालय में मिली, जो 'टिबेटन बोनपो मोनास्टिक सेन्टर, दोलनजी, सोलन, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित हुई है। यह प्रति काफी बाद की प्रतीत होती है। इस की विशेषता यह है कि इसमें सभी धारणीमन्त्रों का शीर्षक भोट भाषा में दिया है, जबकि 'क' प्रति में मन्त्रों का शीर्षक नहीं दिया है। मैंने इनका भी यथास्थान अनुवाद कर दिया है। यद्यपि इन दोनों प्रतियों के पाठों में विशेष अन्तर नहीं है।

प्रथम-संस्करण में मन्त्रों की गम्भीरता एवं संस्कृत-स्रोत के अभाव में सम्पादन का कार्य आंशिक रूप में ही किया जा सका। सम्प्रति बौद्ध तन्त्र के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। उन तन्त्र ग्रन्थों में प्रसंगवश धारणीमन्त्रों का भी समावेश है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय अभिलेखालय, नेपाल से प्राप्त ''धारण्यादि संग्रह'' नामक पाण्डुलिपि, जिसमें लगभग 263 धारणी-मन्त्रों का संग्रह है। यद्यपि इस पाण्डुलिपि में लिपि की अस्पष्टता एवं भाषागत

अनेक त्रुटियाँ हैं; फिर भी इस ग्रन्थ के सम्पादन में इसकी उपयोगिता बहुत अधिक रही है; क्योंकि प्रस्तुत ग्रन्थ के अधिकाँश धारणीमन्त्र इस संग्रह में उपलब्ध होते हैं। इसके अतिरिक्त विनयतोष भट्टाचार्य द्वारा सम्पादित और ओरियण्टल इन्स्टीच्यूट, बडौदा से 1968 में प्रकाशित साधन-माला (दो भाग) तथा दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित विविध बौद्ध तन्त्र ग्रन्थों में उपलब्ध मन्त्रों से भी सम्पादन में सहायता ली गई है। सम्पादन करते समय इस बात पर विशेष ध्यान रखा गया है कि भदन्त इन्द्र के द्वारा संकलित एवं भोट भाषा में अनूदित धारणी-मन्त्रों के स्वरूप में अधिक परिवर्तन न करते हुये पाठ-भेदों को पाद-टिप्पणी में ही रखा जाये। मन्त्रों का सम्पादन अन्य ग्रन्थों की भाँति करना संभव नहीं है, इसलिए जहाँ बहुत आवश्यक हो वहां पाठ-भेद को सुझाव के रूप में कोष्ठक में रख दिया गया है। एक ही मन्त्र के कई पाठान्तर मिलने पर ऐसे स्थलों में पाठ-निर्णय करना अत्यन्त कठिन था, अतः मैंने पाद-टिप्पणी में देना ही उचित समझा। दूसरी ओर, जिस धारणीमन्त्र में पाठ-भेदों की बहुलता हो, ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण धारणी-मन्त्र को ही पाद-टिप्पणी में दे दिया गया है, ताकि ऐसे स्थलों में सुधीजन स्वयं निर्णय लेकर मन्त्रों का पाठ निर्धारण कर सके। सम्पादन के तहत विभिन्न स्रोतों से उपलब्ध पाठों का संकेत एवं सूचनायें यथास्थान दे दी गई हैं।

भोटभाषा में उपलब्ध विभिन्न बौद्ध तान्त्रिक अनुष्ठानों एवं पूजा-विधियों के ग्रन्थों में जिन धारणीमन्त्रों के लिप्यन्तर हुए हैं, वे कमोवेश भ्रष्ट रूप में मिलते हैं। इससे मन्त्रों के उच्चारण में भी दोष आ जाता है तथा मन्त्रों की सिद्धि में भी संदेह उत्पन्न करता है। अतः प्रस्तुत लघु ग्रन्थ का सम्पादन इस ओर किञ्चित् प्रयासमात्र है। यद्यपि मन्त्रों को भाषा के आधार पर शुद्ध करना निःसंदेह बहुत कठिन ही नहीं अपितु असंभव-सा है। विशेषकर बीजमन्त्रों का, क्योंकि बीजाक्षर साधना की अवस्था में निष्पन्न देवबिम्बों के प्रतीक स्वरूप हैं इसलिए साधना की उस अवस्था विशेष में पहुँचे विना इन बीजाक्षरों की शुद्धि सम्भव नहीं है। भोट आचार्यों ने भी इन बीजाक्षरों का भोट भाषा में अनुवाद नहीं किया है, बल्कि बीजाक्षर को यथावत लिप्यन्तर कर रख दिया है। इसलिए साधना के अभाव में मात्र भाषा के आधार पर इन बीजाक्षरों का संशोधन करना समीचीन नहीं होगा।

इस तरह इस संस्करण में मैंने मन्त्रों की गूढ़ता एवं रहस्यात्मकता के बावजूद कतिपय स्थलों में जहाँ स्पष्ट अशुद्धि परिलक्षित होती है, वहाँ पाठों को संशोधित करने का प्रयास किया है; अन्यत्र स्थलों में पाठान्तरों को पाद-टिप्पणी में दे दिया है, ताकि तन्त्रशास्त्र के वेत्ता एवं शोधकर्ता भविष्य में ऐसे स्थलों पर यथोचित पाठ-निर्णय कर सके।

प्रथम संस्करण के प्राक्कथन में मन्त्रों की व्युत्पत्तियाँ, जो विभिन्न बौद्धतन्त्र ग्रन्थों से संकलित कर दी गई थी, इस सम्बन्ध में कुछ पाठकों का सुझाव था कि उन स्थलों का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए, ताकि मन्त्रों के स्वरूप को समझने में सामान्य पाठकों को भी सुविधा हो। यह सुझाव मुझे समीचीन जान पड़ा। तदनुसार, मैंने प्रथम संस्करण के प्राक्कथन के अधिकाँश अंशों को संशोधित एवं परिमार्जित कर भूमिका में प्रस्तुत किया है। आशा है पाठकों को नि:संदेह इससे कुछ लाभ मिलेगा।

इस ग्रन्थ को दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करने के लिए मैं संस्थान के पूर्व निदेशक प्रो० एस० रिन्पोछे जी का अत्यन्त आभारी हूँ। संस्थान के वर्तमान निदेशक प्रो० गेशे ङ्वङ् समतेन जी के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने द्वितीय-संस्करण को प्रकाशित करने की अनुमति देकर और प्रकाशकीय लिखकर इस ग्रन्थ की उपयोगिता को और बढ़ाया है। दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग के कार्यकारी निदेशक पं० जनार्दन पाण्डेय जी ने इस ग्रन्थ में आवश्यक प्रूफ संशोधन कर ग्रन्थ का परिष्कार किया है, एतदर्थ मैं उन्हें भी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

इस ग्रन्थ के परिष्कार में गेशे ङवङ् समतेन, डॉ० वङ्छुक दोर्जे नेगी, भिक्षु ज्ञलछेन नमडोल, डॉ० बनारसी लाल आदि विद्वानों का भी विशेष योगदान रहा है, एतदर्थ मैं इन सभी विद्वानों का भी हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। प्रकाशन-अनुभाग के प्रभारी श्री समतेन छोस्फेल को भी ग्रन्थ के प्रकाशन सम्बन्धी कार्य सम्पन्न करने के लिए धन्यवाद देता हूँ। मेरे सहयोगिनी डॉ० छेरिङ्ग डोलकर ने ग्रन्थ के भोट-अंश के प्रूफ-संशोधन में अपेक्षित सहयोग प्रदान किया है, मैं उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। विशेषकर, मेरे ग्रामवासी श्री ङ्वङ् रिगजिन जिसने मुझे इस ग्रन्थ की सूचना दी तथा अपनी व्यक्तिगत पाण्डुलिपि सौंपकर प्रकाशनार्थ उत्साहित किया, का हृदय से आभार प्रकट करते हुये धन्यवाद देता हूँ। अन्त में सुधी पाठकों से निवेदन है कि ग्रन्थ में रह गई त्रुटियों एवं अपने अमूल्य सुझावों से अवश्य अवगत करायें, ताकि आगे के संस्करणों में भी अपेक्षित सुधार किया जा सके।

सारनाथ
28 जुलाई, 2003

ठिनलेराम शाशनी
दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग

•

अनेन मम पुण्येन सर्वसत्त्वा अशेषतः ।
विरम्य सर्वपापेभ्यः कुर्वन्तु कुशलं सदा ॥

मा कश्चिद् दुःखितः सत्त्वो मा पापी मा च रोगितः ।
मा हीनः परिभूतो वा मा भूत् कश्चिच्च दुर्मनाः ॥

(बोधिचर्यावतार 10.31,41)

विषय-सूची

•

तथतां च महादेवीं बुद्धबोधिं नमाम्यहम् ।
वसुमतीं महालक्ष्मीं रत्नज्वालां नमे नमे ॥

उष्णीषविजयां देवीं मारीचीं पर्णशाबरीम् ।
जाङ्गुलिं धारणीं वन्दे अनन्तमुखधारणीम् ॥

चुन्दां प्रज्ञां च पद्मां च सर्वावरणशोधनीम् ।
अक्षयज्ञानकारण्डं धर्मकायवतीं नमे ॥

(धर्मधातुवागीश्वरमण्डलस्तोत्रम् 17-19)

भूमिका

महायान बौद्ध वाङ्मय में धारणियों का अत्यन्त महत्त्व है। धारणियों को बुद्धवचन ही माना गया है। धारणी-मन्त्र बुद्धवचन होने के कारण इनकी अमोघता पर संदेह नहीं किया जा सकता। धारणियों को मन्त्रात्मक वाणियाँ ही मानना चाहिए। भोट आचार्यों ने भी धारणियों का संकलन तन्त्रवर्ग के अन्तर्गत क-ग्युर (बुद्धवचन) में किया है। [1]सद्धर्म-पुण्डरीक (धारणीपरिवर्त) में भी धारणीमन्त्रों को असंख्य बुद्धों द्वारा भाषित कहा है। इन धारणीमन्त्रों के द्वारा ऐहिक सुख-शान्ति की प्राप्ति, दुःख-बाधाओं से निवृत्ति तथा सद्गति और अन्ततोगत्वा कर्म और क्लेश के बन्धन से मुक्त होकर परमपद की भी प्राप्ति हो सकती है। भारत के पड़ोसी देश तिब्बत, भूटान, नेपाल, चीन, ताइवान, जापान, कोरिया तथा भारत के सीमान्तवर्ती बौद्ध क्षेत्रों में इन धारणीमन्त्रों का अत्यन्त श्रद्धा एवं विश्वास के साथ पाठ किया जाता है। विशेषकर सामान्यजनों का धारणीमन्त्रों के पाठ करने से ऐहिक सुख-शान्ति एवं सद्गति की प्राप्ति में अटूट विश्वास है।

ऐसा प्रतीत होता है कि चीन आदि देशों में धारणी एवं मन्त्रों का प्रचलन उन देशों में बौद्धधर्म के प्रवेश के साथ ही हुआ होगा। चीन में श्रीमित्र ने (ई० 307-42) महामायूरी आदि अनेक धारणियों का अनुवाद किया है। बाद में अतिगुप्त ने भी ई० 654 में धारणी-समुच्चयसूत्र (T.901, K. 308) नामक ग्रन्थ का अनुवाद किया है। इसीप्रकार [2]जापान के होर्युजी विहार में भी 7वीं शताब्दी के प्रारम्भ से उष्णीषविजयाधारणी तथा प्रज्ञापारमिता-हृदयसूत्र तालपत्रों में सुरक्षित हैं। नेपाल में भी प्रारम्भ से ही धारणियों का अत्यन्त प्रचलन रहा है। नेपाल के बौद्ध समाज में भी धारणियाँ ऐहिक सुख एवं शान्ति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं। यहाँ विशेषकर, पञ्चरक्षाधारणी नाम से प्रसिद्ध महाप्रतिसरा, महासाहस्रप्रमर्दिनी, महामायूरी, महाशीतवती तथा महारक्षा-मन्त्रानुसारिणी जो विभिन्न रोगों, विषैले जानवरों, बुरी आत्माओं एवं ग्रहों आदि तथा पाप का शमन करने वाली हैं का अत्यन्त श्रद्धा के साथ पाठ किया जाता है। नेपाल के विहारों, संग्रहालयों, पुस्तकालयों एवं व्यक्तिगत संग्रहों में धारणीमन्त्रों के अनेक संग्रह प्राप्त होते हैं, लेकिन अधिकांश पाण्डुलिपियों तक ही सीमित हैं। अभी तक सम्भवतः इन धारणीमन्त्रों का कोई शोधात्मक सम्पादन नहीं हुआ है।

---

1. इमानि भगवन् मन्त्रधारणीपदानि द्वाषष्टिभिर्गङ्गानदीवालुकासमैर्बुद्धैर्भगवद्भिर्भाषितानि। (धारणी परिवर्त) पृ० 406, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1966.
2. The Tantric Ritual of Japan, p. 21

अनेक बौद्ध विद्वानों ने धारणीमन्त्रों का समय ई० पू० 100-400 ई० तक माना है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने भी मन्त्रयान के रूप में अलग यान मानकर मन्त्र के विकासक्रम को दर्शाते हुये निम्नकालों में विभाजित किया है—1. सूत्ररूप में मन्त्र—ई० पू० 400-100, 2. धारणी-मन्त्र—ई० पू० 100-400 ई०, तथा 3. मन्त्र-मन्त्र—ई० 400-700; लेकिन धारणीमन्त्रों को बुद्धभाषित माना जाता है, इसलिए बुद्धवचनों को कालों में विभाजित कर इतिहास के विकासक्रम में अध्ययन करना कहाँ तक समीचीन होगा, विचारणीय है। इसीप्रकार डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य ने भी धारणियों में मन्त्रों के विकास का विस्तार से विवेचन करते हुए अष्टसाहस्रिकाप्रज्ञापारमिता का विकास क्रमशः प्रज्ञा-पारमिताहृदयसूत्र, प्रज्ञापारमिताधारणी, प्रज्ञापारमितामन्त्र के क्रम से 'प्रं' नामक बीजाक्षर में माना है।

महायानसूत्रों के साथ धारणियों का समावेश अनेक रूपों में देखा जा सकता है। ललितविस्तर, सद्धर्मपुण्डरीक और लंकावतारसूत्र आदि अनेक महायान के ग्रन्थों में धारणीपदों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि धारणियों का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है; किन्तु, अनेक धारणियाँ सूत्र ग्रन्थों के साथ भी समाविष्ट हैं। महायानसूत्र दिव्यावदान में 'ॐ मणिपद्मे हूँ' जैसे सुप्रसिद्ध अवलोकितेश्वरहृदयमन्त्र उपलब्ध है। महायानसूत्रों के अतिरिक्त तन्त्र ग्रन्थों में भी धारणियाँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं।

सद्धर्मपुण्डरीक नामक ग्रन्थ में भैषज्यराज ने सद्धर्मपुण्डरीक धर्मपर्याय को कण्ठगत एवं पुस्तकगत करके धारण करने वाले कुलपुत्र एवं कुलपुत्री के हित, सुख, अनुकम्पा, रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-पदों को कहा है और भगवान ने इसका अनुमोदन किया है। इन धारणी-पदों के बारे में भैषज्यराज आदि ने कहा है कि ये धारणी-मन्त्र असंख्य तथागत, अर्हत् एवं सम्यक्संबुद्धों के द्वारा कहे गये हैं, तथा वह उन सभी भगवान् बुद्धों का द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकारके सूत्रान्तधारकों का अपमान करेगा। इस संदर्भ में [1]सद्धर्मपुण्डरीक (धारणीपरिवर्त) में उल्लिखित वचन इस

---

1. अथ खलु भैषज्यराजो बोधिसत्त्वो महासत्त्वस्तस्यां वेलायां भगवन्तमेतदवोचत्। दास्यामो वयं भगवंस्तेषां कुलपुत्राणां कुलदुहितॄणां वा येषामयं सद्धर्मपुण्डरीको धर्मपर्यायः कायगतो वा स्यात् पुस्तकगतो वा रक्षावरणगुप्तये धारणीमन्त्रपदानि। तद्यथा—"अन्ये मन्ये मने-----अमन्यनताये स्वाहा।" इमानि भगवन् मन्त्रधारणीपदानि द्वाषष्टिभिर्गङ्गानदीबालुकासमैर्बुद्धैर्भगवद्भिर्भाषितानि। ते सर्वे बुद्धा भगवन्तस्तेन द्रुग्धाः स्युर्य एवंरूपान् धर्मभाणकानेवंरूपान् सूत्रान्तधारकानतिक्रामेत्। अथ खलु भगवान् भैषज्यराजाय बोधि-सत्त्वाय महासत्त्वाय साधुकारमदात्। साधु साधु भैषज्यराज सत्त्वानामर्थः कृतो धारणीपदानि भाषितानि सत्त्वानामनुकम्पामुपादाय रक्षावरणगुप्तिः कृता।-----अथ खलु वैश्रवणो महाराजो भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाषिष्ये तेषां धर्मभाणाकानां हिताय सुखायानुकम्पायै रक्षावरणगुप्तये। तद्यथा—"अट्टे तट्टे नट्टे वनट्टे अनड़े नाड़ि कुनड़ि स्वाहा।" एभिर्भगवन् धारणीपदैस्तेषां धर्मभाणकानां

प्रकार हैं—"महासत्त्व बोधिसत्त्व भैषज्यराज भगवान से यह बोले—वे कुलपुत्र या कुलकन्याएँ जो इस सद्धर्मपुण्डरीक नामक धर्मपर्याय को कण्ठगत या पुस्तकगत कर रखती हैं, उनकी रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-मन्त्र के पदों को देंगे, वे इस प्रकार हैं—"अन्ये मन्ये मने ममने-------अमन्यनताये स्वाहा।" हे भगवन्! ये धारणी-मन्त्र के पद बासठ गंगा नदियों की बालुका के समान (असंख्य) भगवान् बुद्धों के द्वारा कहे गये हैं। वह उन सभी भगवान् बुद्धों का द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों का अपमान करेगा। तदनन्तर भगवान् ने महासत्त्व बोधिसत्त्व भैषज्यराज को साधुवाद दिया—हे भैषज्यराज! तुमने बहुत अच्छा किया है। प्राणियों पर दया करके उन धारणीपदों को कहकर तुमने उनका हित किया और उन प्राणियों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति की।---तत्पश्चात् महाराज वैश्रवण भगवान् से यह बोले— हे भगवन्! मैं भी उन धर्मभाणकों के हित, सुख, अनुकम्पा, रक्षा, आवरण एवं गुप्ति के लिए धारणी-पदों को कहूँगा। वे इस प्रकार हैं—'अट्टे तट्टे नट्टे वनट्टे अनड़े नाड़ि कुनड़ि स्वाहा।' हे भगवन्! इन धारणीपदों के द्वारा मैं सौ योजन से उन धर्मभाणक पुद्गलों की रक्षा करता हूँ तथा इस प्रकार उन कुलपुत्रों एवं कुलपुत्रियों तथा इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों की रक्षा हो जायगी एवं कल्याण होगा। तदनन्तर-----महाराज विरूढक भगवान् से बोले—हे भगवन्! मैं भी बहुजनहिताय बहुजनसुखाय तथा इस प्रकार के धर्मभाणकों एवं इस प्रकार के सूत्रान्तधारकों की रक्षा आवरण एवं गुप्ति के लिए इस धारणीमन्त्र के पदों को कहूँगा। यथा— 'अगणे गणे गौरि गन्धारि चण्डालि मातङ्गि पुक्कसि संकुले व्रूसलि सिसि स्वाहा।' हे भगवन्! ये वे धारणी-मन्त्र के पद हैं, जिनको बयालीस कोटि बुद्धों ने कहा था। वह उन सबका द्रोही होगा, जो इस प्रकार के धर्मभाणकों का अपमान करेगा।" इत्यादि।

अतः उपर्युक्त सूत्रग्रन्थ में उल्लिखित वचनों से निश्चित है कि धारणियाँ बुद्धोक्त हैं और धारणीमन्त्रों के द्वारा प्राणियों की रक्षा, आवरण एवं गुप्ति आदि होती है। चन्द्रकीर्ति विरचित गुह्यसमाजतन्त्र की टीका [1]प्रदीपोद्योतन में 'बुद्धसैन्यमपि क्रुद्धं नाशं गच्छेन्न संशयः'

पुद्गलानां रक्षां करोमि योजनशताच्चाहं तेषां कुलपुत्राणां कुलदुहितॄणां चैवंरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां रक्षा कृता भविष्यति स्वस्त्ययनं कृतं भविष्यति। अथ खलु विरूढको महाराजो------भगवन्तमेतदवोचत्। अहमपि भगवन् धारणीपदानि भाषिष्ये बहुजनहिताय तेषां च तथारूपाणां धर्मभाणकानामेवंरूपाणां सूत्रान्तधारकाणां रक्षावरणगुप्तये धारणीमन्त्रपदानि। तद्यथा—"अगणे गणे गौरि गन्धारि चण्डालि मातङ्गि पुक्कसि संकुले व्रूसलि सिसि स्वाहा।" इमानि तानि भगवन् धारणीमन्त्रपदानि यानि द्वाचत्वारिंशद्भि-र्बुद्धकोटीभिर्भाषितानि। ते सर्वे तेन द्रुग्धाः स्युर्यस्तानेवंरूपान् धर्मभाणकानतिक्रमेत्। पृ० 406-408, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1966.

1. बुद्धास्तन्त्रमन्त्रकुशलाः तेषां सैन्यं वृद्धं क्रुद्धं प्रत्यर्थिभूतं नाशयेदनुशासयेत्, नात्र संशयः। (गुह्यसमाजतन्त्र-प्रदीपोद्योतनटीका षट्कोटिव्याख्या, 13वाँ पटल, पृ० 134)

गुह्यसमाजतन्त्र(13.65) के इस वचन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए—बुद्धों को तन्त्र और मन्त्र में कुशल कहा है। दूसरी ओर, मन्त्र को तन्त्रशास्त्र का हृदय एवं अन्तर्भाग माना जाता है। तन्त्रों में मन्त्र और मुद्रा के द्वारा साधना कर सिद्धि प्राप्त की जाती है।

[1]कुरुकुल्लाकल्प में बोधिसत्त्वों के द्वारा सत्त्वों के अनुत्पन्न स्वभाव होने के कारण मन्त्रों की सिद्धियाँ कैसे सिद्ध होती हैं तथा मण्डल आदि की भावना कैसे संभव है, ऐसा पूछने पर वज्रपाणि ने उत्तर में कहा है—प्रतीत्यसमुत्पाद नियम से अर्थात् हेतु और प्रत्ययों की अपेक्षा से जैसे सभी वस्तुएँ उत्पन्न होती हैं, उसी प्रकार मन्त्र और मुद्रा आदि की अपेक्षा से सिद्धियाँ सिद्ध होती हैं। मन्त्र अपात्र (अयोग्य) लोगों के लिए गोपनीय होने से गुह्य है। तन्त्रशास्त्र में मन्त्र को गोपनीय रूप से सिद्ध करने का विधान है। इसलिए बौद्ध एवं बौद्धेतर सभी तन्त्रों में मन्त्र की विशेष महत्ता मानी गयी है।

बौद्धतन्त्र के विविध ग्रन्थों, विशेषतः अनुत्तरतन्त्र के ग्रन्थों में मन्त्र के अनेक व्युत्पत्ति परक अर्थ दिये हैं। उन्हीं के आधार पर यहाँ मन्त्र को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। सामान्यतः बौद्ध तन्त्र ग्रन्थों में मन की रक्षा(त्राण) करने से ही मन्त्र कहा गया है। ज्ञानसिद्धि में आचार्य इन्द्रभूतिपाद ने गुह्यसमाजतन्त्र के वचन 'मन्त्रसत्त्वेनेति' (16.15) को स्पष्ट करते हुए—[2]मन का त्राण होने से मन्त्रज्ञान को सम्यग्ज्ञान के रूप में निर्देश किया है। वास्तव में मन का त्राण होना ही मन्त्र का उपयोग है। आचार्य तथागतरक्षित विरचित योगिनीसञ्चारतन्त्रनिबन्ध में [3]तत्त्व का मनन करने से और जगत का त्राण(रक्षा) करने से मन्त्र कहा है।

आर्यदेव ने अपने ग्रन्थ चर्यामेलापकप्रदीप में गुह्यसमाजतन्त्र के वचन को उद्धृत कर मन्त्र को इस तरह से परिभाषित किया है—

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।
तन्मनस्त्वशीतिख्यातस्त्रकारस्त्राणनार्थतः ॥ (पृ० 44)

---

1. बोधिसत्त्वाः प्रोचुः—
   कथं मन्त्राः कथं तन्त्रः कथं मण्डलभावना ।
   तत्कथं सिद्धयः सिद्धाः सत्त्वानुत्पत्तिकारणात् ॥
वज्रपाणिराह—
   प्रतीत्यसमुत्पन्नानि वस्तूनि सम्भवन्ति हि ।
   प्रतीत्यमन्त्रमुद्राद्यं सिद्धयः सम्भवन्ति तत् ॥ (कुरुकुल्लाकल्पे, तृतीयकल्पः, पृ० 15)
2. मनसस्त्राणभूतत्वात् मन्त्रज्ञानं सम्यग्ज्ञानं निदर्शितमित्यर्थः। (ज्ञानसिद्धिः, 15वाँ पटल, पृ० 137)
3. तत्त्वमननाज्जगत्त्राणाच्च मन्त्रः। (योगिनीसञ्चारतन्त्रनिबन्ध, पृ० 95)

अर्थात् इन्द्रियों और विषयों की अपेक्षा से जो मन उत्पन्न होता है, वह मन(सूक्ष्म विकल्प चित्त) अस्सी प्रकार का है, तथा 'त्रकार' त्राणार्थक, अर्थात् उसकी त्राण(रक्षा) के लिए है।

आर्यदेव ने इसी ग्रन्थ में चित्तविवेक के संदर्भ में मन के स्वभाव को स्पष्ट करते हुए श्रीज्ञानवज्रसमुच्चयमहायोगतन्त्र के वचन जिसमें भगवान ने प्रभास्वर से उद्भव विज्ञान को ही चित्त या मन कहा है, जो सभी धर्मों के संक्लेश और व्यवदान के मूल हैं, आदि का विस्तार से वर्णन करते हुए महायान में वर्णित परिकल्पित, परतन्त्र और परिनिष्पन्न तथा राग, द्वेष और मोह आदि तीन-तीन चित्तभेदों को वज्रयान में पर्याय के रूप में वर्णित आलोक, आलोकाभास और आलोकोपलब्धि, शून्य, अतिशून्य और महाशून्य, चित्त, चैतसिक और अविद्या, राग, विराग और मध्यराग आदि प्रत्येक का स्वरूप एवं लक्षण विस्तार से विवेचित कर प्रज्ञाज्ञान प्रकृति के 33, उपायज्ञान प्रकृति के 40 तथा आलोकोप-लब्धज्ञान प्रकृति के 7, कुल 80 क्षणों के नाम भी गिनाये हैं। ये ही 80 बिम्बप्रकृतियाँ 98 क्लेशों में बदल जाती हैं और फिर 62 दृष्टिप्रकृतियाँ हो जाती हैं। ये 80 प्रकार की चित्त की प्रकृतियाँ स्त्री-पुरुष योनिभेद से सम्पूर्ण प्राणियों में रहती हैं।

[1]गुह्यसमाजतन्त्र में मन्त्रचर्या के संदर्भ में भाषित मन्त्र की व्युत्पत्ति ही अधिकाँश बौद्ध तन्त्रग्रन्थों में उद्धृत मिलती है। भोटदेश के विद्वान बुस्तोन ने भी अपने ग्रन्थ [2]"सामान्य एवं संक्षिप्तव्यवस्था तन्त्रोपन्यासरत्ननिधिद्वारोद्घाटककुञ्जी" में मन्त्र की व्युत्पत्ति के प्रसंग में गुह्यसमाजतन्त्र के इसी वचन को उद्धृत कर मन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट किया है। लेकिन स्वामी द्वारिकादास शास्त्री द्वारा सम्पादित गुह्यसमाजतन्त्र(18.70) के 'कारकत्राणनार्थतः' की जगह बुस्तोन तथा आर्यदेव इन दोनों आचार्यों के द्वारा उद्धृत गुह्यसमाजतन्त्र के वचन में 'त्रकारस्त्राणनार्थतः' पाठ है, जो मन्त्र शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से भी समीचीन लगता है। यद्यपि गुह्यसमाजतन्त्र(18.70) के उपर्युक्त श्लोक की टिप्पणी में भी 'तकार' पाठ उल्लिखित है। संभवतः लिपि दोष के कारण 'त्रकार' के स्थान पर 'तकार' पढ़ा गया। दूसरी ओर, चर्यामेलापकप्रदीप में उद्धृत इसी श्लोक के 'तन्मनो मननं ख्यातं' की जगह 'तन्मनस्त्वशीतिख्यातः' पाठ है। बुस्तोन के उपर्युक्त ग्रन्थ में उद्धृत गुह्यसमाजतन्त्र के वचन का अनुवाद इस प्रकार है—

---

1. प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ॥
   तन्मनो मननं ख्यातं कारकत्राणनार्थतः ।
   लोकाचारविनिर्मुक्तं यदुक्तं समयसंवरम् ॥
   पालनं सर्ववज्रैस्तु मन्त्रचर्येति कथ्यते । (गुह्यसमाजतन्त्र, 18.69-71)
2. बुस्तोन सुङ्-बुम,'फ', पृ० 900.

प्रतीत्योत्पद्यते यद्यदिन्द्रियैर्विषयैर्मनः ।
तन्मनो मननं ख्यातं त्रकारस्त्राणनार्थतः ॥

अर्थात् इन्द्रियों और विषयों की अपेक्षा से जो मन उत्पन्न होता है, वह मन मननात्मक है और त्रकार त्राण(रक्षा) करने वाला है। यहाँ मन्त्र शब्द में 'मन्' धातु ज्ञानार्थक है, अर्थात् तत्त्व को जानने वाली प्रज्ञा है। 'त्र' लोक की रक्षा या पालन करने वाली महाकरुणा है। इन दोनों की अभिन्नता ही मन्त्र है। इससे काय, वाक् तथा चित्त तीनों की रक्षा होती है।

आचार्य नड़पाद विरचित सेकोद्देशटीका(पृ० 69) एवं भिक्षु रविश्रीज्ञान विरचित अमृतकणिकानामसंगीतिटिप्पणी(पृ० 88) में मूलतन्त्र (कालचक्र) नाम से उद्धृत यह वचन भी मन्त्र के इसी आशय को स्पष्ट करता है—

कायवाक्चित्तधातूनां त्राणभूतो यतस्ततः ।
मन्त्रार्थो मन्त्रशब्देन शून्यताज्ञानमक्षरम् ॥
पुण्यज्ञानमयो मन्त्रः शून्यताकरुणात्मकः ।

अर्थात्—काय, वाक् एवं चित्त धातुओं की जिससे रक्षा होती है, उस मन्त्र शब्द के द्वारा अक्षरशून्यताज्ञान रूपी मन्त्रार्थ को कहा है। पुण्य एवं ज्ञान (संभार) स्वभाव वाला यह मन्त्र शून्यताकरुणात्मक (स्वरूप) है।

बुस्तोन के उपुर्यक्त ग्रन्थ में ही 'अन्यत्र भी कहा है', ऐसा कहकर मन्त्र के सम्बन्ध में यह वचन उद्धृत है— "[1]सांसारिक दुःखों से विना किसी कष्ट के शीघ्र पार कराने से, श्रावक आदि हीनबुद्धि वालों को त्रासित करने से, बुद्ध और बोधिसत्त्वों द्वारा स्तुति, सत्कार और प्रशंसा करने से तथा तत्त्व के अर्थ का अविपर्यास निर्देश होने से मन्त्र कहलाता है।" इनके अतिरिक्त भी मन्त्र की अनेक व्युत्पत्तियाँ बौद्धतन्त्र के आगम एवं टीका ग्रन्थों में मिलती हैं। महापण्डित रत्नाकरशान्तिपाद विरचित महामायातन्त्र की गुणवती टीका में [2]तत्त्वद्योतक वचन को मन्त्र कहा है। इसीप्रकार [3]गुह्यसमाजतन्त्र तथा आचार्य भवभट्ट(द्र) विरचित [4]चक्रसंवरतन्त्र की टीका में भी तत्त्व की ओर प्रेरित करने वाले वचन को मन्त्र कहा है। श्रीकृष्णाचार्यपाद विरचित [5]हेवज्रतन्त्र की टीका योगरत्नमाला के अनुसार

---

1. बुस्तोन सुङ्-बुम, 'फ', पृ० 900.
2. तत्त्वद्योतकं वचनं मन्त्रः। (महामायातन्त्रटीका, पृ0 27)
3. मन्त्रं मन्त्रमिति प्रोक्तं तत्त्वचोदनभाषणम्। (गुह्यसमाजतन्त्र, 18.74)
4. मन्त्रस्तत्त्वचोदनं भाषणम्। (चक्रसंवरतन्त्र(सटीक), भाग-1, पृ0 505)
5. परमार्थमननात् जगत्त्राणनाच्च मन्त्रः। परमार्थबोधिचित्तं मन्त्रः,मन्त्रनिष्यन्दत्वात्। (प० 11a)

परमार्थ का मनन करने से और जगत् का त्राण करने से मन्त्र कहा है। साथ ही, परमार्थ बोधिचित्त को भी मन्त्र कहा है।

इसीप्रकार 'मन्' का अर्थ सहजसुख से सम्पन्न तत्त्वज्ञान भी है और 'त्र' का अभिप्रेत अर्थ सभी जीवों को सांसारिक दु:खों से त्राण चाहने वाली महाकरुणा है। हेवज्रतन्त्र के टीकाकार मन्त्र के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहते हैं—[1]मनन और त्राण करने से मन्त्र कहलाता है, तथा शून्यताकरुणाऽद्वय स्वभाव वाला बोधिचित्त ही मन्त्र है। [2]अमृतकणिका में मन्त्र से मन की रक्षा एवं सुख का व्यापार होने के साथ-साथ गुह्य रूप से सिद्ध होने के कारण गोपनीय मन्त्रणा के अर्थ में भी इसे परिभाषित किया है। अर्थात् मन्त्र को अपात्र लोगों के लिए गोपनीय होने से गुह्य कहा है। [3]बुस्तोन ने उपर्युक्त ग्रन्थ में मन्त्र की गोपनीयता के प्रसंग में श्रद्धाकरवर्मा के योगानुत्तरतन्त्रार्थावतार (तो० 3713) नामक ग्रन्थ के वचन को उद्धृत किया है, तदनुसार—"गुह्य रूप से सिद्ध होने के कारण मन्त्र को गुह्य कहा है तथा इससे तन्त्र की साधना में महान् फल प्राप्त होता है।"

[4]चर्याव्रती श्रीकृष्णाचार्य ने वसन्ततिलक में नाद को ही मन्त्र कहा है। वसन्ततिलक के टीकाकार आचार्य वनरत्न इसे स्पष्ट करते हुए कहते हैं—[5]नाभिदेश से उच्चरित ऊर्ध्व-गतिशील प्राणवायु ही सभी मन्त्रों का हेतु(जनक) होने से मन्त्र कहलाता है। तथा [6]नाभिदेश से उच्चरित यह महानाद ही वर्ण, पद, वाक्य और महावाक्य के क्रम से चतुरशीति धर्मस्कन्ध के रूप में अपना विस्तार कर लेता है। यह नादात्मक व्यापार ही मन्त्र का वास्तविक रूप है। [7]सेकोद्देशटीका के अनुसार प्राणसंयम ही मन्त्रजाप कहलाता है। वस्तुत: दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ उल्लसित हुआ नाद ही मन्त्र है। मन्त्रों को मात्र अक्षर या शब्दों का समूह समझना अनुचित होगा, क्योंकि मन्त्र वर्णों का समूहमात्र नहीं है, अपितु [8]परमाक्षरज्ञान स्वरूप परमतत्त्व ही है। [9]वसन्ततिलक की टीका में भी कहा

---

1. मननात् त्राणनाच्च मन्त्र:, शून्यताकरुणाद्वयस्वभावं बोधिचित्तम्। (हेवज्रतन्त्रटीका, प० 9a)
2. मन[स]स्त्राणभूतत्वान्मन्त्रं सुखमुदाहृतमिति। ---'मन्त्रि-गुप्तभाषणे' इत्यपि पाठ:। (अमृतकणिकानाम-संगीतिटिप्पणी, पृ० 14)
3. बुस्तोन सुङ्-बुम, 'फ', पृ० 900-901
4. नादस्तु मन्त्र इत्युक्त:। (पृ० 68)
5. योऽयं प्रागुक्तो नाभिदेशादुच्चारणात् प्राणवायु:, स एव सर्वमन्त्रहेतुत्वान्मन्त्र इत्युच्यते। (पृ० 68)
6. नाभिदेशादुच्चरन् महासुखध्वनिरितरो वा नाद एव मन्त्र:, मनस्त्राणनाद् गुप्तभाषणात्।---विश्वग्रन्थिमहा-स्थानान्निर्माणचक्राद्धर्मारल्लि: सर्ववर्णपदवाक्यमहावाक्यादेश्चतुरशीतिधर्मस्कन्धारल्लिव्यापक:। (पृ० 75)
7. मन्त्रजापो नाम प्राणसंयम:। (पृ० 43)
8. मनस्त्राणभूतत्वान्मन्त्रोऽपि परमाक्षरज्ञानमुच्यते। (सेकोद्देशटीका, पृ० 69)
9. तथा- अत एव हि नेच्छामो मन्त्रान् वर्णस्वरूपिण: ।
   नहि शक्तास्तृणस्यापि कुब्जीकरणहेतव: ॥ (पृ० 72)

है—मन्त्रों को वर्णस्वरूप मानना उचित नहीं है, क्योंकि यदि मन्त्र को मात्र वर्णों का समूह माने तो वह छोटे से तिनके को भी टेढ़ा करने में समर्थ नहीं हो सकता। इसलिए मन्त्र को परमाक्षर नाद स्वरूप ही मानना चाहिये। वाक् के उद्गम का मूलस्रोत नाद ही है। इसी कारण मन्त्र अपनी सार्थकता सिद्ध करता है। [1]मन्त्र परमाक्षर एवं अनुत्पन्न स्वरूप होता है। इसलिए इसका कोई अपना निश्चित आकार नहीं है, किन्तु भावना के बल से ही मन्त्र नाना प्रकार के विविध कर्मों की सिद्धि का हेतु बन जाता है। [2]गुह्यसमाजतन्त्र तथा [3]वसन्ततिलक में सभी वाणी को मन्त्रस्वरूप कहा है। अर्थात् सभी वाणी का मूल उत्स (स्रोत) नाद होने से प्राणी जो कुछ भी बोलता है, वह सब मन्त्रमय ही है।

तन्त्रों में [4]अनुत्पन्न स्वभाव वाले वर्णाग्र ह्रस्व अकार को जिसे सहजाक्षर भी कहा गया है, सभी वर्णों में श्रेष्ठ माना गया है। [5]"ह्रस्वं समस्तं वाक्यं स्यात्" कह कर भगवान ने भी ह्रस्व अकार को समस्त वाक्प्रवृत्ति का कारण माना है। [6]सर्ववर्णाग्र, वर्गनायक एवं महार्थ आदि विशेषणों से विशिष्ट इसी अकार को परमार्थ का द्योतक एवं सभी मन्त्रों का जनक माना जाता है। इसी से सारे अक्षरों और मन्त्रों की उत्पत्ति होती है और यही खड्ग, अञ्जन, आदि [7]आठ महासिद्धियों तथा दिव्यचक्षु, दिव्यश्रोत आदि एवं [8]अणिमा, लघिमा आदि लौकिक एवं [9]कायैश्वर्य आदि लोकोत्तर नाना सिद्धियों को देने वाला है। तन्त्रों में ह्रस्व अकार को समस्त वाक्प्रवृत्ति का कारण बताया है। मन्त्रों का सारा रहस्य इसी परमाक्षर अकार में छिपा हुआ है। इसी संदर्भ में आर्यदेव [10]चर्यामेलापकप्रदीप में [11]नाम-

---

1. न कश्चिन्नियतो मन्त्रः सिद्धार्थस्तु व्यवस्थितः ।
   अनुत्पन्नस्वभावो हि मन्त्रो वर्गेश्वरः परः ॥
2. जपं जल्पनमाख्यातं सर्ववाङ्मन्त्रमुच्यते। (गुह्यसमाजतन्त्र, 18/74)
3. यः कश्चित्प्रसरो वाचां जन्तूनां प्रतिपद्यते ।
   स सर्वो मन्त्ररूपो हि तस्मादेव प्रजायते ॥ (वसन्ततिलक 9.10, पृ० 75)
4. अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वाद् इति। सहजाक्षरं तु पुनरुच्यते। (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 31)
5. चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 30.
6. अकारः सर्ववर्णाग्र्यो महार्थो वर्गनायकः ।
   अत एव समुद्भूताः सर्वमन्त्रास्तु देहिनाम् ॥ (वसन्ततिलक 9.8, पृ० 74)
7. अञ्जनगुटिकापादुकासिद्धौषधिमणिमन्त्रयक्षस्त्रीपरपुरप्रवेशाख्यम्। (तत्त्वज्ञानसंसिद्धिटीका, पृ० 27)
8. अणिमा-लघिमा-गरिमा-ईशित्वम्-वशित्वम्-कर्तृत्वम्-भोज्यत्वम्-इच्छाप्रकामता इति गुणाष्टकम्। (तत्त्वज्ञानसंसिद्धिटीका, पृ० 27)
9. सिद्धिस्त्रैधातुकेश्वरत्वम्। (सेकोद्देशटीका, पृ० 47)
10. चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 30-31.
11. अकारः सर्ववर्णाग्र्यो महार्थः परमाक्षरः ।
    महाप्राणो ह्यनुत्पादो वागुदाहारवर्जितः ।
    सर्वाभिलापहेत्वग्र्यः सर्ववाक्सुप्रभास्वरः ॥ (नामसङ्गीति 4.1-2)

संगीति आदि अनेक बुद्धवचनों को उद्धृत कर विस्तार से अकार के स्वरूप को स्पष्ट करते हुये कहते हैं—सभी वर्णों में अग्रणी अकार ही महान अर्थ वाला, परमाक्षर, महाप्राण, अनुत्पाद, वाणी के उदाहार (व्यापार) से रहित, सभी वर्णों के उच्चारण का हेतु और समग्र वाणी में प्रभास्वर स्वरूप है। इसीलिए भगवान ने इसे 'सकलध्यानमुखबीजपद' कहा है। वहीं, [1]वज्रमण्डालङ्कार को उद्धृत कर अकार के बारे में कहते हैं—जलते हुये दीपक के समान हृदय के मध्य भाग में अनाहत परमसूक्ष्म यह अकार अक्षर ही परम प्रभु है। समस्त लौकिक एवं लोकोत्तर शास्त्र मूल अकार से कैसे निर्गत हैं, इसे स्पष्ट करते हुये आगे कहते हैं कि अक्षरतत्त्व के यथाभूत स्वरूप को तो केवल बुद्ध ही जानते हैं। फिर भी भगवद्देशनानुसार उसकी प्रक्रिया इस प्रकार है—[2]शब्द आलि और कालि से बनता है। अकारादि सोलह स्वर आलि तथा ककारादि तैंतीस व्यञ्जन कालि हैं। ये 49 वर्ण ही अलग-अलग या समस्त रूप में स्वर, व्यञ्जन, बिन्दु, विसर्ग, संहिता, धातु, विभक्ति, समास, पदविग्रह, तीनों लिङ्ग, सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धित, प्रत्यय आदि प्रक्रियाओं से व्याकरण द्वारा सिद्ध होकर शब्द नाम से प्रयोग किये जाते हैं और उन्हीं पद, वाक्य, छन्द, वृत्त, श्लोक, गाथा, दण्डकादि द्वारा 84 हजार धर्मस्कन्ध, सूत्र, तन्त्र, कल्प, त्रिपिटक, काव्य-नाटकादि लौकिक और लोकोत्तर शास्त्र बनते हैं। किन्तु उन पद-वाक्यादि वर्णविशेषों में यह अकार विज्ञानभूत है, क्योंकि अकार से रहित इन ककारादि वर्णों का कोई फल नहीं होता। [3]वसन्ततिलकटीका में भी कहा है कि बौद्धेतर निकायों के चार वेद, छः वेदांग, मीमांसा, न्याय, पुराण और धर्मशास्त्र आदि चौदह विद्यास्थान तथा बौद्ध निकाय के शब्द-विद्या, हेतुविद्या, अध्यात्मविद्या, चिकित्साविद्या और शिल्पविद्या आदि पाँच महाविद्याओं सहित समस्त शास्त्र इसी वर्गेश्वर से ही निर्गत माने गये हैं।

---

1. ज्वलन्तं दीपसदृशं हृदि मध्यमनाहतम् ।
   अक्षरं परमं सूक्ष्मं अकारं परमं प्रभुम् ॥ (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 31)
2. शब्दस्तावदालिकालिमयः। आलीत्यकारादिषोडशस्वराः। कालीति ककारादिवर्णास्त्रयस्त्रिंशत्। कथं षोडशस्वरसंयुक्तम् एकोनपञ्चाशल्लिपिकं सर्वमस्तव्यस्तसमस्तस्वरव्यञ्जनबिन्दुविसर्गसंहिताधातुविभक्ति-समासपदविग्रहस्त्रिलिङ्गतिङन्तकृत्तद्धितप्रत्ययादिभिर्भाष्यपर्यन्तं व्याकरणमिति नामसङ्केतेन परिभाषमाणेन ज्ञायते। अतस्तस्य पदवाक्यच्छन्दोवृत्तिश्लोकगाथादण्डकादिभिश्चतुरशीतिसहस्रधर्मस्कन्धसूत्रान्तकल्प-त्रिपिटककाव्यनाटकादयो लौकिकलोकोत्तरशास्त्राणि सम्भाव्यन्ते। शास्त्रमाश्रित्य सर्वसिद्धयः सम्पद्यन्ते। (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 30)
3. अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः ।
   पुराणं धर्मशास्त्राणि विद्या ह्येताश्चतुर्दश ॥ इति परयूथ्यपक्षः।
   लक्षणं हेतुविद्या च तथैवाध्यात्मिकी पुनः ।
   चिकित्साशिल्पविद्ये द्वे विद्यास्थानानि पञ्च तु ॥
   एतानि सर्वाण्यकारादेवोद्भ्रियन्त इति सर्वमन्त्रेश्वरं तं विना तेषामुच्चारो न विद्यते। (वसन्ततिलकटीका, पृ० 72)

[1]नामसंगीति की अमृतकणिका टीका में मन्त्र के दो भेद किये हैं, यथा—शान्तिक-पौष्टिकादि प्रत्याहार लक्षण को लौकिक मन्त्र और परमाक्षरयोग से बिन्दु-नादात्मक को लोकोत्तर मन्त्र कहा है। [2]सेकोद्देशटीका में अकनिष्ठ भुवन पर्यन्त आधिपत्य को लौकिक सिद्धि तथा क्लेशावरण और ज्ञेयावरण सहित सभी वासनाओं के नाश के साथ क्रमशः द्वादश भूमियों की उपलब्धि सहित सम्यक्संबुद्ध पद की प्राप्ति को लोकोत्तर सिद्धि बताया है। इसीप्रकार [3]गुह्यसमाज में भी अन्तर्धान आदि को सामान्यसिद्धि तथा बुद्धत्व प्राप्ति को उत्तमसिद्धि बतलाया है।

[4]वैरोचनाभिसंबोधिचर्यातन्त्र का यह वचन मन्त्रों के स्वरूप एवं प्रभाव के प्रसंग में विशेष रूप से द्रष्टव्य है—"हे गुह्यकाधिपति! मन्त्रों का लक्षण सर्वबुद्धों ने न किया है, न करवाया है और न उसका अनुमोदन किया है, क्योंकि इन धर्मों की धर्मता तथागतों के उत्पाद से या अनुत्पाद से जैसे सुनिश्चित है, वैसे ही मन्त्रों की मन्त्रधर्मता भी सुनिश्चित है। जैसे—कामधात्वीश्वर की मदयन्तिका नामक विद्या है, उससे वह सर्वकामावचर देवपुत्रों को मद से मूर्च्छित कर देता है, नाना प्रकार के रमणीय प्रदेशों का दर्शन करा देता है, विचित्र प्रकार के भोगों को परिनिर्मित देवताओं के लिये देता है और स्वयं भी उनका भोग करता है। महेश्वर नाम के देवपुत्र के पास मनोजवा नाम की विद्या है, जिसमे वह त्रिसाहस्र महासाहस्र लोकधातु में सभी कार्य कर लेता है। सम्पूर्ण भोगों का निर्माण कर

---

1. शान्तिकादिपौष्टिकादिप्रत्याहारलक्षणो लौकिको मन्त्रः। परमाक्षरयोगेन बिन्दुनादात्मको लोकोत्तरमन्त्रः। (अमृतकणिकानामसंगीतिटिप्पणी, पृ0 88)
2. लौकिकसिद्धिरित्यकनिष्ठभुवनपर्यन्ताधिपत्यम्। उत्तरसिद्धिरिति सवासनसर्वक्लेशज्ञेयसमापत्त्यावरण-प्रहाणितो द्वादशभूमिप्रतिलम्बेन सम्यक्संबुद्धत्वम्। (सेकोद्देशटीका, पृ० 3)
3. अन्तर्द्धानादयः सिद्धाः सामान्या इति कीर्तिताः ।
   सिद्धिरुत्तममित्याहुर्बुद्धा बुद्धत्वसाधनम् ॥ (गुह्यसमाजतन्त्र, पृ० 18.133)
4. यथोक्तं वैरोचनाभिसम्बोधिचर्यातन्त्रे— अपि तु गुह्यकाधिपते मन्त्राणां लक्षणं सर्वबुद्धैर्न कृतं न कारितं नानुमोदितम्। तत् कस्य हेतोः? एषां धर्माणां यदुत उत्पादाद्वा तथागतानामनुत्पादाद्वा तथागतानां स्थितैवैषां धर्माणां धर्मता यदुत मन्त्राणां मन्त्रधर्मता। तद् गुह्यकाधिपते! अस्ति कामधात्वीश्वरस्य मदयन्तिका नाम विद्या तया सर्वकामावचरान् देवपुत्रान् मदेन मूर्च्छयति। विविधविचित्रपरिभोगांश्चाभिनिर्माय परनिर्मित-वशवर्तिभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते। तद्यथा—अस्ति महेश्वरस्य देवपुत्रस्य मनोजवा नाम विद्या तया त्रिसाहस्रमहासाहस्रे लोकधातौ सर्वकार्यं करोति। सर्वोपभोगपरिभोगांश्चाभिनिर्माय शुद्धावास-कायिकेभ्यो देवेभ्यः प्रयच्छत्यात्मना च परिभुङ्क्ते। तद्यथा—माहेन्द्रजालिको मन्त्रैर्विविधविचित्रार्थान् मनुष्यादिकान् दर्शयति। तद्यथा—असुरान् मन्त्रैर्मायां दर्शयति। मन्त्रैर्विषमपनयति ज्वरादिकं च। तद्यथा—मन्त्रकल्पिकादेवतामन्त्रैः श्रेयः सत्त्वेभ्यः प्रयच्छति। मन्त्रैरग्नेरुष्णता नश्यति शीतता च सम्भवति। एभिर्निदर्शनपदैर्मन्त्रप्रभावोऽभिश्रद्धातव्य इति। स च मन्त्रप्रभावो हि न मन्त्रतो निष्क्रामति, न सत्त्वेषु प्रविशति, न द्रव्यादुत्पद्यते, न कर्तुर्दृश्यते। अथ च कुलपुत्र मन्त्राधिष्ठानधर्मतासम्भवन्नातिक्रामति काल-त्रयातीतत्वात्। सर्वथाचिन्त्यप्रतीत्यसमुत्पादात् सिद्ध्यति। कुलपुत्र! अतः सर्वे धर्मा अचिन्त्यस्वभावेनेत्य-धिगम्य सदा तत् सततमन्त्रनयोऽवगन्तव्यः इति। (चर्यामेलापकप्रदीप, पृ० 33-34)

शुद्धावासकायिक देवताओं को देता है और स्वयं भी उपभोग करता है। माहेन्द्रजालिक मन्त्रों के द्वारा आश्चर्यजनक कार्य करके मनुष्यों को दिखाता है और बड़ी-बडी माया द्वारा असुरों को वश में करता है। मन्त्रों द्वारा विष के दोष को और ज्वरादि रोगों को नष्ट कर लोगों की रक्षा करता है। मन्त्रकालिक देवता मन्त्रों से सत्त्वों का कल्याण करता है। अग्नि की दाहकता को शान्त करके उसे शीतल कर देता है।"

आर्यदेव अपने ग्रन्थ चर्यामेलापकप्रदीप में उपर्युक्त वचनों को उद्धृत कर आध्यात्मिक और बाह्यरूप से मणि, मन्त्र और औषधियों के अचिन्त्य प्रभाव के सम्बन्ध में कहते हैं कि "इन पदों के निदर्शन से स्पष्ट है कि मन्त्रों के प्रभाव पर श्रद्धा करनी चाहिए। यद्यपि मन्त्र का प्रभाव न तो मन्त्र से निकलता है, न प्राणियों के अन्दर जाता है, न किसी द्रव्य से उत्पन्न होता है और न प्रयोगकर्ता को दिखाई देता है, अपितु मन्त्र का प्रभाव मन्त्रधर्मिता से उत्पन्न होने के कारण अतिक्रमण नहीं करता है, क्योंकि वह कालत्रयातीत होता है। और, गम्भीर अचिन्त्य प्रतीत्यसमुत्पाद से सिद्ध होता है। इसलिए सदैव धर्मों के अचिन्त्य स्वभाव को जानकर ही सतत मन्त्रनय को जानना चाहिए।"

उपर्युक्त वचनों से यह सुनिश्चित होता है कि मन्त्रों का सारा रहस्य परमाक्षर अकार में छिपा हुआ है। उसके वास्तविक स्वरूप को समझने पर ही मन्त्र में शक्ति का आधान सम्भव हो सकता है।

डॉ० पी० वी० काणे ने [1]धर्मशास्त्र का इतिहास में बौद्धेतर ग्रन्थों में उपलब्ध मन्त्र की व्युत्पत्ति को इस तरह परिभाषित किया है— "मन्त्र शब्द 'मन्' (सोचना) एवं 'त्रै' या 'त्रा' से निष्पन्न हुआ है। यास्क के निरुक्त (7/12) में यह केवल 'मन्' से निकला कहा गया है। कुलार्णवतन्त्र का कथन है कि मन्त्र इसीलिए पुकारा जाता है, क्योंकि यह सभी प्रकार के भयों से बचाता है, साधक इसके द्वारा अपरिमित ज्योति वाले एवं एक मात्र तत्त्व परमात्मा पर ध्यान लगा पाता है(17/54)।" वहीं पर उन्होंने प्रपञ्चसार आदि अनेक तन्त्र ग्रन्थों का भी उल्लेख कर मन्त्र के बारे में विस्तार से वर्णन किया है।

प्रसिद्ध साधक एवं चिन्तक महामहोपाध्याय श्री गोपीनाथ कविराज ने अपने ग्रन्थ [2]भारतीय संस्कृति और साधना में कहा है—"तन्त्र मत में शक्ति ही मन्त्र है, अतः वह पंचशक्तिमय होता है। यह मन्त्ररूपा शक्ति मूल में एक ही है। किन्तु, उपाधिवश से नाना हो गई है।

---

1. धर्मशास्त्र का इतिहास (पंचम भाग), पृ० 53-54, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, 1984.
2. प्रथम-खण्ड, पृ० 27, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1977.

मननात्सर्वभावानां त्राणात्संसारसागरात् ।
मन्त्ररूपा हि तच्छक्तिर्मननत्राणरूपिणी ॥

अर्थात् समस्त भावों के मनन और सम्पूर्ण संसार से त्राण के कारण वह मननत्राणरूपिणी शक्ति मन्त्ररूपा है।''

[1]इसी ग्रन्थ में ही महामहोपाध्याय ने ''योग का विषय-परिचय'' शीर्षक के अन्तर्गत मन्त्र के स्वरूप पर विशद विवेचन करते हुये मन्त्रयोग और जपयोग के संदर्भ में कहा है कि—''मन्त्र के आश्रय से जीवात्मा और परमात्मा का सम्मिलन होता है। शब्दात्मक मन्त्र चेतन होने पर उसी की सहायता से जीव क्रमशः गमन करते-करते शब्द से अतीत परमानन्द-धाम तक पहुँच सकता है। वैखरी शब्द से क्रमशः मध्यमा अवस्थाओं को भेदकर पश्यन्ती में प्रवेश करना ही मन्त्रयोग का प्रधान उद्देश्य है। पश्यन्ती शब्द—स्वप्रकाशमान चिदानन्दमय है, चिदात्मक पुरुष की वही अक्षय और अमर षोडशी कला है। वही आत्मज्ञान, इष्ट देवता के साक्षात्कार अथवा शब्द-चैतन्य का प्रकृष्ट फल है। इस अवस्था में पहुँचने पर जीव कृतकृत्य हो सकता है। इसके बाद अव्यक्त भाव अपने-आप उदित होता है। वही शब्द की तुरीय अवस्था है। मूलाधार से निरन्तर शब्द-स्रोत ऊपर की ओर उठ रहा है। यही शब्द समस्त जगत् के केन्द्र में नित्य विद्यमान है। बहिर्मुख जीव इन्द्रियों के अधीन होकर विषयों की ओर दौड़ रहा है, इसी से उसे इसका पता नहीं लगता। जब किसी क्रियाकौशल से अथवा अन्य किसी उपाय से इन्द्रियों की बहिर्गति रुद्ध हो जाती है और प्राण तथा मन स्तम्भित-से हो जाते हैं, तब साधक इस चेतन शब्द को सुनने के अधिकारी होते हैं। षण्मुखी मुद्रा द्वारा कृत्रिम उपाय से इस नाद के अनुसन्धान की चेष्टा की जाती है। नोदन अथवा अभिघात से जनित शब्द को अनाहत-नाद में लीन न कर सकने पर मन्त्र अक्षर-समष्टि ही रह जाता है। उसका सामार्थ्य और प्रकाश अनुभव-गोचर नहीं होता। इड़ा-पिंगला की गति रुककर प्राण और मन के सुषुम्णा के अन्दर प्रविष्ट होने पर वह नित्य सारस्वत-स्रोत अनुभूत होता है। यही क्रमशः साधक को आज्ञाचक्र में ले जाता है और वहाँ से बिन्दु-स्थान भेदकर क्रमशः सहस्रार के केन्द्र में महाबिन्दु-पर्यन्त पहुँचा देता है।'' इसी क्रम में आगे शब्दयोग और वाग्योग को स्पष्ट करते हुए पुनः कहते हैं कि— ''व्याकृत शब्द का वैखरी अवस्था से मध्यमा में उत्तीर्ण होकर पश्यन्ती-स्वरूप में प्रवेश कर जाना ही इस योगसाधन का प्रधान उद्देश्य है। पश्यन्ती अवस्था से परा-अवस्था में-अव्याकृत पद में-गति और स्थिति स्वभाविक नियम से आप ही हो जाती है।

---

1. प्रथम-खण्ड, पृ० 382-384, विहारराष्ट्रभाषापरिषद्, पटना, 1977.

वह किसी भी साधना का आन्तरिक लक्ष्य नहीं है। वैखरी या स्थूल इन्द्रियग्राह्य शब्द-विशेष मिश्र अवस्था में होने के कारण उसमें असंख्य आगन्तुक मल विद्यमान रहते हैं।------आवर्त्तन अथवा जपयज्ञ इत्यादि के अभ्यास से जब वैखरी शब्द से आगन्तुक समस्त मल दूर हो जाते हैं, तब इड़ा-पिंगला का अपेक्षाकृत स्तम्भन हो जाता है और सुषुम्णा-पथ कुछ परिमाण में उन्मुक्त हो जाता है। फिर प्राणशक्ति की सहायता से शोधित होकर शब्द-शक्ति सुषुम्णा-रूप ब्रह्मपथ का आश्रय लेकर क्रमशः ऊर्ध्वगामिनी होती है। यही शब्द की सूक्ष्म या मध्यमा नामक अवस्था है। इसी अवस्था में अनाहत-नाद प्रकट होता है और स्थूल शब्द इस विराट प्रवाह में निमग्न होकर उससे भर जाता है तथा चेतनाभाव धारण कर लेता है। यही मन्त्र-चैतन्य का उन्मेष है।

इस अवस्था में पहुँच जाने पर साधक जीवमात्र की चित्तवृत्ति को अपरोक्षभाव से शब्दरूप में जान लेता है। देश तथा काल का व्यवधान शब्द की इस स्फूर्ति को नहीं रोक सकता। इसके बाद प्रातःकालीन बाल-सूर्य के समान शब्दब्रह्मरूपी आदित्य साधक के आत्मा अथवा इष्ट देवता के रूप में प्रकाशित होकर अन्तराकाश का अन्धकार दूर कर देते हैं। आगमशास्त्र में इसी को 'पश्यन्ती वाक्' कहा जाता है। प्राचीन वैदिक साहित्य में ऋषित्व-प्राप्ति अथवा मन्त्रसाक्षात्कार के नाम से जिसका उल्लेख किया गया है, यह वही अवस्था है। आत्म-दर्शन, इष्टदेव-दर्शन, ज्ञान-चक्षु का उन्मीलन, शिवनेत्र का विकास, षोडशी कला का उन्मेष अथवा सांख्यवर्णित द्रष्टा पुरुष का स्वरूपावस्थिति के रूप में कैवल्य—ये सब इस पश्यन्ती भूमि की विभिन्न अवस्थाएँ हैं।"

इस तरह हम देखते हैं कि बौद्ध एवं बौद्धेतर सभी तन्त्रों में मन्त्र को तन्त्र-साधना का एक अविभाज्य अंग माना गया है। इसीलिए तन्त्रों में मन्त्र का विशिष्ट स्थान निहित है। बौद्धतन्त्र के ग्रन्थों में वर्णित मन्त्रों के अचिन्त्य प्रभाव से यह भी स्पष्ट होता है कि मन्त्र कितना गम्भीर एवं प्रभावशाली है। इसीलिए इसकी तीव्रशक्तिमत्ता के कारण दुरुपयोग की आशंका से सिद्धों ने इसे गोपनीय रखा। गोपनीयता एवं पारिभाषिकता के लिए तन्त्रों में प्रतीक-प्राचुर्य देखा जा सकता है।

भोट देश के अनुवादकों एवं आचार्यों ने भी मन्त्रों की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए क-ग्युर, तन्ग्युर एवं अन्य आचार्यों के संग्रहों में धारणी एवं मन्त्रों का भोट भाषा में अनुवाद न कर, भोट लिपि में लिप्यन्तर किया है। भोट आचार्य [1]बुस्तोन ने भोट लिपि में

1. The Collected Works of Bu-sTon, Part-16, (ma) edited by Prof. Lokesh Chandra, New Delhi.

'गुह्यमन्त्र-तन्त्रचतुर्वर्गधारणीशतसाहस्त्री' शीर्षक के अन्तर्गत 354 धारणी-मन्त्रों का एक विशाल संग्रह किया है। यह सभी धारणीमन्त्र बौद्ध आगम ग्रन्थों से संगृहीत किये गये हैं।

अन्ततः उपर्युक्त ग्रन्थों में उपलब्ध वचनों के विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि धारणीमन्त्र बुद्धोक्त हैं। इन धारणीमन्त्रों के विधिवत् जाप एवं भावना से विघ्न-बाधाओं से रक्षा, लौकिकसुखों की प्राप्ति तथा पाप-शमन के अतिरिक्त दुर्गतियों में गमन आदि से भी बचा जा सकता है। दूसरी और, मन्त्र तत्त्व का द्योतक एवं तन्त्रसाधना का अविभाज्य अंग होने के कारण साधना-पद्धति के अनुरूप ध्यान-भावना कर साक्षात्कार करने से अनेक प्रकार की सिद्धियाँ एवं लौकिक सुखों की प्राप्ति ही नहीं, अपितु परम तत्त्व का साक्षात्कार कर भवसागर से मुक्ति भी संभव है। इसलिए मन्त्रों की अमोघता पर संदेह नहीं करना चाहिए।

॥ भवतु सर्व मङ्गलम्॥

ठिनलेराम शाशनी



༄༅། །ཨོཾ་ནམོ་བྷཊྚཱ་རཀ་བུདྡྷཱ་ཡ།

ॐ नमो भट्टारकबुद्धाय।

Om namo bhaṭṭārakabhuddhāya.

(རྗེ་བཙུན་སངས་རྒྱས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམསྶདྡྷརྨཱ་ཡ། ནམ་ཨཱརྻ་སངྒྷཱ་ཡ།

नमस्सद्धर्माय। नम आर्यसङ्घाय।

Namassaddharmāya. Nama Āryasaṅghāya.

(དམ་པའི་ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །འཕགས་པའི་དགེ་འདུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

བུདྡྷཾ་ཏྲཻ་ལོ་ཀྱ་ནཱ་ཐཾ་སུ་ར་ན་ར་ན་མི་ཏཾ་པཱ་ར་སཾ་སཱ་ར་ཏཱིརྞྞཾ།

बुद्धं त्रैलोक्यनाथं सुर[1]नरनमितं पारसंसार[2]तीर्ण्णम्।

Buddhaṃ trailokyanāthaṃ suranaranamitaṃ pārasaṃsāratīrṇṇam.

(སངས་རྒྱས་འཇིག་རྟེན་གསུམ་མགོན་འཁོར་བའི་ཕ་རོལ་སོན་ལྷ་དང་མི་ཡིས་བཏུད་གྱུར་ཅིང་། །)

ཏཱིརྞྞཾ་[དྷཱི་རཾ]་གཾ་བྷཱི་ར་བནྟཾ་སཀལ་གུ་ཎ་ནི་དྷིཾ་དྷརྨ་རཱཛྱཱ་[རཱ་ཛཱ]བྷི་ཥིཀྟཾ། །

[3]तीर्णं (धीरं) [4]गंभीरवन्तं सकलगुणनिधिं धर्म[5]राज्या(राजा)भिषिक्तम्॥

Tīrṇaṃ[dhīraṃ] gaṃbhīravantaṃ sakalaguṇanidhiṃ dharmarājyā[rājā]-bhiṣiktaṃ.

(བརྟན་ཞིང་ཟབ་པ་དང་ལྡན་ཆོས་ཀྱི་རྒྱལ་པོར་དབང་ཐོབ་ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱི་གཏེར། །)

---

1. वर०- वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० २१८)
2. तीरं- गण्डीस्तवः (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५)
3. धीरं- गण्डीस्तवः, वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५, २१८) गण्डीस्तवः (धा० सं०, पत्रांक-३३२a- ३३४b)
4. गाम्भीर्य०- गण्डीस्तवः, वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५, २१८)
5. राजाभि०- गण्डीस्तवः, तत्रैव

ཏྲྀཥྞཱ་ལོ་བྷཱནྡྷ་ཀཱ་རཾ་[མོ་ཧཱནྟ་ཀ་རཾ]་ཀུ་ལ་[ཀ་ལི]་ཀ་ལུ་ཥ་ཧ་རཾ་ཀཱ་མ་ལོ་བྷཱ་དི་བརྫྱཾ།

तृष्णा[1]लोभान्धकारं(मोहान्तकरं) [2]कुल(कलि)कलुषहरं काम[3]लोभादिवर्ज्यं।

Tṛṣṇālōbhāndhakāraṃ(mohāntakaraṃ) kula(kali)kaluṣaharaṃ kāmalobhādivarjyaṃ.

(སྲིད་དང་གཏི་མུག་མཐར་བྱེད་རྩོད་པའི་དྲི་མ་འཕྲོག་ཅིང་འདོད་ཆགས་སོགས་སྤངས་པའི། །)

ཏཾ་བནྡེ་ཤཱཀྱ་སིཾ་ཧཾ་པྲ་ཎ་མི་ཏ་ཤི་ར་སཱ་སརྦ་ཀཱ་ལཾ་ན་མཱ་མི།།

तं वन्दे शाक्यसिहं प्रणमितशिरसा सर्वकालं नमामि॥

Taṃ vande śākyasiṃhaṃ praṇamitaśirasā sarvakālaṃ namāmi.

(ཤཱཀྱ་སེང་གེ་དེ་ལ་སྤྱི་བོས་རབ་ཏུ་བཏུད་དེ་དུས་ཀུན་བདག་ཕྱག་འཚལ།། ༎)

•

(1) ༄༅ མཚན་བརྗོད་ཀྱི་སྔགས་ནི།

([4]नामसंगीतिमन्त्रः = Nāmasaṃgīti-mantraḥ)

ཨ་ཨཱ་ཨི་ཨཱི་ཨུ་ཨཱུ་ཨེ་ཨཻ་ཨོ་ཨཽ་ཨཾ་ཨཿ སྠི་ཏོ་ཧྲི་དི།

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः स्थितो हृदि।

a ā i ī u ū e ai o au aṃ aḥ sthito hṛdi.

(སྙིང་ལ་གནས།)

---

1. ०मोहान्धकारं- वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० २१८), ०मारान्तकारं- गण्डीस्तवः (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५), ०मोहान्तकरं- गण्डीस्तवः (धा० सं०, पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
2. कलि०- गण्डीस्तवः, वज्रसत्त्वस्तोत्रं (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५, २१८), गण्डीस्तवः (धा० सं० पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
3. लोभान्तवन्तं- गण्डीस्तवः (स्तो० सं०, पृ० ६१-६५), लोभादवन्तं- वज्रसत्त्वस्तोत्रं, (स्तो० सं०, पृ० २१८), लोभादिवन्तं- गण्डीस्तवः (धा० सं०, पत्रांक- ३३२a- ३३४b)
4. देखें- आर्यनामसंगीतिधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १०७b- १०८a)

ཛྙཱ་ན་མཱུརྟི་ར་ཧཾ་བུདྡྷོ་བུདྡྷཱ་ན་[ཾ་]ཏྲྱ་དྷྭ་བརྟི་ན་[མ་]།
ज्ञानमूर्त्तिरहं बुद्धो बुद्धानां त्र्यध्ववर्तिनाम्।
Jñānamūrtiraham buddho buddhānāṃ tryadhvavartinām.
(ཡེ་ཤེས་སྐུ་བདག་སངས་རྒྱས་ཏེ། །སངས་རྒྱས་དུས་གསུམ་བཞུགས་རྣམས་ཀྱི་ཡོ། །)

ཨོཾ་བཛྲ་ཏཱིཀྵྞ་དུཿཁ་ཙྪེ་ད་པྲཛྙཱ་ཛྙཱ་ན་མཱུརྟ་ཡེ།
ॐ वज्रतीक्ष्णदुःखच्छेदप्रज्ञाज्ञानमूर्त्तये।
Oṃ vajratīkṣṇaduḥkhacchedaprajñājñānamūrttaye.
(རྡོ་རྗེ་རྣོན་པོ་སྡུག་བསྔལ་གཅོད། །ཤེས་རབ་ཡེ་ཤེས་སྐུ་ཅན་ཏེ། །)

ཛྙཱ་ན་ཀཱ་ཡ་ཝཱ་གཱི་ཤྭ་ར། ཨ་ར་པ་ཙ་ན་ཡ་ཏེ་ནམཿ། །
ज्ञानकायवागीश्वर अरपचनाय ते नमः।
Jñānakāyavāgīśvara arapacanāya te namaḥ.
(ཡེ་ཤེས་སྐུ་ཅན་གསུང་དབང་ཕྱུག །འགྲོ་བ་སྨིན་བྱེད་ཁྱོད་ལ་འདུད། །)

ཨོཾ་སརྦ་དྷརྨཱ་བྷཱ་ཝ་སྭ་བྷཱ་ཝ་བི་ཤུདྡྷ་བཛྲ་ཨ་ཨཱ་ཨཾ་ཨཿ །
1ॐ सर्वधर्माभावस्वभावविशुद्धवज्र अ आ अं अः।
Oṃ sarvadharmābhāvasvabhāvaviśuddhavajra a ā aṃ aḥ.
(ཆོས་ཐམས་ཅད་དངོས་པོ་མེད་པ་རང་བཞིན་རྣམ་པར་དག་པའི་རྡོ་རྗེ།)

2པྲ་ཀྲྀ་ཏི་པ་རི་ཤུདྡྷཿ་སརྦ་དྷརྨཱ་ཡ་དུ་ཏ།
3प्रकृतिपरिशुद्धाः सर्वधर्मा यदुत।

---

1. देखें- आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति (सटीक), मन्त्रविन्यासः, पृ० १०८, २१५-२१७, सम्पा०- डॉ० बनारसी लाल); आर्यनामसंगीतिसाधनं (साधनमाला, भाग-१, पृ० १६०); "ॐ------ अं अः" तक का मन्त्र, नामसंगीति का मूलमन्त्र है।
2. པྲ་ཀྲྀད་ - ख.
3. यह नामसंगीति का मालामन्त्र है। देखें- आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति (सटीक), मन्त्रविन्यासः, पृ० २१५, सम्पा०- डॉ० बनारसी लाल

Prakṛtipriśuddhāḥ sarvadharmā yaduta.

(རང་བཞིན་ཡོངས་སུ་དག་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་འདི་ལྟ་སྟེ།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཛྙཱན་ཀཱཡ་མཉྫུཤྲཱི་པ་རི་ཤུདྡྷི་ཏཱམུཔཱདཱཡེ་ཏི།

सर्वतथागतज्ञानकायमञ्जुश्रीपरिशुद्धितामुपादायेति।

Sarvatathāgatajñānakāyamañjuśrīpariśuddhitāmupādāyeti.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་སྐུ་འཇམ་དཔལ་ཡོངས་སུ་དག་པར་གཟུང་བར་བྱའོ །)

ཨ་ཨཱཿ སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲིདཡ་ཧ་ར་ཧ་ར་ཨོཾ་ཧཱུཾ་ཧྲཱིཿ།

अ आः सर्वतथागतहृदय हर हर ॐ हूँ [1]ह्रीः।

A āḥ sarvatathāgatahṛdaya hara hara oṃ hūṃ hrīḥ.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྙིང་པོ།)

བྷགཝཱ[བ]ན྄་ཛྙཱན་མཱུརྟི་ཝཱགཱིཤྭར་མཧཱ་ཝཱཙ་སརྦ་དྷརྨ་གགནཱམལ་སུཔ་རི་ཤུདྡྷ་དྷརྨ་དྷཱ་ཏུ་ཛྙཱན་གརྦྷ་ཨཱཿ། །

भगवन् ज्ञानमूर्त्ति वागीश्वर महावाच सर्वधर्मगगनामल सुपरिशुद्धधर्मधातुज्ञानगर्भ आः।

Bhagavan jñānamūrtti vāgīśvara mahāvāca sarvadharmagaganāmala supari-śuddhadharmadhātujñānagarbha āḥ.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་ཀྱི་ཡེ་ཤེས་སྐུ། །གསུང་གི་དབང་ཕྱུག་སྨྲ་བ་ཆེ། །ཆོས་ཀུན་ནམ་མཁའ་དྲི་མ་མེད། །ཤིན་ཏུ་ཡོངས་སུ་དག་པ་ཡི། །ཆོས་དབྱིངས་ཡེ་ཤེས་སྙིང་པོ་ཨཱཿ། །)



1. ह्रीं- आर्यमञ्जुश्रीनामसंगीति (सटीक), मन्त्रविन्यासः, पृ० १०८, ११६-११७, सम्पा०- डॉ० बनारसी लाल

(2) ༉ བདེ་མཆོག་གི་[སྔགས]།

(चक्रसंवरमन्त्रः = Cakrasaṃvara-mantraḥ)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགབཏེ་བཱིརེཤཱཡ། མཧཱ་ཀལྤཱགྣི་སནྣིབྷཱཡ།

1ॐ नमो भगवते वीरेशाय। महाकल्पाग्निसन्निभाय।

Oṃ namo bhagavate vīreśāya. mahākalpāgnisannibhāya.

(ཕྱག་འཚལ་ལོ་བཅོམ་ལྡན་འདས་དཔའ་བོའི་དབང་པོ་ལ། བསྐལ་པ་ཆེན་པོའི་མེ་དང་མཚུངས་པ་ལ།)

ཛཊཱ་མཀུཊོཏྐཊཱཡ། དཾཥྚཱ་ཀརཱལོགྲ་བྷཱིཥཎ་མུཁཱཡ།

जटामकुटोत्कटाय। दंष्ट्राकरालोग्रभीषणमुखाय।

jaṭāmakuṭotkaṭāya. daṃṣṭrākarālograbhīṣaṇamukhāya.

(རལ་པའི་ཅོད་པན་བཅིངས་པ་ལ། མཆེ་བ་གཙིགས་པ་དྲག་པོ་འཇིགས་སུ་རུང་བའི་ཞལ་ལ།)

སཧསྲ་བྷུཛ་བྷཱསུརཱཡ། པརཤུ་པཱཤོདྱཏ་ཤཱུལ་ཁཊྭཱཾག་དྷཱརིཎེ།

सहस्रभुजभासुराय। परशुपाशोद्यतशूलखट्वाङ्गधारिणे।

sahasrabhujabhāsurāya. paraśupāśodyataśūlakhaṭvāṅgadhāriṇe.

(ཕྱག་འོད་ཟེར་སྟོང་ཕྲག་འབར་བ་ལ། དགྲ་སྟ་དང་ཞགས་པ་འཕྱར་ཞིང་མདུང་དང་ཁྲི་ཤང་འཛིན་པ་ལ།)

བྱཱགྷྲཱ་ཛིནཱམྦར་དྷརཱཡ། མཧཱ་དྷཱུམྲཱནྡྷཀཱར་བཔུཥཱཡ།

व्याघ्राजिनाम्बरधराय। महाधूम्रान्धकारवपुषाय।

vyāghrājināmbaradharāya. mahādhūmrāndhakāravapuṣāya.

(སྟག་གི་པགས་པའི་ཤམ་ཐབས་འཛིན་པ་ལ། དུ་བ་དང་མུན་པ་ཆེན་པོ་ལྟ་བུའི་སྐུ་ཅན་ལ།)

---

1. देखें— (ॐ नमो------धिलि धिलि हूँ हूँ फट्) मूलमन्त्रसर्वगोप्यविधिपटलः, पृ० १३० (चक्रसंवरतन्त्रं प्रथमो भागः), दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग; के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी।

मन्त्रोद्धारविमर्श (लेख- डॉ० बनारसी लाल) 'धीः' अंक- ३०, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग, के० उ० ति० शि० सं० सारनाथ, वाराणसी।

[1]ཀ་ར་ཀ་ར།	ཀུ་རུ་ཀུ་རུ།	བནྡྷ་བནྡྷ།
कर कर	कुरु कुरु	बन्ध बन्ध
kara kara	kuru kuru	bandha bandha
(མཛད་མཛད།	མཛོད་མཛོད།	ཆིངས་ཆིངས།)
ཏྲཱསཡ་ཏྲཱསཡ།	ཀྵོབྷཡ་ཀྵོབྷཡ།	ཧྲཽཾ་ཧྲཽཾ།
त्रासय त्रासय	क्षोभय क्षोभय	ह्रौं ह्रौं
trāsaya trāsaya	kṣobhaya kṣobhaya	hrauṃ hrauṃ
(སྐྲག་པར་གྱིས་སྐྲག་པར་གྱིས།	སྐྱོམས་སྐྱོམས།)	
ཧྲཿཧྲཿ།	ཕེཾ་ཕེཾ།	ཕཊ་ཕཊ།
ह्रः ह्रः	फें फें	फट् फट्
hraḥ hraḥ	pheṃ pheṃ	phaṭ phaṭ
		(ཁོས་ཁོས།)
དཧ་དཧ།	པཙ་པཙ།	བྷཀྵ་བྷཀྵ།
दह दह	पच पच	भक्ष भक्ष
daha daha	paca paca	bhakṣa bhakṣa
(སྲེགས་སྲེགས།	ཚོས་ཚོས།	ཟོ་ཟོ།)
བས་རུདྷི་རནྟྲ་མཱལཱབལམྦིནེ།[2]		གྲྀཧྞ་གྲྀཧྞ།
वसरुधिरान्त्रमालावलम्बिने		[3]गृह्ण गृह्ण
vasarudhirāntramālāvalambine.		gṛhṇa gṛhṇa
(ཞག་ཁྲག་རྒྱུ་མའི་འཕྲེང་བ་འཕྱང་བ་ལ།		ཟུང་ཟུང་།)

---

1. देखें- मूलमन्त्रस्याक्षरोद्धारविधिपटलः, च० त०, पृ० ४८-५९)
2. ०བལམྦིནེ- ख.
3. 'ग्रिह्ण ग्रिह्ण'- चक्रसंवरतन्त्र मन्त्रोद्धार, (ऋ ॠ ऌ ॡ—इन चार स्वरों को तन्त्रशास्त्र की सभी शाखाओं में नपुंसक माना गया है तथा फलदायक न होने से इनका प्रयोग बीज अथवा मन्त्र के अंग के रूप में निषिद्ध माना गया है। अतः 'गृह्ण-गृह्ण' के स्थान पर 'ग्रिह्ण-ग्रिह्ण' ही होना चाहिए।)

སཔྟ་པཱཏཱལ་བྷུཛཾ་གཱཾ་སརྤཾ་ཝཱ།
सप्तपाताल[1] भुजङ्गां(ङ्गान्) सर्पं वा
saptapātālabhujaṅgān sarpaṃ vā.
(བདུན་ས་འོག་ལག་འགྲོ་འམ་སྦྲུལ་ལམ།

ཏརྫ་ཡ་ཏརྫ་ཡ།
तर्जय तर्जय
tarjaya tarjaya
སྡིགས་ཤིག སྡིགས་ཤིག)

ཨཱཀཌྜ་ཨཱཀཌྜ།
आकड्ढ आकड्ढ
ākaḍḍha ākaḍḍha

ཧྲཱིཾ་ཧྲཱིཾ།
ह्रीं ह्रीं
hrīṃ hrīṃ

ཛྙཽཾ་ཛྙཽཾ།
ज्णौं ज्णौं
jṇauṃ jṇauṃ

ཀྵྨཱཾ་ཀྵྨཱཾ།
क्ष्मां क्ष्मां
kṣmāṃ kṣmāṃ

ཧཱཾ་ཧཱཾ།
हां हां
hāṃ hāṃ

ཧཱིཾ་ཧཱིཾ།
हीं हीं
hīṃ hīṃ

ཧཱུཾ་ཧཱུཾ།
हूँ हूँ
hūṃ hūṃ

ཀི་ལི་ཀི་ལི།
किलि किलि
kili kili

སི་ལི་སི་ལི།
सिलि सिलि
sili sili

ཧི་ལི་ཧི་ལི།
हिलि हिलि
hili hili

དྷི་ལི་དྷི་ལི།
धिलि धिलि
dhili dhili

ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།
हूँ हूँ फट्।
hūṃ hūṃ phaṭ

ཡབ་ཀྱི་རྩ་སྔགས་སོ།། (पितृ-मूलमन्त्रः= **Pitṛ-mūlamantraḥ**)

ཨོཾ་ཤྲཱི་བཛྲ་ཧེ་ཧེ་རུ་རུ་ཀཾ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄། ཌཱ་ཀི་ནཱི་ཛཱ་ལ་སམྦ་རཾ་སྭཱཧཱ།།
[2]ॐ श्रीवज्र हे हे रु रु कं हुँ हूँ फट् । डाकिनीजालसंवरं स्वाहा।

---

1. भुजङ्गं- चक्रसंवरतन्त्र (सटीक), पृ० ५५, १३०
2. देखें- चक्रसंवरस्य हृदयमन्त्रमाला नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ३२६b-३२७a); विपरीतहृदय षड्योगिनीमन्त्रोद्धारविधिपटलः, चक्रसंवरतन्त्र पृ० ७३-७४, दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग से प्रकाशित।

Oṃ śrīvajra he he ru ru kaṃ huṃ hūṃ phaṭ Ḍākinījālasaṃvaraṃ svāhā.

(དཔལ་རྡོ་རྗེ་ཁྲག་འཐུང་། མཁའ་འགྲོ་མ་དྲྭ་བ་སྡོམ་པ།)

སྙིང་པོའོ།། (हृदयमन्त्रः = **Hṛdayamantraḥ**)

ཨོཾ་ཧྲཱིཿ་ཧ་ཧ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།

ॐ [1]ह्रीः ह ह हुँ हुँ फट्।

Oṃ hrīḥ ha ha huṃ huṃ phaṭ.

ཉེ་བའི་སྙིང་པོའོ།། (उपहृदयमन्त्रः = **Upahṛdayamantraḥ**)

ཨོཾ་བཛྲ་བཻརོཙནཱིཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།

[2]ॐ वज्रवैरोचनीये हुँ हूँ फट्।

Oṃ vajravairocanīye huṃ hūṃ phaṭ.

(རྡོ་རྗེ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་མ།)

ཡུམ་གྱི་སྙིང་པོའོ།། (मातृ-हृदयमन्त्रः = **Mātṛ-hṛdayamantraḥ**)

ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་ཌཱཀིནཱིཡེ་བཛྲ་བརྞྞནཱིཡེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།

[3]ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये वज्रवर्णनीये हुँ हूँ फट्।

Oṃ sarvabuddhaḍākinīye vajravarṇanīye huṃ hūṃ phaṭ.

(སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྡོ་རྗེ་རིགས་ལྡན་མ། །)

ཉེ་བའི་སྙིང་པོའོ།། ।। (उपहृदयमन्त्रः = **Upahṛdayamantraḥ**)

•

---

1. ह्रीं – चक्रसंवरस्य हृदयमन्त्रमाला नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ३२६b-३२७a)
2. ॐ श्रीवज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा- चक्रसंवरस्य हृदयमन्त्रमालानाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ३२६b-३२७a), देखें- अभिसमयमञ्जरी (पृ० १३), दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग से प्रकाशित।
3. ॐ डाकनीये हुँ हूँ फट् - चक्रसंवरस्य हृदयमन्त्रमाला नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ३२६b-३२७a), ॐ सर्वबुद्धडाकिनीये वज्रवर्णनीये हूँ हुँ फट् - चक्रसंवरतन्त्रं, पृ0 ५७५, दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग; देखें- अभिसमयमञ्जरी (पृ० १३), दु० बौ० ग्र० शो० अनुभाग से प्रकाशित।

(3) ༈ དགྱེས་པ་རྡོ་རྗེའི་[སྔགས]།

(हेवज्रमन्त्रः = Hevajra-mantraḥ)

1ཨོཾ་ཨཥྚཱནནཱཡ།
ॐ अष्टाननाय
Oṃ aṣṭānanāya
(རབ་བརྒྱགས་ཞལ་བརྒྱད་པ་ལ།

པིངྒལོརྡྷྭ་ཀེཤ་ཝརྟྨནེ།
पिङ्गलोर्ध्वकेशवर्त्मने
piṅgalordhvakeśavartmane
དབུ་སྐྲ་དམར་སེར་གྱེན་དུ་བརྫེས་པ་ལ།)

ཙཏུརྦིཾཤཏི་ནེཏྲཱཡ།
चतुर्विंशतिनेत्राय
caturviṃśatinetrāya
(སྤྱན་ཉི་ཤུ་རྩ་བཞི་པ་ལ།

ཥོཌཤ་བྷུཛཱཡ།
षोडशभुजाय
ṣoḍaśabhujāya
ཕྱག་བཅུ་དྲུག་པ་ལ།)

ཀྲྀཥྞ་ཛཱིམཱུཏ་ཝཔུཥེ།
कृष्णजीमूतवपुषे
kṛṣṇajīmūtavapuṣe
(ཆར་སྤྲིན་ནག་པོ་ལྟ་བུའི་སྐུ་ཅན་ལ།

ཀཔཱལ་མཱལཱནེཀདྷཱརིཎེ།
कपालमालानेकधारिणे
kapālamālānekadhāriṇe
ཐོད་པའི་ཕྲེང་བ་དུ་མ་འཛིན་པ་ལ།)

2ཨདྷྱཱཏྨ་ཀྲཱུར་ཙིཏྟཱཡ།
अध्यात्म्यक्रूरचित्ताय
adhyātmyakrūracittāya
(ཡོང་ནས་འཁྲུགས་པའི་ཐུགས་ཅན་ལ།

ཨརྡྷེནྡུ་དཾཥྚྲིཎེ།
अर्द्धेन्दुदंष्ट्रिणे
arddhendudaṃṣṭriṇe
ཟླ་བ་ཕྱེད་པ་ལྟ་བུའི་མཆེ་བ་ཅན་ལ།)

---

1. देखें- हेवज्रधारणीपूजाविधिः (धा० सं०, पत्रांक- ११३b-११४a), इस धारणी में हेवज्र की पूजा विधि है, जिसमें 'ॐ अष्टाननाय------अर्द्धेन्दुदंष्ट्रिणे' तक ही हेवज्रमन्त्र उपलब्ध है, और प्रत्येक पद के साथ प्रारम्भ में 'ॐ' और अन्त में 'हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा' जोड़ा है। यथा- ॐ पिङ्गलोर्ध्वकेशवर्त्मने हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा------इत्यादि। आगे का मन्त्र इसमें नहीं है
2. ལ་ལར་ཨུཏྐ་སྣང་བྱས་པ་ནོར་ལ་འགའ་ཞིག་ཏུ་ཨུཏྐ་སྣང༔ འབྱུང་བ་ནི་འདི་དང་ནམ་མྲང་ས་པའོ།།— क. ख., आध्या(मा)तक्रूरचित्ताय- हेवज्रधारणीपूजाविधिः (धा० सं०, पत्रांक- ११३b-११४a)

མཱརཡ་མཱརཡ།
मारय मारय
māraya māraya
(གསད་པར་གྱིས་གསད་པར་གྱིས།

ཀཱརཡ་ཀཱརཡ།
कारय कारय
kāraya kāraya
བྱེད་དུ་ཆུག་བྱེད་དུ་ཆུག)

གརྫཡ་གརྫཡ།
गर्ज्जय गर्ज्जय
garjjaya garjjaya
(སྒྲོགས་སྒྲོགས།

ཏརྫཡ་ཏརྫཡ།
तर्ज्जय तर्ज्जय
tarjjya tarjjaya
སྡིགས་སྡིགས།)

ཤོཥཡ་ཤོཥཡ་སཔྟ་སཱགརཱན།
शोषय शोषय सप्तसागरान्
śoṣaya śoṣaya saptasāgarān
(སྐེམས་ཤིག་སྐེམས་ཤིག་རྒྱ་མཚོ་བདུན་པོ་རྣམས།

བནྡྷ་བནྡྷ་ནཱགཱཥྚཀཱན།
बन्ध बन्ध नागाष्टकान्
bandha bandha nāgāṣṭakān
ཆིངས་ཆིངས་ཀླུ་བརྒྱད་པོ་རྣམས།)

གྲྀཧྞ་གྲྀཧྞ་ཤཏྲཱུན།
गृह्ण गृह्ण शत्रून्
Gṛhṇa gṛhṇa śatrūn
(ཟུང་ཟུང་དགྲ་བོ་རྣམས།

ཧ་ཧཱ་ཧི་ཧཱི་ཧུ་ཧཱུ་ཧེ་ཧཻ་ཧོ་ཧཽ་ཧཾ་ཧཿ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།
ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः फट् स्वाहा।
ha hā hi hī hu hū he hai ho hau haṃ haḥ phaṭ svāhā
ཁོས་ཤིག ཞིགས་པ་སྒྲིམ།)

ཡབ་ཀྱི་ཙ་སྔགས་སོ།། (पितृ-मूलमन्त्रः= **Pitṛ-mūlamantraḥ**)

ཨོཾ་དེཝ་པིཙུ་བཛྲ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།
[1]ॐ देव पिचुवज्र हूँ हूँ हूँ फट् स्वाहा।

---

1. ॐ देव पिचुवज्र हूँ फट् स्वाहा- हेवज्रनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १२८a-१२९b), इस धारणी मन्त्र में मूलमन्त्र— 'ॐ देव-----स्वाहा' के अतिरिक्त अन्य सभी मन्त्र भिन्न हैं।

Oṃ deva picuvajra hūṃ hūṃ hūṃ phaṭ svāhā.

(བཀྲ་ཤིས། ལྷ་འཇམ་པོ་རྡོ་རྗེ། ལེགས་པ་སྐྱོལ།)

སྙིང་པོའོ།། (हृदयमन्त्रः= **Hṛdayamantraḥ**)

ཨོཾ་བཛྲ་ཀརྟ་རི་ཧེ་བཛྲཱ་ཡ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ वज्रकर्तरी हेवज्राय हुँ हुँ हुँ फट् स्वाहा।

Oṃ vajrakartarī hevajrāya huṃ huṃ huṃ phaṭ svāhā.

(རྡོ་རྗེ་གྲི་གུག བརྩེ་བ་[དགྱེས་པ་] རྡོ་རྗེ་ལ།)

ཉེ་བའི་སྙིང་པོའོ།། (उपहृदयमन्त्रः = **Upahṛdayamantraḥ**)

ཨོཾ་ཨཱཿནཾ་བཛྲ་ནཻ་རཱཏྨ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ आः नं वज्रनैरात्म हूँ फट् स्वाहा।

Oṃ āḥ naṃ vajranairātma hūṃ phaṭ svāhā.

(རྡོ་རྗེ་བདག་མེད་མ།)

ཡུམ་གྱི་མཚན་སྔགས་སོ།། (मातृ-नाममन्त्रः = **Matṛ-nāmamantraḥ**)

ཨོཾ་ཨཱ་ཨཾ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ आ अं हूँ फट् स्वाहा।

Oṃ ā aṃ hūṃ phaṭ svāhā.

སྙིང་པོའོ།། ।। (हृदयमन्त्रः = **Hṛdayamantraḥ**)

•

(4) ༈ འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས།
([1]आर्य-अमोघपाशनामधारणी = Ārya-Amoghapāśanāmadhāraṇī)

ན་མསྟྲཻཡདྷྭ་ཨནུགཏ་པྲཏིཥྛིཏེབྷྱཿ་སརྦ་བུདྡྷ་བོདྷི་སཏྭེབྷྱཿ།

2(ॐ) नमस्त्रैयध्वानुगतप्रतिष्ठितेभ्यः। 3(नमः)सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः।

(Oṃ) namastraiyadhvānugatapratiṣṭhitebhyaḥ (Namaḥ) sarvabuddhabodhi-sattvebhyaḥ

(དུས་གསུམ་དུ་གཤེགས་ཤིང་བཞུགས་པའི་སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ནམཿ་པྲཏྱེཀ་བུདྡྷ་ཨཱརྱ་ཤྲཱ་བཀ་སཾགྷེབྷྱཿ། ཨཏཱིཏ་ཨནཱ་གཏ་པྲཏྱུཏྤནྣེབྷྱཿ།

नमः प्रत्येकबुद्ध-आर्यश्रावकसङ्घेभ्यः। अतीत-अनागत-प्रत्युत्पन्नेभ्यः।

Namaḥ pratyekabuddha-āryaśrāvakasaṅghebhyaḥ. Atīta-anāgata-pratyut-pannebhyaḥ.

(འདས་པ་དང་མ་བྱོན་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་རང་སངས་རྒྱས་དང་འཕགས་པ་ཉན་ཐོས་ཀྱི་དགེ་འདུན་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ནམཿ་སམྱག་གཏཱ་ནཱཾ། ནམཿ་སམྱཀ་པྲཏིཔནྣཱ་ནཱཾ།

नमः सम्यग्गतानाम्। 4नमः सम्यक्प्रतिपन्नानाम्।

Namaḥ samyaggatānām. Namaḥ samyakpratipannānām.

(ཡང་དག་པར་སོང་བ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཡང་དག་པར་ཞུགས་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

---

1. 'प्रस्तुत ग्रन्थ में आर्यामोघपाशधारणी से वैश्रवणधारणीमन्त्र' (पृ० १२-७६) तक (ཞ་ལུ་ལོ་ཙཱ་བ་ཆེན་པོ) महा-अनुवादक श् लु अर्थात् "छोस् क्योङ् जङ्-पो" द्वारा संगृहीत हैं। इसके पूर्व और पर के सभी धारणी मन्त्र प्रस्तुत ग्रन्थ के प्रणेता (བཙུན་པ་དབང་པོ) भदन्त इन्द्र के द्वारा संकलित हैं।
   प्रस्तुत सम्पूर्ण धारणी "आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम्" (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b) के अन्तर्गत (पत्रांक- ५०a-५२a) समाविष्ट है।
2. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
3. 'नमः' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'नमः सम्यक्प्रतिपन्नानाम्' नास्ति- तत्रैव

ནམཿ་ཤཱརདྭཏཱི་པུཏྲཱཡ་མཧཱ་མཏཡེ།

नमः शारद्वतीपुत्राय [1]महामतये।

Namaḥ śāradvatīputrāya mahāmataye.

(བློ་གྲོས་ཆེན་པོ་ཤཱརདྭཏཱིའི་བུ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་ཨཱརྱ་མཻཏྲེཡ་པྲམུཁེབྷྱོ་མཧཱ་བོདྷི་སཏྭེབྷྱཿ།

नमः आर्यमैत्रेयप्रमुखेभ्यो महाबोधिसत्त्वेभ्यः।

Namaḥ āryamaitreyapramukhebhyo mahābodhisattvebhyaḥ.

(འཕགས་པ་བྱམས་པ་ལ་སོགས་པ་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་སུཔྲཏིཥྛིཏ་ཤཻལེནྡྲ་རཱཛ་པྲམུཁེབྷྱཿ་སརྦ་ཏཐཱགཏེབྷྱོ་ཨརྷདྦྷྱཿ་སམྱཀ྄་སམྦུདྡྷེབྷྱོ་

བྷགཝདྦྷྱཿ།

नमः सुप्रतिष्ठितशैलेन्द्रराजप्रमुखेभ्यः सर्वतथागतेभ्योऽर्हद्भ्यः सम्यक्सम्बुद्धेभ्यो [2]भगवद्भ्यः।

Namaḥ supratiṣṭhitaśailendrarājapramukhebhyaḥ sarvatathāgatebhyo-arhad-bhyaḥ samyaksambuddhebhyo bhagavadbhyaḥ.

(ལེགས་པར་རབ་གནས་རི་དབང་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་སོགས་པ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་སུཝརྞ་ཝརྞ་སུཔྲཏིབྷཱས་ཝིནརྡིཏེཤྭར་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः सुवर्णवर्ण[3]सुप्रतिभासविनर्दितेश्वरराजाय तथागताय।

Namaḥ suvarṇavarṇasupratibhāsavinarditeśvararājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་གྱི་མདོག་ཅན་རབ་ཏུ་སྣང་བ་སྒྲ་དབྱངས་དབང་ཕྱུག་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

---

1. दानपतये- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. भगवत्यः- तत्रैव
3. ०प्रभाविनतेश्वरराजाय- तत्रैव

ནམཿ་སིཾཧ་བིཀྲཱིཌིཏ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः सिंहविक्रीडितराजाय तथागताय।

Namaḥ siṃhavikrīḍitarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སེང་གེ་རྣམ་པར་རོལ་པའི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམོ་ཨམིཏཱབྷཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

[1]नमोऽमिताभाय तथागताय।

Namo-amitābhāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་དཔག་མེད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་སུཔྲཏིཥྛིཏ་མཎི་ཀཱུཊ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः सुप्रतिष्ठितमणिकूटराजाय तथागताय।

Namaḥ supratiṣṭhitamaṇikūṭarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལེགས་པར་རབ་གནས་ནོར་བུ་བརྩེགས་པའི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་སམནྟ་རཤྨྱུདྒཏ་ཤྲཱི་ཀཱུཊ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः समन्तरश्म्युद्गतश्रीकूटराजाय तथागताय।

Namaḥ samantaraśmyudgataśrīkūṭarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་ཟེར་ཀུན་ནས་འཕགས་པ་དཔལ་བརྩེགས་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམོ་བིཔཤྱིནེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमो विपश्यिने तथागताय।

Namo vipaśyine tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་གཟིགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་ཤིཁིནེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः शिखिने तथागताय।

Namaḥ śikhine tathāgatāya.

།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གཙུག་ཏོར་ཅན་ལ་ཕྱག་

---

1. नम आर्यामिताभाय- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

ནམོཿ་བིཤྭ་བྷུཛེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमो [1]विश्वभुजे तथागताय।

Namo viśvabhuje tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་སྐྱོབ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

།ནམཿ་ཀྲཀུཙྪནྡཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः क्रकुच्छन्दाय तथागताय।

Namaḥ krakucchandāya tathāgatāya.

།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལོག་པར་དད་སེལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ནམཿ་ཀནཀ་མུནཡེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः कनकमुनये तथागताय।

Namaḥ kanakamunaye tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་གསེར་ཐུབ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།

།ནམཿ་ཀཱཤྱཔཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः काश्यपाय तथागताय।

Namaḥ kāśyapāya tathāgatāya.

།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འོད་སྲུངས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ནམཿ་ཤཱཀྱ་མུནཡེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः शाक्यमुनये तथागताय

Namaḥ śākyamunaye tathāgatāya

།ཨརྷཏེ་སམྱཀ་ སམྦུདྡྷཱཡ།

अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय।

arhate samyaksambuddhāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ।)

ཏདྱཐཱ།

तद्यथा—

Tadyathā

(འདི་ལྟ་སྟེ། །

ཨོཾ་མུནེ་མུནེ་མཧཱ་མུནཡེ་སྭཱཧཱ།

ॐ मुने मुने महामुनये स्वाहा।

Oṃ mune mune mahāmunaye svāhā.

ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ལ།)

ཨོཾ་སམེ་སམེ་མཧཱ་སམེ་རཀྵ་རཀྵ་མཾ་སརྦ་སཏྭཱཾཤྩ་སརྦ་པཱཔཾ་[པ]པྲཤམནེ་སྭཱཧཱ།

ॐ समे समे महासमे रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च सर्वपापप्रशमने स्वाहा।

Oṃ same same mahāsame rakṣa rakṣa māṃ sarvasattvāṃśca. sarvapāpa-praśamane svāhā.

(མཉམ་པ་མཉམ་པ། མཉམ་པ་ཆེན་པོ། བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྲུང་སྲུང་། སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་གཞི་ཚུགས།)

---

1. विश्वभुवे- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

ནམཿ་སུཔརིཀཱིརྟིཏ་ནཱམདྷེཡཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः सुपरिकीर्तितनामधेयाय तथागताय।

Namaḥ suparikīrtitanāmadheyāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་མཚན་ལེགས་པར་ཡོངས་བསྒྲགས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་སམནྟཱ་ཨབྷཱས་བིཛིཏ་སཾགྲཱམ་ཤྲིཡེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमः समन्तावभासविजितसंग्रामश्रिये तथागताय।

Namaḥ samantāvabhāsavijitasaṃgrāmaśriye tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་ནས་སྣང་བ་གཡུལ་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམ་ཨིནྡྲ་ཀེཏུ་དྷྭཛ་ཤྲིཡེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नम इन्द्रकेतुध्वजश्रिये तथागताय।

Namaḥ indraketudhvajaśriye tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དབང་པོ་ཏོག་གི་རྒྱལ་མཚན་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམོ་རཏྣ་པྲབྷཱསེཤྭར་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमो रत्नप्रभासेश्वरराजाय तथागताय।

Namaḥ ratnaprabhāseśvararājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རིན་ཆེན་འོད་འཕྲོ་དབང་ཕྱུག་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམོ་ཨཔྲཏིཧཏ་བྷཻཥཛྱེ[ཛྱ]་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमो अप्रतिहतभैषज्यराजाय तथागताय।

Namo apratihatabhaiṣajyarājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ་སྨན་པའི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམོ་བིཀྲཱནྟ་གཱམིནེ་ཏཐཱགཏཱཡ།

नमो विक्रान्तगामिने तथागताय।

Namo vikrāntagāmine tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་གནོན་པས་གཤེགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ན་མོ་བུདྡྷཱ་ཡ། ན་མོ་དྷརྨཱ་ཡ། ན་མཿ སཾགྷཱ་ཡ།

नमो बुद्धाय। नमो धर्माय। नमः संघाय।

Namo buddhāya. Namo dharmāya. Namo saṃghāya.

(སངས་རྒྱས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཆོས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །དགེ་འདུན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ན་མོ་ཨཏཱིཏ་ཨནཱགཏ་པྲཏྱུཏྤནྣེབྷྱོ་ བུདྡྷེབྷྱོ་བྷགབདྦྷྱཿ།

नमोऽतीत-अनागत-प्रत्युत्पन्नेभ्यो बुद्धेभ्यो भगवद्भ्यः।

Namo-atīta-anāgata-pratyutpannebhyo buddhebhyo bhagavadbhyaḥ.

(འདས་པ་དང་མ་བྱོན་པ་དང་ད་ལྟར་བྱུང་བའི་སངས་རྒྱས་བཅོམ་ལྡན་འདས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ཏདྱཐཱ།

तद्यथा-

Tadyathā-

(འདི་ལྟ་སྟེ།

སྨྲྀཏི་ཝརྡྷ་ནི།

स्मृतिवर्धनि

samṛtivardhani

དྲན་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

མཏི་ཝརྡྷ་ནི།

मतिवर्धनि

mativardhani

(བློ་གྲོས་འཕེལ་བར་མཛད་པ།

གཏི་ཝརྡྷ་ནི།

गतिवर्धनि

gativardhani

རྟོགས་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

དྷྲྀཏི་ཝརྡྷ་ནི།

धृतिवर्धनि

dhṛtivardhani

(བརྟན་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།

པྲཛྙཱ་ཝརྡྷ་ནི།

प्रज्ञावर्धनि

prajñāvardhani

ཤེས་རབ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

པྲཏིབྷཱན་ཝརྡྷ་ནི།

प्रतिभानवर्धनि

pratibhānavardhani

(སྤོབས་པ་འཕེལ་བར་མཛད་པ།

དྷྱཱན་ཝརྡྷ་ནི།

ध्यानवर्धनि

dhyānavardhani

བསམ་གཏན་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

ཤམསྠ་ཝརྡྷནི།

1शमस्थ(थ)वर्धनि

śamastha(tha)vardhani

(ཞི་གནས་འཕེལ་བར་མཛད་པ།

བིཔཤྱ་བརྡྷནི།

2विपश्य(ना)वर्धनि

vipaśya(nā)vardhani

ལྷག་མཐོང་འཕེལ་བར་མཛད་པ།)

སརྦ་བོདྷི་པཀྵ་དྷརྨ་ཝརྡྷནི།

सर्वबोधिपक्षधर्मवर्धनि

sarvabodhipakṣadharmavardhani

སཀལ་བུདྡྷ་དྷརྨ་པརིཔཱུརཎཱིཡེ་སྭཱཧཱ།།

सकलबुद्धधर्मपरिपूरणीये स्वाहा।

sakalabuddhadharmaparipūraṇīye svāha.

(བྱང་ཆུབ་ཀྱི་ཕྱོགས་ཀྱི་ཆོས་ཐམས་ཅད་འཕེལ་བར་མཛད་པ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་མཐའ་དག་ཡོངས་སུ་རྫོགས་པའི་ཕྱིར་དུ།)

ནམོ་རཏྣ་ཏྲཡཱཡ།

नमो रत्नत्रयाय।

Namo ratnatrayāya.

(དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ནམ་ཨཱརྱ་ཨབལོཀིཏེཤྭརཱཡ་བོདྷི་སཏྭཱཡ་མཧཱ་སཏྭཱཡ་མཧཱ་ཀཱརུཎིཀཱཡ།

नम आर्य-अवलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय।

Nama ārya-avalokiteśvarāya bodhisattvāya mahāsattvāya mahākāruṇikāya.

(བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཅན་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ནམོ་མཧཱ་སྠཱམ་པྲཱཔྟཱཡ་བོདྷི་སཏྭཱཡ་མཧཱ་སཏྭཱཡ་མཧཱ་ཀཱརུཎིཀཱཡ།

नमो महास्थामप्राप्ताय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय।

---

1. इतः पूर्वं 'समाधिवर्धनि' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a ५३b)
2. 'विपश्यवर्धनि' नास्ति- तत्रैव

Namo mahāsthāmaprāptāya bodhisattvāya mahākāruṇikāya

(བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་མཐུ་ཆེན་ཐོབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཨེབྷྱོ་ནམསྐྲྀཏྭ་ཨིདཾ་ཨཱརྱཱ་ཨབལོཀིཏེཤྭར་མུཁོདྒཱིརྞཾ།

एभ्यो नमस्कृत्वा इदम् आर्यावलोकितेश्वरमुखोद्गीर्णम्

Ebhyo namaskṛtvā idam āryāvalokiteśvaramukhodgīrṇam

(དེ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ནས། འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་གི་ཞལ་ནས་གསུངས་པ།)

ཨམོགྷ་པཱཤ་རཱཛཱ་ནཱམ་ཧྲིདཡཾ་ཏཐཱགཏ་སཾམུཁ་བྷཱཥིཏཾ་མཧཏྤརྵནྨདྷྱེ་ཨཧཾ་ཨིདཱནཱིཾ་

ཨཱབརྟཡིཥྱེ།

अमोघपाश[1]राजानामहृदयं तथागत[2]संमुखभाषितं महत्पर्षन्मध्ये अहम् इदानीं अवर्तयिष्ये।

Amoghapāśarājānāmahṛdayaṃ tathāgatasaṃmukhabhāṣitaṃ mahatparṣan-madhye ahaṃ idānīṃ avartayiśye.

(དོན་ཡོད་ཞགས་པའི་རྒྱལ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་སྙིང་པོ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལ་ཀུན་ནས་ཕྱོགས་ཏེ་འཁོར་ཆེན་པོའི་དབུས་སུ་གསུངས་པ་འདི་བདག་གིས་ད་ནི་བསྒྲག་པར་བགྱིའོ། །)

སིདྡྷྱནྟུ་མེ་མནྟྲ་པདཱཿ་སརྦ་ཀཱརྱཱཎི།

सिद्ध्यन्तु मे मन्त्रपदाः सर्वकार्याणि।

Siddhyntu me mantrapadāḥ sarvakāryāṇi.

(བདག་ལ་གསང་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་རྣམས་དང་དགོས་པ་ཐམས་ཅད་[འ] གྲུབ་པར་གྱུར་ཅིག)

སརྦ་བྷཡེབྷྱོ་མམ་སརྦ་སཏྭཱནཱཉྩ་རཀྵཱ་[ཀྵཱ]་བྷབཏུ།

[3]सर्वभयेभ्यो मम सर्वसत्त्वानाञ्च रक्षा भवतु।

Sarvabhayebhyo mama sarvasattvānāñca rakṣā bhavatu.

(བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་ལས་སྲུང་དུ་གསོལ།)

---

1. 'राजा' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. मुख०- तत्रैव
3. सर्वसत्त्वेभ्यः- तत्रैव

ཏདྱཐཱ།	ཨོཾ་ཙར་ཙར།	ཙིརི་ཙིརི།	ཙུརུ་ཙུརུ།	མར་མར།
तद्यथा—	ॐ चर चर	चिरि चिरि	चुरु चुरु	मर मर
Tadyathā-	Oṃ cara cara	ciri ciri	curu curu	mara mara
(འདི་ལྟ་སྟེ།)				

མིརི་མིརི།	མུརུ་མུརུ།	མཧཱ་ཀཱ་རུཎི་ཀ།
मिरि मिरि	मुरु मुरु	महाकारुणिक[1] (स्वाहा।)
miri miri	muru muru	mahākāruṇika (svāhā.)
		(ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ།)

(संशोधनमन्त्रः = **Saṃśodhanamantraḥ**)

སར་སར།	སིརི་སིརི།	སུརུ་སུརུ།	ཙུརུ་ཙུརུ།	ཙིརི་ཙིརི།
[2](ॐ)सर सर	सिरि सिरि	सुरु सुरु	चुरु चुरु	चिरि चिरि
sara sara	siri siri	suru suru	curu curu	ciri ciri

བིརི་བིརི།	པིརི་པིརི།	མིརི་མིརི།	མཧཱ་པདྨ་ཧསྟ།
विरि विरि	[3]पिरि पिरि	मिरि मिरि	[4]महापद्महस्त(ाय स्वाहा।)
viri viri	piri piri	miri miri	mahāpadmahasta(āya svāhā.)
			(ཕྱག་ན་པདྨ་ཆེན་པོ་ཅན།)

(विघ्नोत्सारणमन्त्रः = **Vighnotsāraṇamantraḥ**)

---

1. 'स्वाहा। संशोधनमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'ॐ' नास्ति- तत्रैव
3. 'पिरि पिरि' नास्ति- तत्रैव
4. महापद्महस्ताय स्वाहा। विघ्नोत्सारणमन्त्रः- तत्रैव

ཀ་ལ་ཀ་ལ། ཀི་ལི་ཀི་ལི། ཀུ་ལུ་ཀུ་ལུ། མཧཱ་ཤུདྡྷ་སཏྭཱ།

1(ॐ)कल कल किलि किलि कुलु कुलु 2महाशुद्धसत्त्व(ाय स्वाहा।)

kala kala kili kili kulu kulu mahāśuddhasattva(āya svāhā)

(སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེན་པོ།)

(देवतासंशोधनमन्त्रः = **Devatāsaṃśodhana-mantraḥ**)

བུདྡྷྱ་བུདྡྷྱ། བོདྷ་བོདྷ། བོདྷི་བོདྷི། བོདྷཡ་བོདྷཡ།

3(ॐ)बुद्ध्य बुद्ध्य बोध बोध 4बोधि बोधि बोधय बोधय

Oṃ buddhya buddhya bodha bodha bodhi bodhi bodhaya bodhaya

ཀཎ་ཀཎ། ཀིཎི་ཀིཎི། ཀུཎུ་ཀུཎུ། པརམ་ཤུདྡྷ་སཏྭཱ།

कण कण किणि किणि कुणु कुणु 5परमशुद्धसत्त्व(ाय स्वाहा।)

kaṇa kaṇa kiṇi kiṇi kuṇu kuṇu paramaśuddhasattva(āya svāhā)

(མཆོག་ཏུ་དག་པའི་སེམས་དཔའ།)

(तथागतमन्त्रः = **Tathāgata-mantraḥ**)

ཀ་ར་ཀ་ར། ཀི་རི་ཀི་རི། ཀུ་རུ་ཀུ་རུ། མཧཱ་སྠཱམ་པྲཱཔྟཱ།

6(ॐ) कर कर किरि किरि कुरु कुरु 7महास्थामप्राप्त(ाय स्वाहा।)

kara kara kiri kiri kuru kuru mahāsthāmaprāpta(āya svāhā)

(མཐུ་ཆེན་པོ་ཐོབ་པ།)

(निवेशमन्त्रः = **Niveśa-mantraḥ**)

---

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. महाशुद्धसत्त्वाय स्वाहा। देवतासंशोधनमन्त्रः- तत्रैव
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'बोधि बोधि' नास्ति- तत्रैव
5. महापरमशुद्धसत्त्वाय स्वाहा। तथागतमन्त्रः- तत्रैव
6. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
7. महास्थामप्राप्ताय स्वाहा। निवेशमन्त्रः- तत्रैव

ཙལ་ཙལ། སཉྩལ་སཉྩལ། བིཙལ་བིཙལ། པྲཙལ་པྲཙལ། ཨེཊཊ་ཨེཊཊ།

1ॐ चल चल सञ्चल सञ्चल विचल विचल 2प्रचल प्रचल एटट एटट

cala cala sañcala sañcala vicala vicala pracala pracala eṭaṭa eṭaṭa

བྷར་བྷར། བྷིརི་བྷིརི། བྷུརུ་བྷུརུ། ཏར་ཏར། ཏིརི་ཏིརི།

भर भर भिरि भिरि भुरु भुरु तर तर तिरि तिरि

bhara bhara bhiri bhiri bhuru bhuru tara tara tiri tiri

ཏུརུ་ཏུརུ། ཨེཧྱེཧི་མཧཱ་ཀཱརུཎིཀ །

तुरु तुरु एह्येहि महाकारुणिक3 (स्वाहा)।

turu turu ehyehi mahākāruṇika (svāhā.)

(ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཅན།)

(आकर्षणमन्त्रः = **Ākarṣaṇa-mantraḥ**)

མཧཱ་པཤུཔཏི་བེཥ་དྷར། དྷར་དྷར། དྷིརི་དྷིརི། དྷུརུ་དྷུརུ། ཏར་ཏར།

महापशुपतिवेष4धर धर धर धिरि धिरि धुरु धुरु तर तर

mahāpaśupativeṣadhara dhara dhara dhiri dhiri dhuru dhuru tara tara

(ཕྱུགས་བདག་ཆེན་པོའི་ཆ་ལུགས་འཛིན་པ་པོ།)

སར་སར། ཙར་ཙར། པར་པར། བར་བར། མར་མར། ལར་ལར། ཧར་ཧར།

सर सर चर चर पर पर वर वर मर मर लर लर हर हर

sara sara cara cara para para vara vara mara mara lara lara hara hara

---

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनाम्हृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'प्रचल प्रचल' नास्ति- तत्रैव
3. 'स्वाहा। आकर्षणमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'धर' नास्ति- तत्रैव

ཧཱ་ཧཱ་ཧཱི་ཧཱི་ཧཱུ་ཧཱུ།	ཨོཾ་ཀཱ་ར་བྲཧྨ་བེ་ཥ་དྷ་ར།		དྷ་ར་དྷ་ར།
[1]हा हा ही ही हू हू	ॐकार ब्रह्मवेष[2]धर		धर धर
hā hā hī hī hū hū	Oṃkāra brahmaveṣadara		dhara dhara
	(ཡི་གེ་ཨོཾ་དང་ཚངས་པའི་ཆ་ལུགས་འཆང་།)		
དྷི་རི་དྷི་རི།	དྷུ་རུ་དྷུ་རུ།	ཏ་ར་ཏ་ར།	ས་ར་ས་ར།
धिरि धिरि	धुरु धुरु	तर तर	सर सर
dhiri dhiri	dhuru dhuru	tara tara	sara sara
ཙ་ར་ཙ་ར།	ན་ར་ན་ར།	བ་ར་བ་ར།	ཧ་ར་ཧ་ར།
चर चर	[3]नर नर	वर वर	हर हर
cara cara	nara nara	vara vara	hara hara
རཤྨི་ཤ་ཏ་ས་ཧ་སྲ་པྲ་ཏི་མཎྜི་ཏ་ཤ་རཱི་ར།		ཛྭ་ལ་ཛྭ་ལ།	ཏ་པ་ཏ་པ།
रश्मिशतसहस्रप्रतिमण्डितशरीर		ज्वल ज्वल	तप तप
raśmiśatasahasrapratimaṇḍitaśarīra		jvala jvala	tapa tapa
(འོད་ཟེར་བརྒྱ་སྟོང་གིས་སོ་སོར་བརྒྱན་པའི་སྐུ།)			
བྷཱ་ས་བྷཱ་ས།	བྷྲ་མ་བྷྲ་མ།	བྷ་ག་བཱན།	སོ་མ།
भास भास	भ्रम भ्रम	[4]भगवान्	सोम
bhāsa bhāsa	bhrama bhrama	bhagavān	soma
		(བཅོམ་ལྡན།	ཟླ་བ
ཨཱ་དི་ཏྱ།	ཡ་མ།	བ་རུ་ཎ།	ཀུ་བེ་ར།
आदित्य	यम	वरुण	कुबेर

---

1. ह हा हि ही हु हू- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'धर' नास्ति- तत्रैव
3. 'नर नर' नास्ति- तत्रैव
4. भगवन्- तत्रैव

āditya	yama	varuṇa	kubera
(ཉི་མ།	གཤིན་རྗེ་དང་།	ཆུ་ལྷ།	ལུས་ངན།)

བྲཧྨ།	ཨིནྡྲ།	བཱ་ཡུ།	ཨགྣི།
ब्रह्म	इन्द्र	वायु	अग्नि
brahma	indra	vāyu	agni
(ཚངས་པ།	དབང་པོ་དང་།	རླུང་ལྷ།	མེ་ལྷ།)

དྷནད་དེཝ་རྀཥི་གཎ་ཨབྷྱརྩིཏ་ཙརཎ།

धनद देव ऋषिगण अभ्यर्चितचरण[1] (स्वाहा।)

dhanada deva ṛṣigaṇa abhyarcitacaraṇa (svāhā.)

(ནོར་སྦྱིན་ལྷ་ཡི་ནི། དྲང་སྲོང་ཚོགས་ཀྱིས་ཞབས་ནི་མངོན་མཆོད་པ། །)

(अर्घासन-स्नान-मन्त्राद्यलङ्कार-गन्ध-पुष्प-धूप-छत्र-ध्वज-पताकावली-दीपमन्त्रः = Arghāsana-snāna-mantrādylaṅkāra-gandha-puśpa-dhūpa-chatra-dhvaja-patākāvalī-dīpamantraḥ)

སུ་རུ་སུ་རུ།	ཙུ་རུ་ཙུ་རུ།	མུ་རུ་མུ་རུ།	གྷུ་རུ་གྷུ་རུ།	སནཏྐུམཱར།
सुरु सुरु	चुरु चुरु	मुरु मुरु	घुरु घुरु	सनत्कुमार
suru suru	curu curu	muru muru	ghuru ghuru	sanatkumāra
				(ཀུན་འགྱེད་གཞོན་ནུ།)

རུདྲ།	བཱསབ།	བིཥྞུ།	དྷནད།	བཱཡུ།
रुद्र	वासव	विष्णु	धनद	वायु
rudra	vāsava	viṣṇu	dhanada	vāyu
(དྲག་པོ།	གནས་འཇོག་དང་།	ཁྱབ་འཇུག	ནོར་སྦྱིན།	རླུང་ལྷ།)

1. 'स्वाहा। अर्घासनस्नानमन्त्राद्यलङ्कारगन्धपुष्पधूपछत्रध्वजपताकावलीदीपमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

ཨགྣི།	རྀཥི་ནཱཡཀ།	བིནཱཡཀ་བཧུ་བིབིདྷ་བེཥ་དྷར།
अग्नि	ऋषिनायक	[1]विनायक बहुविविधवेषधर ।[2]
agni	ṛṣināyaka	vināyaka bahuvividhaveṣadhara
(མེ་ལྷ་དང་།	དྲང་སྲོང་འདྲེན་པ།	རྣམ་འདྲེན་ལ་སོགས་པའི་ཆ་བྱད་རྣམ་པ་མང་པོ་འཛིན་མཛད་པ།)

(देवतालक्षणमन्त्रः = **Devatālakṣaṇa-mantraḥ**)

དྷར་དྷར།	དྷི་རི་དྷི་རི།	དྷུ་རུ་དྷུ་རུ།	ཏར་ཏར།	ཐར་ཐར།
धर धर	धिरि धिरि	धुरु धुरु	तर तर	थर थर
dhara dhara	dhiri dhiri	dhuru dhuru	tara tara	thara thara
གྷར་གྷར།	ཡར་ཡར།	ལར་ལར།	ཧར་ཧར།	པར་པར།
घर घर	[3]यर यर	लर लर	हर हर	[4]पर पर
ghara ghara	yara yara	lara lara	hara hara	para para

སར་སར།	བར་བར།	བར་དཱཡཀ
सर सर	वर वर	[5]वरदायक। (वरदाय स्वाहा।)
sara sara	vara vara	varadāyaka (varadāya svāhā.)
		(མཆོག་སྩོལ།)

(साधकस्य निवेशमन्त्रः = **Sādhakasya niveśa-mantraḥ**)

---

1. 'विनायक' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'देवतालक्षणमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव
3. पर पर- तत्रैव
4. यर यर - तत्रैव
5. वरदाय स्वाहा। साधकस्य निवेशमन्त्रः- तत्रैव

སམནྟ་ཨབལོཀིད[1]། བིལོཀིད[2]། ལོཀེཤྭར།
समन्त-अवलोकित विलोकित लोकेश्वर
samanta-avalokita vilokita lokeśvara
(ཀུན་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས། རྣམ་པར་གཟིགས། འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱུག)

མཧེཤྭར། ཏྲི་བྷུབནེཤྭར། སརྦ་གུཎ་སམལཾཀྲིད་ཨབལོཀིཏེཤྭར།
महेश्वर त्रिभुवनेश्वर सर्वगुणसमलंकृत-अवलोकितेश्वर
maheśavara tribhuvaneśvara sarvaguṇasamalaṃkṛta-avalokiteśvara
(སྲིད་གསུམ་དབང་ཕྱུག་དབང་ཕྱུག་ཆེ། ཡོན་ཏན་ཀུན་གྱིས་ཡང་དག་པར་བརྒྱན་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག)

མུཧུ་མུཧུ། མུརུ་མུརུ། མུཡ་མུཡ། མུཉྩ་མུཉྩ
मुहु मुहु मुरु मुरु मुय मुय मुञ्च मुञ्च
muhu muhu muru muru muya muya muñca muñca

རཀྵ་རཀྵ་མཾ་སརྦ་སཏྭཾཤྩ། སརྦ་བྷཡེབྷྱཿ།
रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च सर्वभयेभ्यः
rakṣa rakṣa māṃ sarvasattvāṃśca sarvabhayebhyaḥ
(བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད། འཇིགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་།)

སརྦོཔདྲབེབྷྱཿ། སརྦོཔསརྒེབྷྱཿ།
सर्वोपद्रवेभ्यः [3]सर्वोपसर्गेभ्यः
sarvopadravebhyaḥ sarvopasargebhyaḥ
(ཉེ་བར་འཚེ་བ་ཐམས་ཅད་དང་། གནོད་པ་ཐམས་ཅད་དང་།)

---

1. ཨབལོཀིདེ- ख.
2. བིལོཀིདེ- ख.
3. 'सर्वोपसर्गेभ्यः' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

སརྦ་གྲཧེབྷྱཿ།	སརྦ་བྱཱདྷིབྷྱཿ།	སརྦ་བིཥེབྷྱཿ།	སརྦ་ཛྭརེབྷྱཿ།
सर्वग्रहेभ्यः	सर्वव्याधिभ्यः	सर्वविषेभ्यः	सर्वज्वरेभ्यः
sarvagrahebhyaḥ	sarvavyādhibhyaḥ	sarvaviṣebhyaḥ	sarvajvarebhyaḥ
(གདོན་ཐམས་ཅད་དང་།	ནད་འགོ་བ་ཐམས་ཅད་དང་།	དུག་ཐམས་ཅད་དང་།	རིམས་ནད་ཐམས་ཅད་ལས་

སྐྱུངས་ཤིག་སྐྱུངས་ཤིག །)

ཨེཝཾ།	བདྷ།	བནྡྷན།	ཏཱཌན།	ཏརྫན།
एवं	वध	बन्धन	ताडन	तर्जन
evaṃ	vadha	bandhana	tāḍana	tarjana
(དེ་བཞིན་དུ།	གསད་པ་དང་།	བཅིང་བ་དང་།	བརྡེག་པ་དང་།	སྡིག་པ་དང་།)

རཱཛ།	ཏསྐར།	ཨགྣི།	ཨུདཀ།	བིཥ།
राज	तस्कर	अग्नि	उदक	विष
rāja	taskara	agni	udaka	viṣa
(རྒྱལ་པོ་དང་།	ཆོམ་རྐུན་དང་།	མེ་དང་།	ཆུ་དང་།	དུག་དང་།)

ཤསྟྲ།	པརིམོཙཀ །
शस्त्र	परिमोचक[1] (स्वाहा) ।
śastra	parimocaka (svāhā.)
(མཚོན་ཆ་ལས་	ཡོངས་སུ་གྲོལ་བར་མཛད་པ་པོ།)

ཀཎ་ཀཎ།	ཀིཎི་ཀིཎི།	ཀུཎུ་ཀུཎུ།	ཙར་ཙར།
कण कण	किणि किणि	कुणु कुणु	चर चर
kaṇa kaṇa	kiṇi kiṇi	kuṇu kuṇu	cara cara

---

1. 'स्वाहा' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

ཙི་རི་ཙི་རི། ཙུ་རུ་ཙུ་རུ། ཨིནྡྲིཡ་བལ་བོདྷྱངྒ།

चिरि चिरि चुरु चुरु इन्द्रिय-बल-बोध्यङ्ग

ciri ciri curu curu indriya bala bodhyaṅga

(དབང་པོ་སྟོབས་དང་བྱང་ཆུབ་ཡན་ལག་དང་།)

ཙཏུར་ཨཱརྻ་སཏྱ་སཾཔྲཀཱཤཀ། ཏཔ་ཏཔ། ཏམ་ཏམ།

चतुरार्यसत्यसंप्रकाशक [1]तप तप तम तम

caturāryasatyasaṃprakāśaka tapa tapa tama tama

(འཕགས་པའི་བདེན་བཞི་ཀུན་ནས་གསལ་མཛད་པ།)

དམ་དམ། སམ་སམ། མས་མས། དྷམ་དྷམ།

[2]दम दम [3]सम सम [4]मस मस धम धम

dama dama sama sama masa masa dhama dhama

མཧཱ་ཀཱརུཎིཀ། མཧཱ་ཏམོ་ཨནྡྷཀཱར་བིདྷམན། ཥཊྤཱརམིཏཱ་པརིཔཱུརཀ།

महाकारुणिक महातमोऽन्धकारविधमन षट्पारमितापरिपूरक

mahākāruṇika mahātamondhakāravidhamana ṣaṭpāramitāparipūraka

(ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་ཞིང་། མུན་པ་མུན་ནག་ཆེན་པོ་འཇོམས། ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་ཡོངས་རྫོགས་པ།)

མལ་མལ། མི་ལི་མི་ལི། མུ་ལུ་མུ་ལུ། ཊ་ཊ་ཊ་ཊ།

मल मल मिलि मिलि मुलु मुलु टट टट

mala mala mili mili mulu mulu ṭaṭa ṭaṭa

---

1. 'तप तप' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. रभ रभ- तत्रैव
3. मस मस- तत्रैव
4. दम दम- तत्रैव

ཋཋ་ཋཋ།	ཊིཊི་ཊིཊི།	ཋིཋི་ཋིཋི།	ཊུཊུ་ཊུཊུ།	ཋུཋུ་ཋུཋུ།
ठठ ठठ	टिटि टिटि	ठिठि ठिठि	टुटु टुटु	ठुठु ठुठु
ṭhaṭha ṭhaṭha	ṭiṭi ṭiṭi	ṭhiṭhi ṭhiṭhi	ṭuṭu ṭuṭu	ṭhuṭhu ṭhuṭhu

ཨེཎེ[ཎེ]ཡ་ཙརྨ་ཀྲྀད་པརིཀར། ཨེཧི་ཨེཧི་མཧཱ་ཀཱརུཎིཀ།

एणेयचर्मकृतपरिकर एहि एहि महाकारुणिक

eṇeyacarmakṛtaparikara ehi ehi mahākāruṇika

(རི་དྭགས་ལྤགས་པ་ལས་བྱས་ཡོ་བྱད་ཅན། །ཚུར་སྤྱོན་[བྱོན་]ཚུར་སྤྱོན་[བྱོན་]ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་ཅན། །)

ཨཱིཤྭར་མཧེཤྭར་མཧཱ་བྷཱུཏ་གཎ་སཾབྷཉྫཀ།

ईश्वर महेश्वर महाभूतगण संभञ्जक

īśvara maheśvara mahābhūtagaṇa saṃbhañjaka

(དབང་ཕྱུག་དབང་ཕྱུག་ཆེན་[1]པོ་འབྱུང་པོའི། །ཚོགས་ཆེན་ཀུན་ནས་འཇོམས་པར་མཛད་པ་པོ། །)

ཀར་ཀར།	ཀིརི་ཀིརི།	ཀུརུ་ཀུརུ།	པར་པར།
कर कर	किरि किरि	कुरु कुरु	[2]पर पर
kara kara	kiri kiri	kuru kuru	para para
ཧར་ཧར།	ཝར་ཝར།	སར་སར།	ཀར་ཀར།
हर हर	वर वर	सर सर	कर कर
hara hara	vara vara	sara sara	kara kara
ཀཊ་ཀཊ།	ཀིཊི་ཀིཊི།	ཀུཊུ་ཀུཊུ།	མཊ་མཊ།
कट कट	किटि किटि	कुटु कुटु	मट मट
kaṭa kaṭa	kiṭi kiṭi	kuṭu kuṭu	maṭa maṭā

---

1. ཅན་- ख.
2. धर धर- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

མཧཱ་བི་ཤུདྡྷ་བི་ཥ་ཡ་ནི་བཱ་སི་ན། མཧཱ་ཀཱ་རུ་ཎི་ཀ།

महाविशुद्धविषयनिवासिन महाकारुणिक[1]

mahāviśuddhaviṣayanivāsina mahākāruṇika

(རྣམ་དག་ཆེན་པོའི་ཡུལ་ལ་ངེས་གནས་པ། །ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྡན།)

(सप्तपरिवारमन्त्रः = **Saptaparivāra-mantraḥ**)

ཤྭེ་ཏ་ཡཛྙོ་པ་བཱི་ཏ། ར་ཏྣ་མུ་ཀུ་ཊ་མཱ་ལཱ་དྷ་ར། སརྦཛྙ་ཤི་ར་སི་ཀྲི་ཏ་ཛ་ཊཱ་མུ་ཀུ་ཊ།

श्वेतयज्ञोपवीत रत्नमुकुटमालाधर सर्वज्ञशिरसिकृतजटामुकुट

śvetayajñopavīta ratnamukuṭamālādhara sarvajñaśirasikṛtajaṭāmukuṭa

(ཚངས་སྐུད་དཀར་པོ་དང་། རིན་ཆེན་ཅོད་པན་ཕྲེང་བ་འཛིན་པ་པོ། །ཀུན་མཁྱེན་དབུར་བཞུགས་རལ་པའི་ཅོད་པན་ཅན། །)

མཧཱདྦྷུ་ཏ་ཀ་མ་ལ་ཨ་ལཾ་ཀྲི་ཏ་ཀ་ར་ཏ་ལ། དྷྱཱ་ན་ས་མཱ་དྷི་བི་མོཀྵ་ཨ་པྲ་ཀམྤྱ།

[2]महाद्धुत(महोद्भूत)कमल–अलंकृतकरतल ध्यानसमाधिविमोक्ष–[3]अप्रकम्प्य

mahodbhūtakamala-alaṃkṛtakaratala dhyānasamādhivimokṣa aprakaṃpya

(མད་བྱུང་པདྨ་ཆེན་པོས་ཕྱག་མཐིལ་བརྒྱན། །བསམ་གཏན་ཏིང་འཛིན་རྣམ་ཐར་མི་གཡོ་ལྡན། །)

བ་ཧུ་ས་ཏྭ་ས་ནྟ་ཏི་པ་རི་པཱ་ཙ་ཀ། མཧཱ་ཀཱ་རུ་ཎི་ཀ།

बहुसत्त्वसन्ततिपरि[4]पाचक महाकारुणिक

bahusattvasantatiparipācaka mahākāruṇika

(སེམས་ཅན་མང་པོའི་རྒྱུད་ནི་ཡོངས་སྨིན་མཛད། །ཐུགས་རྗེ་ཆེ་ལྡན།)

---

1. 'सप्तपरिवारमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. महोद्भूत- तत्रैव
3. प्रकम्प्य- तत्रैव
4. ०पालक- तत्रैव

སརྦ་ཀརྨ་ཨཱ་བ་རཎ་བི་ཤོ་དྷ་ཀ།
सर्वकर्मावरणविशोधक
sarvakarmāvaraṇaviśodhaka
(ལས་སྒྲིབ་ཀུན་སྦྱོང་བ།

སརྦཛྙ་ཛྙཱན་པ་རི་པཱུ་ར་ཀ།
सर्वज्ञज्ञानपरिपूरक
sarvajñajñānaparipūraka
ཐམས་ཅད་མཁྱེན་པའི་ཡེ་ཤེས་ཡོངས་རྫོགས་པ། །)

སརྦ་བྱཱདྷི་པ་རི་མོ་ཙ་ཀ།
सर्वव्याधि[1]परिमोचक
sarvavyādhiparimocaka
(ནད་རྣམས་ཀུན་ལས་ཡོངས་སུ་གྲོལ་མཛད་པ།

སརྦ་སཏྭ་ཨཱ་ཤཱ་པ་རི་པཱུ་ར་ཀ།
सर्वसत्त्वाशापरिपूरक
sarvasattvāśāparipūraka
།སེམས་ཅན་ཀུན་གྱི་བསམ་པ་ཡོངས་རྫོགས་མཛད། །)

སརྦ་སཏྭ་སམཱཤྭཱསནཀར་ནམོསྟུ་ཏེ་སྭཱཧཱ།
सर्वसत्त्वसमाश्वासनकर नमोऽस्तु ते स्वाहा।
sarvasattvasamāśvāsanakara namo'stu te svāhā.
(འགྲོ་ཀུན་དབུགས་འབྱིན་མཛད་པ་ཁྱོད་ཕྱག་འཚལ་སྭཱཧཱ།)

ཨམོ་གྷཱཡ་སྭཱཧཱ།
अमोघाय स्वाहा।
Amoghāya svāhā.
(དོན་ཡོད་ལ་སྭཱཧཱ།

ཨམོ་གྷ་པཱཤཱཡ་སྭཱཧཱ།
अमोघपाशाय स्वाहा।[2]
Amoghapāśāya svāhā.
དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ལ་སྭཱཧཱ།)

(हासमन्त्रः = **Hāsa-mantraḥ**)

ཨ་ཛི་ཏཱཡ་སྭཱཧཱ།
अजिताय स्वाहा।
Ajitāya svāhā.
(མ་ཕམ་པ།

ཨ་པ་རཱ་ཛི་ཏཱཡ་སྭཱཧཱ།
अपराजिताय स्वाहा।
Aparājitāya svāhā.
གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པ་ལ།)

---

1. विमोचक- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. 'हासमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव

ཨམིཏཱབྷཱཡ་སྭཱཧཱ།
अमिताभाय स्वाहा।
Amitābhāya svāhā.
(འོད་དཔག་མེད་ལ།

ཨམིཏཱབྷ་སུཏཱཡ་སྭཱཧཱ།
अमिताभसुताय स्वाहा।
Amitābhasutāya svāhā.
འོད་དཔག་མེད་ཀྱི་སྲས་ལ།)

མཱར་སཻནྱ་པྲམརྡནཱཡ་སྭཱཧཱ།
मारसैन्यप्रमर्दनाय स्वाहा।
Mārasainyapramardanāya svāhā.
(བདུད་ཀྱི་དཔུང་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་ལ།

ཨབྷཡཱཡ་སྭཱཧཱ།
[1]अभयाय स्वाहा।
Abhayāya svāhā.
མི་འཇིགས་པ་ལ།)

ཨབྷཡ་པྲདཱཡ་སྭཱཧཱ།
अभयप्रदाय स्वाहा।
Abhayapradāya svāhā.
(མི་འཇིགས་པ་རབ་ཏུ་སྦྱིན་པ་ལ།

ཛཡཱཡ་སྭཱཧཱ།
जयाय स्वाहा।
Jayāya svāhā.
རྒྱལ་བ་ལ།)

བིཛཡཱཡ་སྭཱཧཱ།
विजयाय स्वाहा।
Vijayāya svāhā.
(རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ལ།

ཛཡ་བིཛཡཱཡ་སྭཱཧཱ།
जयविजयाय स्वाहा।
Jayavijayāya svāhā.
རྒྱལ་ཞིང་རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་ལ།)

བརདཱཡ་སྭཱཧཱ།
वरदाय स्वाहा।
Varadāya svāhā.
(མཆོག་སྦྱིན་པ་ལ།

བར་པྲདཱཡ་སྭཱཧཱ།
वरप्रदाय स्वाहा।
Varapradāya svāhā.
མཆོག་རབ་ཏུ་སྦྱིན་པ་ལ།)

---

1. 'अभयाय स्वाहा' नास्ति- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)

ཨཀཱལ་མྲིཏྱུ་པྲཤམནཱཡ་སྭཱཧཱ།
अकालमृत्युप्रशमनाय स्वाहा।
Akālamṛtyupraśamanāya svāhā.
(དུས་མ་ཡིན་པའི་འཆི་བ་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པ་ལ།

ཨིདཉྩ་མེ་ཀརྨ་ཀུ་རུ་ནམོསྟུ་ཏེ་སྭཱཧཱ།
इदञ्च मे कर्म कुरु नमोऽस्तु ते स्वाहा।[1]
Idañca me karma kuru namo'stu te svāhā.
བདག་གི་ལས་འདི་ཡང་མཛོད་ཅིག་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྭཱཧཱ།།)

(हृदयमन्त्रः = **Hṛdaya-mantramḥ**)

ཨོཾ་རཎ་རཎ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།
ॐ रण रण हूँ फट् स्वाहा।
Oṃ raṇa raṇa hūṃ phaṭ svāhā.

ཨོཾ་ཛཡ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།
ॐ जय हूँ फट् स्वाहा।
Oṃ jaya hūṃ phaṭ svāhā.
(རྒྱལ་བ།)

ཨོཾ་ཛྲ་ཛི་ཛུཾ་སྭཱཧཱ།
[2]ॐ ज्र जि जुं स्वाहा।
Oṃ jra ji juṃ svāhā.

ཨོཾ་ཧཱུྃ་ཛཡ་སྭཱཧཱ།
ॐ [3]हूँ जय स्वाहा।
Oṃ hūṃ jaya svāhā.
(རྒྱལ་བ།)

ཨོཾ་ཧྲཱིཿ་ཏྲཻལོཀྱ་བིཛཡ་ཨམོགྷ་པཱཤ་ཨཔྲཏིཧཏ་ཧྲཱིཿ་ཧཿ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།
ॐ [4]ह्रीः त्रैलोक्यविजय अमोघपाश [5]अप्रतिहत ह्रीः हः हूँ फट् स्वाहा।
Oṃ hrīḥ trailokyavijaya amoghapāśa apratihata hrīḥ haḥ hūṃ phaṭ svāhā.
(འཇིག་རྟེན་གསུམ་ལས་རྣམ་རྒྱལ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཐོགས་པ་མེད་པ།)

(उपहृदयमन्त्रः = **Upahṛdaya-mantraḥ**)

---

1. 'हृदयमन्त्रम्' इत्यधिकम्- आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक- ४८a-५३b)
2. ॐ पूजिताय हूँ फट्- तत्रैव
3. जय हूँ स्वाहा- तत्रैव
4. ह्रीं:- तत्रैव
5. प्रतिहत ह्रीं: हः हूँ फट् स्वाहा। उपहृदयमन्त्रः- तत्रैव

ཨོཾ་བསུབདི་སྭཱཧཱ།
ॐ वसुवति स्वाहा।
Oṃ vasuvati svāhā.
(དགྲིག་དང་ལྡན་པ།

ཨཱོཾ་ཨཱརོལིཀ྄་སྭཱཧཱ།
ॐ आरोलिक् स्वाहा।
Oṃ Ārolik svāhā.
འཁོར་བ་འཇིག)

ཨོཾ་བཧུལེ་བཧུལེ་སྭཱཧཱ།
ॐ बहुले बहुले स्वाहा।
Oṃ bahule bahule svāhā.
(མང་འཛིན་མང་འཛིན།)

ཨཱོཾ་ཨཱརོལིཀ྄་ཧྲཱིཿཧྲཱིཿཧཱུྃ་ཕཊ྄་སྭཱཧཱ།
ॐ आरोलिक् [1]ह्रीः ह्रीः हूँ फट् स्वाहा।
Oṃ Ārolik hrīḥ hrīḥ hūṃ phaṭ svāhā

ནིཡཏ་ཨནིཡཏ་བེདནཱིཡ་ཨཤུབྷསྱ་མེ་བྷགབཱ[བ]ན྄་ཀརྨཎོ་ཨཤེཥཏཿཀྵཡཾ་ཀུརུ་སྭཱཧཱ།
नियत–अनियत–वेदनीय–अशुभस्य मे भगवन् कर्मणो अशेषतः [2]क्षयं कुरु स्वाहा।
Niyata-aniyata-vedanīya-aśubhasya me bhagvan kramaṇo aśeṣataḥ kṣayaṃ kuru svāhā.
(བཅོམ་ལྡན་འདས་བདག་གི་མི་དགེ་བའི་ལས་མྱོང་བར་ངེས་པ་དང་མ་ངེས་པ་མ་ལུས་པ་ཟད་པར་མཛོད་ཅིག་སྭཱཧཱ།།)

ཨོཾ་པདྨ་ཧསྟཱཡ་སྭཱཧཱ།
ॐ पद्महस्ताय स्वाहा।
Oṃ padmahastāya svāhā.
(ཕྱག་ན་པདྨ་ལ་སྭཱཧཱ།

ཨོཾ་བུདྡྷ་དྷརྨ་སཾགྷཱཡ་སྭཱཧཱ།།
ॐ बुद्धधर्मसंघाय स्वाहा।
Oṃ buddhadharmasaṃghāya svāhā.
ཨོཾ་སངས་རྒྱས་དང་ཆོས་དང་དགེ་འདུན་ལ་སྭཱཧཱ།། །།)

འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་གཟུངས་རྫོགས་སོ།། །།



1. ह्रीँः हूँ फट् स्वाहा।– आर्यामोघपाशनामहृदयं महायानसूत्रम् (धा० सं०, पत्रांक– ४८a–५३b)
2. परिक्षयं – तत्रैव

(5) ༄ བཅུ་གཅིག་ཞལ་གྱི་གཟུངས།

([1]एकादशाननधारणी = Ekādaśānanadhāraṇī)

ནམོ་རཏྣ་ཏྲཡཱཡ།

[2]नमो रत्नत्रयाय।

Namo-ratnatrayāya.

(དཀོན་ཅོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ནམ་ཨཱརྻ་ཛྙཱན་སཱགར་བཻརོཙན་བྱཱུཧ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ །

नम आर्यज्ञानसागरवैरोचनव्यूह[3]राजाय तथागताय।

Nama Āryajñānasāgaravairocanavyūharājāya tathāgatāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འཕགས་པ་ཡེ་ཤེས་རྒྱ་མཚོ་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་བཀོད་པའི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ༎)

ནམཿ་སརྦ་ཏཐཱགཏེབྷྱཿ་ཨརྷདྦྷྱཿ་སམྱཀ་སཾབུདྡྷེབྷྱོ།

नमः सर्वतथागतेभ्यः अर्हद्भ्यः सम्यक्संबुद्धेभ्यः।

Namaḥ sarvatathāgatebhyaḥ arhadbhyaḥ samyaksaṃbuddhebhyḥ.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ནམ་ཨཱརྻ་ཨཝལོཀིཏེཤྭརཱཡ། བོདྷི་སཏྭཱཡ། མཧཱ་སཏྭཱཡ། མཧཱ་ཀཱརུཎིཀཱཡ།

नम आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय।

Nama āryāvalokiteśvarāya bodhisattvāya mahāsattvāya mahākāruṇikāya

(བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

---

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी' (पत्रांक- ५४a) तथा 'आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी' (पत्रांक- २४४a) शीर्षक से उपलब्ध है।
2. 'ॐ नमो रत्नत्रयाय'- आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी(धा० सं०, पत्रांक- २४४a); ॐ नम आर्यावलोकितेश्वराय- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a)
3. ०राजतथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a); ०राजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय- आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी(पत्रांक- २४४a)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་དྷར་དྷར། དྷིརི་དྷིརི། དྷུརུ་དྷུརུ། [1]ཨེཊྚེ་བཊྚེ། ཙལེ་ཙལེ།
तद्यथा- ॐ धर धर धिरि धिरि धुरु धुरु एट्टे वट्टे [2]चले चले
Tdyathā- Oṃ dhara dhara dhiri dhiri dhuru dhuru eṭṭe vaṭṭe cale cale
(འདི་ལྟ་སྟེ།)

པྲཙལེ་པྲཙལེ། ཀུསུམེ་ཀུསུམབརེ། ཨིལི་མིལི། ཙིཏི་ཛྭལམཱཔནཡ་(མཔནཡེ་)སྭཱཧཱ།།
[3]प्रचले प्रचले [4]कुसुमे कुसुमवरे इलि मिलि [5]चितिज्वलमपनये स्वाहा।
pracale pracale kusume kusumavare ili mili citijvalamapanaye svāhā.
(མི་རྟོག་མ། མི་རྟོག་མཆོག་མ། མཛེའི་ནད་སེལ་བ་གཞི་ཚུགས།། ༎)

•

(6) ༄ ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་དག་གི་གཟུངས།
(शीलविशुद्धिधारणी = Śīlaviśuddhidhāraṇī)

ཨོཾ་ཨམོགྷ་ཤཱིལ་སཾབྷར། བྷར་བྷར། མཧཱ་ཤུདྡྷ་སཏྭ།
ॐ अमोघशीलसंभर भर भर महाशुद्धसत्त्व
Oṃ amoghaśīlasaṃbhara bhara bhara mahāśuddhasattva
(དོན་ཡོད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཚོགས། རྒྱས་པ་རྒྱས་པ། སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེན་པོ།)

པདྨ་བིབྷཱུཥིཏ་བྷུཛ། དྷར་དྷར། སམནྟ་ཨབལོཀིཏེ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།
पद्मविभूषितभुज धर धर समन्त-अवलोकिते हूँ फट्।
padmavibhūṣitabhuja dhara dhara samanta-avalokite hūṃ phaṭ.
(པདྨས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པའི་ཕྱག། འཛིན་པ་འཛིན་པ། ཀུན་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས།། ༎)

•

---

1. ཨེཊྚེ་-क.
2. चल चल- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a)
3. प्रचर(ल) प्रचर(ल)- तत्रैव
4. कुसुमे कुसुमचले- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५४a), कुसुम कुसमवरे आर्यसर्वलोकेश्वरधारणी(पत्रांक- २४४a)
5. चित्ताज्वालन(म)पनये- आर्यसहस्रभुजलोकेश्वरधारणी (पत्रांक-५४a),चितिज्वालन(म)पनये आर्य सर्वलोकेश्वरधारणी(धा० सं०, पत्रांक- २४४a)

(7) ༀ གཙུག་ཏོར་རྣམ་རྒྱལ་མའི་གཟུངས།

([1]उष्णीषविजयाधारणी = Uṣṇīṣavijayādhāraṇī)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགཝཏེ་སརྦ་ཏྲཻལོཀྱ་པྲཏི་བིཤིཥྚཱཡ། བུདྡྷཱཡ་ཏེ་ནམཿ།

ॐ नमो भगवते सर्वत्रैलोक्यप्रतिविशिष्टाय। बुद्धाय ते नमः।

Oṃ namo bhagavate sarvatrailokyaprativiśiṣṭāya. buddhāya te namaḥ.

(ཨོཾ་ཁམས་གསུམ་ཀུན་ལས་ཁྱད་[པར་དུ]།འཕགས་པའི་(?)བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སངས་རྒྱས་ཁྱོད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་བྷྲཱུཾ་བྷྲཱུཾ་བྷྲཱུཾ། ཤོདྷཡ་ཤོདྷཡ། བིཤོདྷཡ་བིཤོདྷཡ།

तद्यथा- ॐ भ्रूं भ्रूं भ्रूं शोधय शोधय विशोधय विशोधय

Tadyathā- Oṃ bhrūṃ bhrūṃ bhrūṃ śodhaya śodhaya viśodhaya viśodhaya

(དེ་ལྟ་སྟེ། སྦྱོངས་སྦྱོངས། རྣམ་སྦྱོངས་རྣམ་པར་སྦྱོངས།)

ཨསམ་སམནྟཱ་ཨབྷཱས་སྥརཎ་གཏི་གགན་སྭབྷཱབ་བིཤུདྡྷེ།

असमसमन्तावभासस्फरणगतिगगनस्वभावविशुद्धे[2] (उष्णीषविजयापरिशुद्धे)

asamasamantāvabhāsaspharaṇagatigaganasvabhāvaviśuddhe (uṣṇīṣavijayā-pariśuddhe)

(མཉམ་མེད་ཀུན་ནས་འོད་འཕྲོའི་གནས། །ནམ་མཁའི་རང་བཞིན་རྣམ་དག་མ། །)

---

1. प्रस्तुत धारणी 'आर्योष्णीषविजयानामधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- १४५b-१४७a) शीर्षक के अन्तर्गत पत्रांक १४६a-१४६b में वर्णित है। यद्यपि अन्त में वर्णित 'ॐ भ्रूँ स्वाहा-----सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा' तक का मन्त्र उपलब्ध नहीं है।
इस धारणी का प्रारम्भ ॐ नमो भगवते आर्य-उष्णीषविजयायै के पश्चात् 'एवं मया श्रुतम्' से हुआ है और अन्त में इस धारणी की पूजा-पाठ विधान एवं फल आदि का वर्णन है।
2. 'उष्णीषविजयापरिशुद्धे' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)

ཨབྷིཥིཉྩནྟུ་མཱཾ།
अभिषिञ्चन्तु मां
abhiṣiñcantu māṃ.
(བདག་ལ་མངོན་པར་དབང་བསྐུར་གསོལ།

སཪྦ་ཏཐཱགཏཱཿ།
सर्वतथागताः
sarvatathāgatāḥ
།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་དང་॥)

སུགད་པྲབཙན་
सुगत[1]प्रवचन-
sugatapravacana
(བདེ་བར་གཤེགས་པའི་གསུང་རབ་ཀྱི།

ཨམྲྀད་ཨབྷིཥེཀཻཿ །
अमृत-अभिषेकैः
amṛta-abhiṣekai
།བདུད་རྩིའི་མངོན་པར་དབང་བསྐུར་དང་॥)

མཧཱ་མུདྲཱ་མནྟྲ་པདཻཿ[2]།
महामुद्रामन्त्रपदैः
mahāmudrāmantrapadaiḥ
(ཕྱག་ཆེན་སྔགས་ཀྱི་ཚིག་རྣམས་ཀྱིས།

ཨཱཧར་ཨཱཧར།
[3](ॐ) आहर आहर
āhara āhara
།ཀུན་བསྡུས་ཀུན་ནས་བསྡུ་བར་མཛོད॥)

མམ་ཨཱཡུསྶཾདྷཱརཎི།
[4]मम आयुस्संधारणि
mama āyussaṃdhāraṇi
(བདག་གི་ཚེ་ནི་ཀུན་འཛིན་མ།

ཤོདྷཡ་ཤོདྷཡ།
शोधय शोधय
śodhaya śodhaya
།སྦྱོངས་སྦྱོངས།)

བིཤོདྷཡ་བིཤོདྷཡ།
विशोधय विशोधय
viśodhaya viśodhaya
(རྣམ་སྦྱོངས་རྣམ་པར་སྦྱོངས།

གགན་སྭབྷཱབ་བིཤུདྡྷེ།
गगनस्वभावविशुद्धे
gaganasvabhāvaviśuddhe
རྣམ་མཁའི་རང་བཞིན་རྣམ་དག་མ།)

---

1. वरवचन- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. པདཿ- ख.
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
4. 'मम' नास्ति- तत्रैव

ཨུཥྞཱིཥ་བིཛཡ་པརིཤུདྡྷེ།
उष्णीषविजय(या)परिशुद्धे
uṣṇīṣavijaya(yā)pariśuddhe
(གཙུག་ཏོར་རྣམ་རྒྱལ་ཡོངས་དག་མ།

སཧསྲ་རཤྨི་སཉྩོདིཏེ།
सहस्ररश्मिसञ्चोदिते
sahasraraśmisañcodite
།འོད་ཟེར་སྟོང་ཕྲག་ཀུན་འགྱེད་མ།།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨབལོཀིནི།
सर्वतथागत[1]-अवलोकिनि
sarvatathāgata-avalokini
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གཟིགས་མ།

ཥཊྤཱརམིཏཱ་པརིཔཱུརཎི།
षट्पारमितापरि[2]पूर(रि)णि
ṣaṭpāramitāparipūra(ri)ṇi
།ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་ཡོངས་རྫོགས་མ།།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་མཱཏེ།
सर्वतथागत[3]माते
sarvatathāgatamāte
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་ཡུམ།

དཤ་བྷཱུམི་པྲཏིཥྛིཏེ།
दशभूमिप्रतिष्ठिते
daśabhūmipratiṣṭhite-
།ས་བཅུ་ལ་ནི་རབ་གནས་མ།།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲིདཡ་ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛིཏེ། མུདྲེ་མུདྲེ་མཧཱ་མུདྲེ།
सर्वतथागतहृदय-अधिष्ठान-अधिष्ठिते। [4](ॐ) मुद्रे मुद्रे महामुद्रे
sarvatathāgatahṛdaya-adhiṣṭhānādhiṣṭhite mudre mudre mahāmudre
(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་སྙིང་པོ་ཡི། །བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་བྱིན་རླབས་མ། །ཕྱག་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེ། །)

བཛྲ་ཀཱཡ་སཾཧཏན་པརིཤུདྡྷེ།
वज्रकाय[5]संहतनपरिशुद्धे
vajrakāyasaṃhatanapariśuddhe
(རྡོ་རྗེའི་སྐུར་བསྡུན་ཡོངས་དག་མ།

སརྦ་ཀརྨ་ཨཱབརཎ་བིཤུདྡྷེ།
सर्वकर्म-आवरणविशुद्धे
sarvakarma-āvaraṇaviśuddhe
།ལས་སྒྲིབ་ཐམས་ཅད་རྣམ་དག་མ། །)

---

1. ०तोऽवलोकिते- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. ०पूरिणि- तत्रैव
3. 'माते' नास्ति- तत्रैव
4. ॐ मुनि मुनि महामुद्रा- तत्रैव
5. ०संहतेन संपरिशुद्धे- तत्रैव

པྲ་ཏི་ནི་ཝརྟ་ཡ་མ་མ་ཨཱ་ཡུར་བི་ཤུདྡྷེ།
प्रतिनिवर्तय मम आयुर्विशुद्धे
pratinivartaya mama āyurviśuddhe

སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་ས་མ་ཡ་ཨ་དྷིཥྛཱ་ན་ཨ་དྷིཥྛི་ཏེ།
सर्वतथागतसमय-अधिष्ठान-अधिष्ठिते
sarvatathāgatasamaya-adhiṣṭḷāna-adhiṣṭhite

(སླར་ཡང་ཚུར་མཛོད་བདག་གི་ཚེ། །རྣམ་དག་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི། །དམ་ཚིག་བྱིན་རླབས་བྱིན་བརླབས་མ།།)

ཨོཾ་མུ་ནི་མུ་ནི་མ་ཧཱ་མུ་ནི།
ॐ मुनि मुनि महामुनि
Oṃ muni muni mahāmuni
(ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་ཆེ།

བི་མུ་ནི་བི་མུ་ནི་མ་ཧཱ་བི་མུ་ནི།
विमुनि [1]विमुनि महाविमुनि
vimuni vimuni mahāvimuni
།རྣམ་ཐུབ་རྣམ་ཐུབ་རྣམ་ཐུབ་ཆེ།།)

མ་ཏི་མ་ཏི་མ་ཧཱ་མ་ཏི།
मति मति महामति
mati mati mahāmati
(བློ་གྲོས་བློ་གྲོས་བློ་གྲོས་ཆེ།

མ་མ་ཏི་སུ་མ་ཏི་ཏ་ཐཱ་ཏཱ།
ममति सुमति तथता
mamati sumati tathatā
།མཁྱེན་བློ་བློ་བཟང་དེ་བཞིན་ཉིད།།)

བྷཱུ་ཏ་ཀོ་ཊི་པ་རི་ཤུདྡྷེ།
भूतकोटिपरिशुद्धे
bhūtakoṭipariśuddhe
(ཡང་དག་མཐའ་ནི་ཡོངས་དག་མ།

བི་སྥུ་ཊ་བུདྡྷི་ཤུདྡྷེ།
[2]विस्फुटबुद्धिशुद्धे
visphuṭabuddhiśuddhe
།བློ་ནི་རྣམ་རྒྱས་དག་པ་མ།།)

ཧེ་ཧེ་ཛ་ཡ་ཛ་ཡ།
हे हे जय जय
he he jaya jaya
(ཀྱེ་ཀྱེ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་སྟེ།

བི་ཛ་ཡ་བི་ཛ་ཡ།
विजय विजय
vijaya vijaya
།རྣམ་པར་རྒྱལ་བ་རྣམ་པར་རྒྱལ།།)

---

1. 'विमुनि' नास्ति- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. विस्फुटीविशुद्धे- तत्रैव

སྨར་སྨར།
स्मर स्मर
smara smara
(དྲན་པ་དྲན་པ།

སྥར་སྥར།
[1]स्फर स्फर
sphara sphara
རྒྱས་ཤིང་རྒྱས། །)

སྥཱརཡ་སྥཱརཡ།
स्फारय स्फारय
sphāraya sphāraya
(རྒྱས་མཛོད་རྒྱས་མཛོད།

སརྦ་བུདྡྷ་ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛི་ཏེ།
सर्व[2]बुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते।
sarvabuddha-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite
སངས་རྒྱས་ནི་(?)ཀུན་གྱི་བྱིན་རླབས་བྱིན་རླབས་མ།)

ཤུདྡྷེ་ཤུདྡྷེ།
[3](ॐ) शुद्धे शुद्धे
(Oṃ) śuddhe śuddhe
(དག་ཅིང་དག་མ་སངས་རྒྱས་མ།

བུདྡྷེ་བུདྡྷེ་བཛྲེ་བཛྲེ།
बुद्धे बुद्धे वज्रे वज्रे
buddhe budhhe vajre vajre
།སངས་རྒྱས་རྡོ་རྗེ་རྡོ་རྗེ་མ། །)

མཧཱ་བཛྲེ་སུབཛྲེ།
महावज्रे [4]सुवज्रे
mahāvajre suvajre
(རྡོ་རྗེ་ཆེན་མོ་རྡོ་རྗེ་བཟང་།

བཛྲ་གརྦྷེ་ཛཡ་གརྦྷེ།
वज्रगर्भे [5]जयगर्भे
vajragarbhe jayagarbhe
།རྡོ་རྗེ་སྙིང་མ་རྒྱལ་བའི་སྙིང་། །)

བིཛཡ་གརྦྷེ།
[6]विजयगर्भे
vijayagarbhe
(རྣམ་པར་རྒྱལ་བའི་སྙིང་པོ་མ།

བཛྲ་ཛྭཱ་ལཱ་གརྦྷེ།
वज्रज्वालागर्भे
vajrajvālāgarbhe
།རྡོ་རྗེ་འབར་བའི་སྙིང་པོ་མ། །)

---

1. स्फुर स्फुर- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. सर्वमुद्रा०- तत्रैव
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- तत्रैव
4. 'सुवज्रे' नास्ति- तत्रैव
5. 'जयगर्भे' नास्ति- तत्रैव
6. 'विजयगर्भे' नास्ति- तत्रैव

བཛྲོདྦྷ་བེ།
वज्रोद्भवे
vajrodbhave
(རྡོ་རྗེ་འབྱུང་མ།

བཛྲ་སཾབྷ་བེ།
वज्रसंभवे
vajrasaṃbhave
རྡོར་འབྱུང་མ།)

བཛྲེ་བཛྲི་ཎི།
वज्रे वज्रिणि
vajre vajriṇi
(རྡོ་རྗེ་ཅན་མ་རྡོ་རྗེ་མ།

བཛྲཾ་བྷ་བ་ཏུ་མ་མ་ཤ་རཱི་རཾ།
[1]वज्रं भवतु मम शरीरम्।
vajraṃ bhavatu mama śarīram
།རྡོ་རྗེར་མཛོད་ཅིག་བདག་གི་ལུས། །)

སརྦ་སཏྭཱ་ནཱཉྩ་ཀཱ་ཡ་པ་རི་ཤུདྡྷིརྦྷ་བ་ཏུ།
सर्वसत्त्वानाञ्च काय[2]परिशुद्धिर्भवतु।

མེ་སདཱ་སརྦ་ག་ཏི་པ་རི་ཤུདྡྷིཤྩ།
[3]मे सदा सर्वगतिपरिशुद्धिश्च।

sarvasattvānāñca kāyapariśuddhirbhavatu me sadā sarvagatipariśuddhiśca
(སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་རྣམས་ཀྱི་ཡང་། །ལུས་ནི་ཡོངས་སུ་དག་པར་མཛོད། །བདག་གི་རྟོགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱང་། །རྟག་ཏུ་ཡོངས་སུ་དག་པར་མཛོད། །)

སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱཤྩ་མཱཾ
[4]सर्वतथागताश्च मां
sarvatathāgatāśca māṃ
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱིས་ཀྱང་།

ས་མཱ་ཤྭཱ་ས་ཡ་ནྟུ།
समाश्वासयन्तु।
samāśvāsayantu
།བདག་ཅག་དབུགས་དབྱུང་མཛད་དུ་གསོལ། །)

བུདྡྷྱ་བུདྡྷྱ།
[5]बुद्ध्य बुद्ध्य (ॐ बुद्धे बुद्धे)

སིདྡྷྱ་སིདྡྷྱ།
[6]सिद्ध्य सिद्ध्य (सिद्धे सिद्धे)

---

1. वज्रं भवन्तु मम सपरिवारं- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. ०परिशुद्धेर्भवन्तु- तत्रैव
3. मम सर्वदा सर्वगतिपरिशुद्धं च- तत्रैव
4. मम सर्वतथागतश्चेमां- तत्रैव
5. ॐ बुद्धे बुद्धे- तत्रैव
6. सिद्धे सिद्धे- तत्रैव

buddhya buddhya(Oṃ buddhe buddhe) siddhya siddhya (siddhe siddhe)

(སང་སང་མ། གྲུབ་གྲུབ་མ།)

བོདྷཡ་བོདྷཡ།
बोधय बोधय
bodhaya bodhaya
(རྟོགས་མཛོད་རྟོགས་མཛོད།

བིབོདྷཡ་བིབོདྷཡ།
विबोधय विबोधय
vibodhaya vibodhaya
རྣམ་རྟོགས་མཛོད་རྣམ་རྟོགས་མཛོད།)

མོཙཡ་མོཙཡ།
मोचय मोचय
mocaya mocaya
(གྲོལ་མཛོད་གྲོལ་མཛོད།

བིམོཙཡ་བིམོཙཡ།
विमोचय विमोचय
vimocaya vimocaya
རྣམ་པར་གྲོལ་མཛོད་རྣམ་གྲོལ་མཛོད།)

ཤོདྷཡ་ཤོདྷཡ།
शोधय शोधय
śodhaya śodhaya
(སྦྱོངས་སྦྱོངས།

བིཤོདྷཡ་བིཤོདྷཡ།
विशोधय विशोधय
viśodhaya viśodhaya
རྣམ་སྦྱོངས་རྣམ་པར་སྦྱོངས།)

སམནྟཱན྄ ་མོཙཡ་མོཙཡ།
समन्तान् मोचय मोचय
samantān mocaya mocaya
(ཀུན་ནས་གྲོལ་མཛོད་གྲོལ་བར་མཛོད།

སམནྟ་རཤྨི་པརི་ཤུདྡྷེ།
समन्तरश्मिपरिशुद्धे
samantaraśmipariśuddhe
།ཀུན་ནས་འོད་ཟེར་ཡོངས་དག་མ །)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲིདཡ།
सर्वतथागतहृदय-
sarvatathāgatahṛdaya
(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་སྙིང་པོ་ཡི།

ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛི་ཏེ།
अधिष्ठान-अधिष्ठिते।
adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite
།བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་བྱིན་བརླབས་མ །)

མུདྲེ་མུདྲེ་མཧཱ་མུདྲེ།
1(ॐ) मुद्रे मुद्रे महामुद्रे
mudre mudre mahāmudre
(ཕྱག་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ་ཕྱག་རྒྱ་ཆེ།

མཧཱ་མུདྲཱ་མནྟྲ་པདཻཿ་སྭཱཧཱ།
महामुद्रामन्त्र2पदैः(पदे) स्वाहा।3
mahāmudrāmantrapadaiḥ(pade) svāhā
།ཕྱག་ཆེན་གསང་སྔགས་ཚིག་རྣམས་ཀྱིས། །)

ཨོཾ་བྷྲཱུཾ་སྭཱཧཱ།
ॐ भ्रूँ स्वाहा।4
Oṃ bhrūṃ svāhā

(हृदयमन्त्रः = **Hṛdaya-mantraḥ**)

ཨོཾ་ཨམྲྀཏ་ཨཱཡུརྡདེ་སྭཱཧཱ།
ॐ अमृत-आयुर्ददे स्वाहा।5
Oṃ amṛta āyurdade svāhā
(འཆི་བ་མེད་པའི་ཚེ་སྦྱིན་མ།།)

(उपहृदयमन्त्रः = **Hṛdaya-mantraḥ**)

ཨོཾ་ཨཱཿ་ཧཱུཾ་ཧྲཱཾ་ཧྲཱིཿ་ཨཾ་ཨཿ་རཀྵ་རཀྵ་མཱཾ་སརྦ་སཏྭཱཾཤྩ་སྭཱཧཱ།།
ॐ आः हूँ ह्रां ह्रीः अं अः रक्ष रक्ष मां सर्वसत्त्वांश्च स्वाहा।
Oṃ Āḥ hūṃ hrāṃ hrīḥ aṃ aḥ rakṣa rakṣa māṃ sarvasattvāṃśca svāhā.
(བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ལ་སྲུངས་སྲུངས།། ༎)

•

---

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयानामधारणी (धा० सं०,पत्रांक- १४६a-१४६b)
2. ०पदे- तत्रैव
3. इस के बाद का मन्त्र 'आर्योष्णीषविजयानामधारणी' (धा० सं०,पत्रांक- १४५b-१४७a) में नहीं है।
4. 'हृदयमन्त्रः' इत्यधिकम्- आर्योष्णीषविजयासाधनं (साधनमाला, भाग-२), पृ० ४१८
5. 'उपहृदयमन्त्रः' इत्यधिकम्- तत्रैव

(8) ༄༅ གཙུག་ཏོར་དྲི་མེད་ཀྱི་གཟུངས་ནི།

([1]उष्णीषविमलधारणी = Uṣṇīṣavimaladhāraṇī)

ནམཿ་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ནཱཾ།

(ॐ) [2]नमः सर्वतथागतानाम्।

(Oṃ) namaḥ sarvatathāgatānām.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་ལ་ཕྱག་འཚལ། །)

ཨོཾ་མ་ཧཱ་ཙིནྟཱ་མ་ཎི་ཛྭ་ལ་ན་སཱ་ག་ར་གམྦྷཱི་ར་ཨཱ་ཀརྵ་ཡ་ཨཱ་ཀརྵ་ཡ།

ॐ महाचिन्तामणि ज्वलनसागर[3]गम्भीर आकर्षय आकर्षय

Oṃ mahācintāmaṇi jvalanasāgaragambhīra ākarṣaya ākarṣaya

(ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཆེར་འབར་བའི། །རྒྱ་མཚོ་ཟབ་མོ་འགུགས་ཤིང་འགུགས། །)

ཨཱ་ཡུརྡྷ་ར་ཨཱ་ཡུརྡྷ་ར།	སནྡྷ་ར་སནྡྷ་ར།	ཀྵ་ཎ་ཀྵ་ཎ།	ཀྵི་ཎི་ཀྵི་ཎི།
आयुं धर आयुं धर	सन्धर सन्धर	क्षण क्षण	क्षिणि क्षिणि
āyuṃ dhara dhara	sandhara sandhara	kṣaṇa kṣaṇa	kṣiṇi kṣiṇi

ཀྵུ་ཎུ་ཀྵུ་ཎུ།	སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་མ་ཧཱ་ས་མ་ཡེ་ཏིཥྛ་ཏིཥྛ།
क्षुणु क्षुणु	सर्वतथागत[4]महासमये तिष्ठ तिष्ठ
kṣuṇu kṣuṇu	sarvatathāgatamahāsamaye tiṣṭha tiṣṭha.
	(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །དམ་ཚིག་ཆེ་ལ་བརྟན་པར་གནས། །)

---

1. प्रस्तुत धारणी 'चिन्तामणिनामधारणी' नाम से धारणी संग्रह(पत्रांक- १०४b-१०५a) में उपलब्ध है। यद्यपि इसके प्रारम्भ में कुछ मन्त्र अधिक हैं, जिनको पाद-टिप्पणी में दिया जा रहा है। इसके बाद प्रस्तुत धारणी यथावत् है।
2. 'ॐ नमो रत्नत्रयाय। नमः सम्यक्संबुद्धकोटीनाम्। तद्यथा— ॐ चले चूले चूंदे महाविद्ये सत्यवादिनि वरदे कथय कथय स्वाहा। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः। क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष। ॐ' —इत्यधिकम्, चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)।
3. ०गम्भीरे- तत्रैव
4. 'महा' नास्ति- तत्रैव

མཧཱ་བྷུབན་སཱགརེ་སཾཤོདྷཡ་མཱཾ་སརྦ་སཏྭཱཾ་ཤྩ།
महाभुवनसागरे संशोधय मां सर्वसत्त्वांश्च।
mahābhuvanasāgare saṃśodhaya māṃ sarvasattvāṃśca.
(བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི །སྲིད་པའི་རྒྱ་མཚོ་ཆེ་ཀུན་སྦྱོངས། །)

བྷགཝཏི་སརྦ་པཱཔ་བིམལེ།
भगवति सर्वपापविमले
bhagavati sarvapāpavimale
(བཅོམ་ལྡན་སྡིག་ཀུན་དྲི་བྲལ་མ།

ཛཡ་ཛཡ་ཛཡ་ལབྡྷེ།
जय जय जयलब्धे
jaya jaya jayalabdhe
།རྒྱལ་ཞིང་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་ཐོབ་མ། །)

སྥུཊ་སྥུཊ།
स्फुट स्फुट
saphuṭa saphuṭa

སྥོཊཡ་སྥོཊཡ།
स्फोटय स्फोटय
saphoṭaya saphoṭaya

བིགཏ་ཨཱབརཎེ་བྷཡ་ཧརཎེ།
विगतावरणे भयहरणे
vigatāvaraṇe bhayaharaṇe
(སྒྲིབ་པ་བྲལ་མ་འཇིགས་འཕྲོག་མ།

ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་མྲྀཏྱུ་དཎྜ་དྷརེ།
हूँ हूँ हूँ मृत्युदण्डधरे
hūṃ hūṃ hūṃ mṛtyudaṇḍadhare
།འཆི་བདག་དབྱུག་པ་འཛིན་མཛད་མ། །)

ཨབྷཡ་པྲདེ་ཨུཥྞཱིཥ་བྱབ་ལོ་ཀི་ཏེ།
अभयप्रदे उष्णीषव्यवलोकिते
abhayaprade uṣṇīṣavyavalokite
(མི་འཇིགས་སྦྱིན་མ་གཙུག་ཏོར་རྣམ་གཟིགས་མ།

སམནྟ་མུ་ཁེ་སམནྟ་བྱབ་ལོ་ཀི་ཏེ།
समन्तमुखे समन्तव्यवलोकिते
samantamukhe samantavyavalokit
།ཀུན་ནས་སྒོ་མ་ཀུན་ནས་རྣམ་གཟིགས་མ། །)

མཧཱ་མཱཡེ་མཧཱ་པཱཤ་དྷརེ།
महामाये महा[1] पाशधरे

ཨམོ་གྷ་བི་མལ་ཨཱ་ཀརྵཡ་ཨཱ་ཀརྵཡ།
अमोघ[2]विमल(ले) आकर्षय आकर्षय

1. ०याते(?) धरे – चिन्तामणिनामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)
2. ०विमले– तत्रैव

mahāmāye mahāpāśadhare
(སྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞགས་པ་ཆེ་འཆང་མ།

ཨཱཀཌྜྷཡ་ཨཱཀཌྜྷཡ།
आकड्ढय आकड्ढय
ākaḍḍhaya ākaḍḍhaya

ཨིནྡྲིཡ་བིཤོདྷནི་བྷཱུཥིཏ་བྷུཛེ།
[1]इन्द्रियविशोधनि भूषितभुजे
indriyaviśodhani bhūṣitabhuje
(དབང་པོ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་ཡན་ལག་བརྒྱན།

ཛཡ་ཛཡ།
जय जय
jaya jaya
(རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ།

བུདྡྷེ་བུདྡྷེ།
[2]बुद्धे बुद्धे
buddhe buddhe
(སངས་རྒྱས་མ་སངས་རྒྱས་མ།

སཾབོདྷནི་སཾབོདྷནི།
संबोधनि संबोधनि
saṃbodhani saṃbodhani
(ཀུན་ནས་རྟོགས་བྱེད་མ་ཀུན་ནས་རྟོགས་བྱེད་མ།

amoghavimala(le) ākarṣaya ākarṣaya
།དོན་ཡོད་དྲི་བྲལ་འགུགས་ཤིང་འགུགས་མཛད་པ། །)

བྷར་བྷར་སཾབྷར་སཾབྷར།
भर भर संभर संभर
bhara bhara saṃbhara saṃbhara

མཧཱ་མུདྲཱ་བིལོ་ཀིཏེ།
महामुद्राविलोकिते
mahāmudrāvilokite
།ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་མོ་རྣམ་གཟིགས་མ། །)

སིདྡྷེ་སིདྡྷེ།
सिद्धे सिद्धे
siddhe siddhe
གྲུབ་པ་མ་གྲུབ་པ་མ།)

བོདྷནི་བོདྷནི།
बोधनि बोधनि
bodhani bodhani
རྟོགས་བྱེད་མ་རྟོགས་བྱེད་མ།)

ཤོདྷནི་ཤོདྷནི།
शोधनि शोधनि
śodhani śodhani
སྦྱོང་བྱེད་མ་སྦྱོང་བྱེད་མ།)

---

1. 'इन्द्रियविशोधनि' नास्ति- चिन्तामणिनामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- १०४b-१०५a)
2. 'बुद्धे बुद्धे' नास्ति- तत्रैव

སཾ་ཤོ་དྷ་ནི་སཾ་ཤོ་དྷ་ནི།
संशोधनि संशोधनि
saṃśodhani saṃśodhani
(ཀུན་ནས་སྦྱོང་མ་ཀུན་ནས་སྦྱོང་མ།

བི་ཤོ་དྷ་ནི་བི་ཤོ་དྷ་ནི།
विशोधनि विशोधनि
viśodhani viśodhani
རྣམ་སྦྱོང་མ་རྣམ་སྦྱོང་མ།)

ཧ་ར་ཧ་ར་མ་མ་སརྦ་པཱ་པཾ།
हर हर मम सर्वपापं
hara hara mama sarvapāpaṃ
(བདག་གི་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ཕྱོགས་ཤིག་ཕྱོགས།

སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་ཀུ་ལ་བྷུ་ཛེ།
सर्वतथागतकुलभुजे
sarvatathāgatakulabhuje
།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་རིགས་1སྐྱོང་མ།)

ས་མ་ཡ་ཏིཥྛེ་པྲ་ས་རནྟུ་མ་མ་པུཎྱཾ་བི་ན་ཤྱནྟུ་པཱ་པཾ་སརྦ་ཀི་ལྦི་ཥ་ཧ་རེ་མ་ཎི་བི་ཤུདྡྷེ།
समयतिष्ठे प्रसरन्तु मम पुण्यं विनश्यन्तु पापं सर्वकिल्विषहरे मणिविशुद्धे
samayatiṣṭhe prasarantu mama puṇyaṃ vinaśyantu pāpaṃ sarvakilviṣahare maṇiviśuddhe.
(དམ་ཚིག་གནས་མ་བདག་གི་བསོད་ནམས་ནི། །རབ་ཏུ་རྒྱས་མཛོད་སྡིག་པ་ཉམས་པར་མཛོད། །སྡིག་ཀུན་འཕྲོག་མ་ནོར་བུ་རྣམ་དག་མ། །)

ཤོ་དྷ་ཡ་བི་མ་ལེ།
शोधय विमले
śodhaya vimale
(སྦྱོངས་ཤིག་དྲི་མ་དང་བྲལ་མ།

བི་ཀ་སི་ཏ་པདྨ་ཀ་བ་ཙི་ཏ་བྷུ་ཛེ།
विकसितपद्मकवचितभुजे
vikasitapadmakavacitabhuje
།རྣམ་རྒྱས་པདྨའི་གོ་ཆ་སྐྱོང་། །)

ཥཊ་པཱ་ར་མི་ཏཱ་པ་རི་པཱུ་ར་ཎི།
षट्पारमिता परिपूरणि
ṣaṭpāramitā paripūraṇi
(ཕ་རོལ་ཕྱིན་དྲུག་ཡོངས་རྫོགས་མ།

སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏོཥྞཱི་ཥ་བི་ལོ་ཀི་ཏེ་སྭཱ་ཧཱ།
सर्वतथागतोष्णीषविलोकिते स्वाहा।
sarvatathāgatoṣṇīṣavilokite svāhā.
།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་གཙུག་ཏོར་རྣམས་གཟིགས་མ།།)

---

1. སྐྱོང་- ख.

སརྦ་ཏཐཱ་གཏ་གུཧྱ་ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛིཏེ་སྭཱཧཱ།
सर्वतथागतगुह्य-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा।
Sarvatathāgataguhya-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā.
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གསང་བ་ཡི། །བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱིས་བྱིན་བརླབས་མ།།

ཨཱཡུརྡདེ་སྭཱཧཱ།
आयुर्ददे स्वाहा।
Āyurdade svāhā.
ཚེ་སྦྱིན་མ།)

1པུཎྱ་དདེ་སྭཱཧཱ།
3पुण्य ददे स्वाहा।
Puṇya dade svāhā.
(བསོད་ནམས་སྦྱིན་མ།

2པུཎྱ་བིལོཀིཏེ་སྭཱཧཱ།
पुण्य विलोकिते स्वाहा।
Puṇya vilokite svāhā.
བསོད་ནམས་རྣམ་གཟིགས་མ།)

4པུཎྱ་ཨབལོཀིཏེ་སྭཱཧཱ།
पुण्याव5लोकिते स्वाहा।
Puṇyāvalokite svāhā.
(བསོད་ནམས་ཀུན་གཟིགས་མ།

མྲྀཏྱུ་དཎྜེ་སྭཱཧཱ།
मृत्युदण्डे स्वाहा।
Mṛtyudaṇḍe svāhā.
འཆི་བདག་དབྱུག་པ་མ།)

ཡམདཎྜེ་སྭཱཧཱ།
यमदण्डे स्वाहा।
Yamadaṇḍe svāha.
(གཤིན་རྗེ་དབྱུག་པ་མ།

6ཡམདཱུཏེ་སྭཱཧཱ།
यमदूते स्वाहा।
Yamadūte svāhā.
གཤིན་རྗེ་ཕོ་ཉ་མ།)

---

1. པུཎྻ་- क.
2. པུཎྻ་- क.
3. पुण्यं- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a)
4. པུཎྻ་- क.
5. ०रोपिते- चिंन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a)
6. ཡམདུཏེ་- ख.

སཾཧརཎི་སྭཱཧཱ།
संहरणि स्वाहा।
Saṃharaṇi svāhā.
(སྡུད་མཛད་མ།

[1]སཾབྷརཎི་སྭཱཧཱ།
संभरणि स्वाहा।
Saṃbharaṇi svāhā.
རྒྱས་མཛད་མ།)

སནྡྷཱརཎི་སྭཱཧཱ།
सन्धारणि स्वाहा।
Sandhāraṇi svāhā.
(འཛིན་མཛད་མ།

པྲཏིསརཎི་སྭཱཧཱ།
प्रति[2]सरणि स्वाहा।
Pratisaraṇi svāhā.
སོ་སོར་འབྲང་མ།)

ཨོཛོབཏི་སྭཱཧཱ།
ओजोवति स्वाहा।
Ojovati svāhā.
(མདངས་ལྡན་མ།

ཏེཛོབཏི་སྭཱཧཱ།
तेजोवति स्वाहा।
Tejovati svāhā.
གཟི་བརྗིད་ལྡན་མ།)

ཛཡབཏི་སྭཱཧཱ། སརྦ་ཏཐཱགཏ་མུདྲཱ་ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛི་ཏེ་སྭཱཧཱ།།
जयवति स्वाहा। सर्वतथागतमुद्रा-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा।
Jayavati svāhā. Sarvatathāgatamudrā-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā
(རྒྱལ་བ་ལྡན་མ། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་ཕྱག་རྒྱ་ཡི། །བྱིན་གྱི་རླབས་ཀྱི་བྱིན་བརླབས་མ།། ॥)

•

---

1. སོཾབྷབཧི་- क.
2. ०संरक्षणि- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं० पत्रांक- १०४b-१०५a)।

(9) ༈ དྲི་མེད་ཀྱི་གཟུངས་ཐུང་།

([1]लघुविमलधारणी= Laghuvimaladhāraṇī)

ཨོཾ་ནམསྟྲཻཡདྷྭིཀཱནཱཾ། སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲིདཡ་གརྦྷེ་ཛྭལ་ཛྭལ།

ॐ [2]नमस्त्रैयध्विकानाम्। सर्वतथागतहृदयगर्भे ज्वल ज्वल

Oṃ namastraiyadhvikānām. sarvatathāgatahṛdayagarbhe jvala jvala.

(དུས་གསུམ་པ་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །ཐུགས་ཀྱི་སྙིང་པོ་འབར་ཞིང་འབར། །)

དྷརྨ་དྷཱ་ཏུ་གརྦྷེ། སཾབྷར་མམ་ཨཱཡུཿ། སཾཤོདྷཡ་མམ་སརྦ་པཱཔཾ།

धर्मधातुगर्भे [3]संभर मम आयुः संशोधय मम सर्वपापं

dharmadhātugarve saṃbhara mama āyuḥ saṃṣodhaya mama sarva pāpam.

(ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་མ། །རྒྱས་པར་མཛོད་ཅིག་བདག་གི་ཚེ། །སྦྱོངས་ཤིག་བདག་གི་སྡིག་པ་ཀུན།།

སརྦ་ཏཐཱགཏ་སམནྟོཥྞཱིཥ་བིམལེ་བིཤུདྡྷེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཨཾ་བཾ་སཾ་ཛཿ་སྭཱཧཱ།། །།

सर्वतथागतसमन्तोष्णीष[4]विमले विशुद्धे हूँ हूँ हूँ [5]हूँ अं वं सं जः स्वाहा।

sarvatathāgatasamantoṣaṇīṣavimale viṣuddhe hūṃ hūṃ hūṃ hūṃ aṃ vaṃ saṃ jaḥ svāhā.

(ཀུན་ནས་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི། །གཙུག་ཏོར་དྲི་མེད་རྣམ་དག་མ། །)

•

---

1. प्रस्तुत धारणी 'चिन्तामणिनामधारणी' शीर्षक के अन्तर्गत धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १०५a) में उपलब्ध है।
2. नमस्त्रैयध्वे- चिन्तामणिनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- १०५a)
3. संहर- तत्रैव
4. ०विमलविशुद्धे- तत्रैव
5. 'हूँ' नास्ति- तत्रैव

(10) ༄༅ གསང་བ་རིང་བསྲེལ་[གྱི་གཟུངས་] ནི།

([1]गुह्यधातुधारणी = Guhyadhātudhāraṇī)

ནམསྟྲཻཡདྷྭིཀཱནཱཾ།
नमस्त्रैयध्विकानां
Namastraiyadhvikānāṃ

སརྦ་ཏཐཱགཏཱནཱཾ།
सर्वतथागतानां
sarvatathāgatānām.

(དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ཏཐཱགཏ་དྷརྨཙཀྲ་པྲཝརྟྟནེ།
[2]तथागतधर्मचक्रप्रवर्त्तने
tathāgatadharmacakrapravarttane

བཛྲ་བོདྷི་མཎྜ་ཨལཾཀཱར་ཨལཾཀྲྀཏེ།
[3]वज्रबोधिमण्ड-अलंकार-अलंकृते
vajrabodhimaṇḍa-alaṃkāra-alaṃkṛte

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཆོས་འཁོར་རབ་སྐོར་མ། ། །རྡོ་རྗེ་བྱང་ཆུབ་སྙིང་པོ་རྒྱན་གྱིས་བརྒྱན། །)

ཨོཾ་བྷུབ་བྷབཱན྄ ་བརེ་བཙཏཽ།
ॐ [4]भुव भवान् वरे वचटौ
Oṃ bhuva bhavān vare vacaṭau

ཙུལུ་ཙུལུ་དྷར་དྷར།
[5]चुलु चुलु धर धर
culu culu dhara dhara

སརྦ་ཏཐཱགཏ་དྷཱཏུ་དྷརེ།
सर्वतथागतधातुधरे
sarvatathāgatadhātudhare

པདྨ་གརྦྷེ་ཛཡ་ཝརེ་ཨཙལེ་སྨར།
[6]पद्मगर्भे जयवरे अचले स्मर
padmagarbhe jayavare acale smara

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་རིང་བསྲེལ་འཛིན། །པདྨའི་སྙིང་པོ་རྒྱལ་མཆོག་གཡོ་མེད་དྲན། །)

---

1. प्रस्तुत धारणी 'श्रीधर्मचक्रप्रवर्त्तननामधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- २२३b-२२४a) में उपलब्ध है, यद्यपि इसके अन्त में कुछ और मन्त्र हैं, जिन्हें पाद-टिप्पणी में रखा गया है।
2. 'तथागतधर्मचक्रप्रवर्त्तने' नास्ति- श्रीधर्मचक्रप्रवर्त्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
3. 'वज्रबोधिमण्डालंकारालंकृते' नास्ति- तत्रैव
4. भुवि भवन वरे वचटे- तत्रैव
5. चरु चरु- तत्रैव
6. पद्मगर्भस्ति जायवरे - तत्रैव

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨདྷིཥྛིཏེ།
[1]सर्वतथागत-अधिष्ठिते
sarvatathāgata-adhiṣṭhite
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱིས་བྱིན་བརླབས་མ།

བོདྷཡ་བོདྷཡ།
बोधय [2]बोधय
bodhaya bodhya
།རྟོགས་པར་མཛོད་རྟོགས་པར་མཛོད།)

བོདྷནི་བོདྷནི།
बोधनि [3]बोधनि
bodhani bodhani
(རྟོགས་པར་མཛད་པ་རྟོགས་པར་མཛད་པ།

བུདྡྷྱ་བུདྡྷྱ།
बुद्धय बुद्धय
buddhya buddhya
རྟོགས་པ་རྟོགས་པ།)

སཾབོདྷནི་སཾབོདྷཡ།
[4]संबोधनि संबोधय
saṃbodhani saṃbodhaya
(ཀུན་ནས་རྟོགས་པར་བྱེད་པ་རྟོགས་པར་མཛོད།

ཙལ་ཙལ་ཙལནྟུ།
चल चल चलन्तु
cala cala calantu
གཡོ་བ་གཡོ་བ་གཡོ་བར་མཛོད།)

སརྦ་ཨཱཝརཎཱནི་སརྦ་པཱཔ་བིགཏེ།
सर्वावरणानि सर्वपापविगते
sarvāvaranāni sarvapāpaṿigate
(སྒྲིབ་པ་ཀུན་དང་སྡིག་པ་ཀུན་བྲལ་མ།

ཧུརུ་ཧུརུ། སརྦ་ཤོཀ་བིགཏེ།
हुरु हुरु सर्वशोकविगते
huru huru sarvaśokavigate
མྱ་ངན་ཀུན་དང་བྲལ་མ།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲིདཡ།
सर्वतथागतहृदय

བཛྲིཎི་སཾབྷབ་སཾབྷབ།
वज्रिणि संभव संभव

---

1. तथागतधर्मचक्रप्रवर्त्तनवज्रबोधिमण्डालाकोलालंकृते (मण्डालंकारालंकृते ?)' इत्यधिकम्- श्रीधर्मचक्र-प्रवर्त्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
2. 'बोधय' नास्ति- तत्रैव
3. 'बोधनि' नास्ति- तत्रैव
4. संबोधि- तत्रैव

sarvatathāgatahṛdaya
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་སྙིང་པོ་ཡི།

vajriṇi saṃbhava saṃbhava
།རྡོ་རྗེ་ཡང་དག་འབྱུང་མ་ཀུན་འབྱུང་མ། ।)

ཏཐཱགཏ་གུཧྱ་དྷཱརཎི་མུདྲེ།
तथागतगुह्यधारणि मुद्रे
tathāgataguhyadhāraṇi mudre
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་གསང་འཛིན་ཕྱག་རྒྱ་མ།

བུདྡྷེ་སུབུདྡྷེ་སརྦ་ཏཐཱགཏ།
[1]बुद्धे सुबुद्धे सर्वतथागत-
buddhe subuddhe sarvatathāgata
།སད་ཅིང་རབ་སད་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི ।)

ཨདྷིཥྛིཏེ་དྷཱཏུ་གརྦྷེ་སྭཱཧཱ།
अधिष्ठिते धातुगर्भे स्वाहा।
adhiṣṭhite dhātugarbhe svāhā
(བྱིན་གྱིས་བརླབས་མ་རིང་བསྲེལ་སྙིང་པོ་མ།

སམཡ་ཨདྷིཥྛིཏེ་སྭཱཧཱ།
[2]समय-अधिष्ठिते स्वाहा।
samaya-adhiṣṭhite svāhā.
།དམ་ཚིག་གིས་ནི་བྱིན་བརླབས་མ།།)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཧྲྀདཡ་དྷཱཏུ་མུདྲེ་སྭཱཧཱ།
[3]सर्वतथागतहृदयधातुमुद्रे स्वाहा।
sarvatathāgatahṛdayadhātumudre

སུཔྲཏིཥྛིཏ་སྟཱུཔེ།
सुप्रतिष्ठितस्तूपे
supratiṣṭhitastūpe

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི །སྙིང་པོའི་རིང་བསྲེལ་ཕྱག་རྒྱ་མ །ལེགས་པར་རབ་གནས་མཆོད་རྟེན་ནི།།)

ཏཐཱགཏ་ཨདྷིཥྛིཏེ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་སྭཱཧཱ།
तथागत-अधिष्ठिते हूँ हूँ स्वाहा ।
tathāgata-adhiṣṭhite hūṃ hūṃ svāhā.
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་བྱིན་བརླབས་མ།

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨུཥྞཱིཥ་དྷཱཏུ་མུདྲཱཎི།
ॐ सर्वतथागत-उष्णीषधातुमुद्राणि
Oṃ sarvatathāgata-uṣṇīṣadhātu mudrāṇi
།དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གཙུག་ཏོར་རིང་བསྲེལ་ཕྱག་རྒྱ་རྣམས།།)

---

1. 'बुद्धे' इत्यधिकः- श्रीधर्मचक्रप्रवर्त्तननामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a)
2. 'समयाधिष्ठिते स्वाहा' नास्ति- तत्रैव
3. 'सर्वतथागतहृदयधातुमुद्रे स्वाहा' नास्ति- तत्रैव

སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་དྷརྨ་དྷཱ་ཏུ་བི་བྷཱུ་ཥི་ཏེ་ཨ་དྷིཥྛི་ཏེ་ཧུ་རུ་ཧུ་རུ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་སྭཱ་ཧཱ།།
सर्वतथागतधर्मधातुविभूषितेऽधिष्ठिते हुरु हुरु हूँ हूँ स्वाहा।[1]
sarvatathāgatadharmadhātuvibhūṣite adhiṣṭhite huru huru huṃ huṃ svāhā.
(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་ཆོས་དབྱིངས་རྣམ་བརྒྱན་བྱིན་བརླབས་མ།། ༎)

•

(11) ༄༅ བྱང་ཆུབ་[ཀྱི་སྙིང་པོའི་] རྒྱན་འབུམ་[གྱི་གཟུངས་] ནི།

(बोधिगर्भालङ्कारलक्षधारणी = Bodhigarbhālaṅkāralakṣadhāraṇī)

ཨོཾ་ན་མོ་བྷ་ག་བ་ཏེ་བི་པུ་ལ་བ་ད་ན་ཀཱ་ཉྩ་ནོཏྐྵིཔྟ་པྲ་བྷཱ་ས་ཀེ་ཏུ་མཱུརྡྷ་ནེ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡ།
ॐ नमो भगवते विपुलवदनकाञ्चनोत्क्षिप्तप्रभासकेतुमूर्ध्ने तथागताय।
Oṃ namo bhagavate vipulavadanakāñcanotkṣiptaprabhāsaketumūrdhne tathāgatāya.
(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམ་པར་རྒྱས་པའི་ཞལ་གསེར་བཅོམ་རབ་ཏུ་སྣང་བ་ཏོག་གི་རྩེ་མོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ན་མོ་བྷ་ག་ཝ་ཏེ་ཤཱཀྱ་མུ་ན་ཡེ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡ་ཨརྷ་ཏེ་སམྱཀྶཾ་བུདྡྷཱ་ཡ།
नमो भगवते शाक्यमुनये तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।
Namo bhagavate śākyamunaye tathāgatāya arhate samyaksaṃbuddhāya.
(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

---

1. 'श्रीधर्मचक्रप्रवर्त्तननामधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- २२३b-२२४a) में यहाँ से आगे निम्नलिखित धारणीमन्त्र अधिक हैं—
"ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा। ॐ हुरु हुरु जयमुखे स्वाहा। ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा। ॐ हुरु हुरु जयमुखे स्वाहा। ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते जय स्वाहा। ॐ हुरु हुरु हूँ हूँ स्वाहा। ॐ मणिवज्रे हूँ मणिवज्रे हूँ। ॐ मणिधरी हूँ फट्। नमः सर्वतथागतानां ॐ विपुलगर्भमणि-प्रभेदनि देहनिर्माणसुसेन विमले सागरगंभीरे हूँ हूँ ज्वल ज्वल बुद्धे बुद्धे विलोकिते गुह्याधिष्ठितगर्भ स्वाहा। ॐ मुद्‌गर जः, ॐ दण्ड हूँ, ॐ प (पाश वं), खड्ग हा(होः)। इति श्रीधर्मचक्रप्रवर्त्तननाम-धारणी समाप्ता।"

ཏདྱཐཱ། བོདྷི་བོདྷི་བོདྷི་ནི་བོདྷི་ནི། སརྦ་དཐཱ་གད་གོ་ཙ་རེ།

तद्यथा— बोधि बोधि बोधिनि बोधिनि सर्वतथागतगोचरे

tadyathā- bodhi bodhi bodhini bodhini sarvatathāgatagocare

(འདི་ལྟ་སྟེ། དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་སྤྱོད་ཡུལ་མ། །)

དྷར་དྷར་ཧར་ཧར་པྲཧར་པྲཧར་མཧཱ་བོདྷི་ཙིཏྟ་དྷརེ།

धर धर हर हर प्रहर प्रहर महाबोधिचित्तधरे

dhara dhara hara hara prahara prahara mahābodhicittadhare

(བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་སེམས་འཆང་མ། །)

ཙུ་ལུ་ཙུ་ལུ། ཤད་རཤྨི་སཉྩོ་དི་ཏེ། སརྦ་དཐཱ་གད་ཨབྷིཥིཀྟེ་གུཎེ་གུཎ་བ་དེ།

चुलु चुलु शतरश्मिसञ्चोदिते सर्वतथागत-अभिषिक्ते गुणे गुणवते

culu culu śataraśmisaṃcodite sarvatathāgata-abhiśikte guṇe guṇavate

(འོད་ཟེར་བརྒྱ་ཕྲག་ཀུན་འགྲེད་མ། །དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །དབང་བསྐུར་ཡོན་ཏན་ཡོན་ཏན་ལྡན། །)

སརྦ་བུདྡྷ་གུཎ་ཨབབྷཱ་སེ། མི་ལི་མི་ལི་གགན་ཏ་ལེ།

सर्वबुद्धगुण-अवभासे मिलि मिलि गगनतले

sarvabuddhguṇa-avabhāse mili mili gaganatale

(སངས་རྒྱས་ཀུན་གྱི་ཡོན་ཏན་འོད། །ནམ་མཁའི་མཐིལ་མ།)

སརྦ་དཐཱ་གད་ཨདྷིཥྛི་དེ་ནབྷསྟལེ། ཤམེ་ཤམེ་པྲཤམེ་པྲཤམེ་སརྦ་པཱཔཾ་པྲཤམཎ།

सर्वतथागत-अधिष्ठिते नभस्तले शमे शमे प्रशमे प्रशमे सर्वपापं प्रशमण(पापप्रशमने)

sarvatathāgata-adhiṣṭhite nabhastale śame śame praśame praśame sarva-pāpaṃ praśamaṇa(praśamane).

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས། །བྱིན་གྱིས་བརླབས་མ་མཁའ་དབྱིངས་མ། །ཞི་མ་ཞི་མ་རབ་ཞི་མ། །རབ་ཞི་སྡིག་ཀུན་རབ་ཞི་མ། །)

སརྦ་པཱཔ་བིཤོདྷནེ། ཧུལུ་ཧུལུ། མཧཱ་བོདྷི་མཱརྒ་སཾཔྲཏིཥྛིཏེ།

सर्वपापविशोधने हुलु हुलु महाबोधिमार्गसंप्रतिष्ठिते

Sarvapāpaviśodhane hulu hulu mahābodhimārgasaṃpratiṣṭhite

(སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་སྦྱོང་མ། །བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་ལམ་གནས་མ། །)

སརྦ་ཏཐཱགཏ་སུཔྲཏིཥྛིཏེ་ཤུདྡྷེ་སྭཱཧཱ།།

सर्वतथागतसुप्रतिष्ठिते शुद्धे स्वाहा।

sarvatathāgatasupratiṣṭhite śuddhe svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི། །ཤིན་ཏུ་རབ་གནས་དག་པ་མ།། །།)

•

(12) ཀྃ རྩ་སྔགས། (मूलमन्त्रः = Mūlamantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་བྱཱ་བ་ལོ་ཀི་ཏེ་སྭཱཧཱ། ཛཡ་ཛཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ सर्वतथागतव्यवलोकिते स्वाहा। जय जय स्वाहा।

Oṃ sarvatathāgatavyavalokite svāhā. jaya jaya svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་རྣམ་གཟིགས་མ།)

ཨོཾ་ཧུ་རུ་ཧུ་རུ་ཛཡ་མུ་ཁེ་སྭཱཧཱ། ཨོཾ་བཛྲ་ཨཱ་ཡུ་ཥེ་སྭཱཧཱ།།

ॐ हुरु हुरु जयमुखे स्वाहा। ॐ वज्र–आयुषे स्वाहा ।

Oṃ huru huru jayamukhe svāhā. Oṃ vajra āyuṣe svāhā.

(རྒྱལ་བའི་ཞལ་མ། རྡོ་རྗེའི་ཚེ་ལ་གཞི་ཚུགས།། །།)

ཉེ་བའི་སྙིང་པོའོ།། ।।(उपहृदयमन्त्रः = **Upahṛdayamantraḥ**)

•

(13) ༄ [1]རྟེན་འབྲེལ་སྙིང་པོ་ནི།

(प्रतीत्यसमुत्पादहृदय[मन्त्रः] = Pratītyasamutpādahṛdaya-[mantraḥ])

ཡེ་དྷརྨཱ་ཧེཏུ་པྲབྷཱཝཱ་ཧེཏུནྟེཥཱནྟཐཱགཏོ་ཧྱབདད྄།
ये धर्मा हेतुप्रभवा हेतुं तेषां तथागतो ह्यवदत्।
Ye dharmā hetuprabhavā hetuṃ teṣāṃ tathāgato hyavadat.
(ཆོས་རྣམས་ཐམས་ཅད་རྒྱུ་ལས་བྱུང་། །རྒྱུ་དེ་དེ་བཞིན་གཤེགས་པས་གསུངས།།)

ཏེཥཱཉྩ་ཡོ་ནི་རོདྷ་ཨེཝཾ་ཝཱདཱི་མཧཱ་ཤྲམཎཿ།།
तेषां च यो निरोध एवंवादी महाश्रमणः।
Teṣāṃ ca yo nirodha evaṃvādī mahāśramaṇaḥ.
(དེ་ལ་འགོག་པ་གང་ཡིན་པ། །དགེ་སྦྱོང་ཆེན་པོ་འདི་སྐད་གསུང་།། །།)

•

(14) ༄ [2]ཚེ་དང་ཡེ་ཤེས་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་གཟུངས་རིང་ནི།

([3]अपरिमितायुर्ज्ञानवृहद्धारणी = Aparimitāyurjñānavṛhaddhāraṇī)

ཨོཾ་ན་མོ་བྷ་ག་ཝ་ཏེ་ཨ་པ་རི་མི་ཏཱ་ཡུརྫྙཱ་ན་སུ་བི་ནི་ཤྩི་ཏ་ཏེ་ཛོ་རཱ་ཛཱ་ཡ། ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡ།
ཨརྷ་ཏེ་སམྱཀྶཾ་བུདྡྷཱ་ཡ།
ॐ नमो भगवते अपरिमितायुर्ज्ञानसुविनिश्चिततेजोराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।

---

1. नास्ति- क.
2. नास्ति- क.
3. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अपरिमितायुर्नाम महायानसूत्रम्' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १३१b-१३७a) में उपलब्ध है। इस का प्रारम्भ 'एवं मया श्रुतम्' से किया है तथा प्रारम्भ से अन्त तक "ॐ नमो भगवते अपरिमितायु--------------महानयपरिवारे स्वाहा।" मन्त्र को अनेकशः दुहराते हुए उपर्युक्त सूत्र को पत्रांक १३७b में समाप्त किया है।

Oṃ namo bhagavate aparimitāyurjñānasuviniścitatejorājāya tathāgatāya arhate samyaksaṃbuddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཚེ་དང་ཡེ་ཤེས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཉིད་ཏུ་རྣམ་པར་ངེས་པ་གཟི་བརྗིད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་པུཎྱེ་པུཎྱེ་མཧཱ་པུཎྱེ་ཨཔརིམིད་པུཎྱེ།

तद्यथा— [1]ॐ पुण्ये पुण्ये महापुण्ये अपरिमितपुण्ये

tadyathā- Oṃ puṇye puṇye mahāpuṇye aparamitapuṇye

(འདི་ལྟ་སྟེ། བསོད་ནམས་མ་བསོད་ནམས་མ་བསོད་ནམས་ཆེན་མོ་བསོད་ནམས་དཔག་མེད་མ།)

ཨཔརིམིད་པུཎྱ་ཛྙཱན་སཾབྷཱརོཔཙིཏེ།

[2]अपरिमितपुण्यज्ञानसंभारोपचिते

apramitapuṇyajñānasaṃbhāropacite.

(བསོད་ནམས་དང་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཚོགས་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ཉེ་བར་བསགས་མ།)

ཨོཾ་སརྦ་སཾསྐཱར་པརིཤུདྡྷ་དྷརྨཏེ་གགན་སམུདྒཏེ་སྭབྷཱབ་བིཤུདྡྷེ་མཧཱ་ནཡ་པརིབཱ་རེ་སྭཱཧཱ།།

ॐ सर्वसंस्कार[3]परिशुद्धधर्मते गगनसमुद्गते स्वभावविशुद्धे महानयपरिवारे स्वाहा।

Oṃ sarvasaṃskārapariśuddhadharmate gaganasamudgate svabhāvaviśuddhe mahānayaparivāre svāhā.

(འདུ་བྱེད་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་དག་པའི་ཆོས་ཉིད་མ། ནམ་མཁར་འཕགས་མ། རང་བཞིན་རྣམ་དག་མ། རྒྱལ་ཆེན་པོས་ཡོངས་སུ་བསྐོར་མ།། །།)

•

---

1. आर्य-अपरिमितायुर्नाम महायानसूत्रम्' (धा० सं०, पत्रांक- १३१b-१३७b) में कहीं पर "ॐ पुण्य पुण्य महापुण्य अपरिमितपुण्य" है, और कहीं पर ऊपर वर्णित "ॐ पुण्ये पुण्ये महा पुण्ये अपरि-मितपुण्ये" ही है। जैसे कि पूर्व में कहा है कि इस सूत्र में मन्त्रों को अनेक बार दुहराया गया है।
2. अपरिमितायुपुण्य०- तत्रैव
3. ०परिशुद्धे- तत्रैव

(15) ༄༅ [ཚེ་དང་ཡེ་ཤེས་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་] 1གཟུངས་ཐུང་ངོ།

(2अपरिमितायुर्ज्ञानलघुधारणी= Aparimitāyurjñānalaghudhāraṇī)

ཨོཾ་ཨམརཎི་ཛཱིབནྟཱིཡེ་སྭཱཧཱ།

ॐ अमराणि जीवन्तीये स्वाहा।

Oṃ amarāṇi jīvantīye svahā.

(འཆི་བ་མེད་པའི་སྒྲོག་ལྡན་མ་ལ།། ॥)

•

(16) ༄༅ 3ངན་སོང་སྦྱོང་བའི་རྩ་བའི་རིག་སྔགས་ནི།

(4दुर्गतिपरिशोधनमूलविद्यामन्त्रः= Durgatipariśodhanamūlavidyāmantraḥ)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགཝཏེ་སརྦ་དུརྒཏི་པརིཤོདྷན་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶཾབུདྡྷཱཡ།

ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।

Oṃ naṃo bhagavate sarvadurgatipariśodhanarājāya tathāgatāya arhạte samyak saṃbuddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ངན་སོང་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བའི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित सिद्धैकवीरमहातन्त्र के प्रथम पटल (पृ० ६) में उपलब्ध है तथा इस मन्त्र के जाप से गतायु से शतायु होने, अनेक शारीरिक रोगों के निदान और गर्भरक्षा का उपाय आदि का सविधान वर्णन किया है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनी नाम धारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ६०a) में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में ही 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनराजस्य कल्पदेशः' (पत्रांक- २२६b-२३१b) नाम से उपलब्ध धारणी में भी प्रस्तुत धारणी के अतिरिक्त विविध मन्त्र उपलब्ध हैं।

ཏདྱ་ཐཱ། ཨོཾ་ཤོ་དྷ་ནེ་ཤོ་དྷ་ནེ་སརྦ་པཱ་པ་བི་ཤོ་དྷ་ནེ་ཤུདྡྷེ་བི་ཤུདྡྷེ་སརྦ་ཀརྨ་ཨཱ་བ་ར་ཎ་བི་ཤུདྡྷེ་སྭཱཧཱ།།

तद्यथा— ॐ [1]शोधने शोधने सर्वपापविशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ śodhane śodhane sarvapāpaviśodhane śuddhe viśuddhe sarvakarmāvaraṇaviśuddhe svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། སྦྱོང་མ་སྦྱོང་མ། སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་མ། དག་ཅིང་རྣམ་པར་དག་མ། ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་དག་མ།། ‖)

•

(17) ༄ [2]མི་འཁྲུགས་པའི་གཟུངས་ནི།

([3]अक्षोभ्यधारणी = Akṣobhyadhāraṇī)

ན་མོ་རཏྣ་ཏྲ་ཡཱ་ཡ།

[4]नमो रत्नत्रयाय। (ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय तथागतायार्हते सम्यक् संबुद्धाय। तद्यथा—)

Namo ratnatrayāya.(Oṃ namo bhagavate akṣobhyāya tathāgatāyārhate samyak saṃbuddhāya. Tadyathā-)

(དཀོན་ཅོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཨོཾ་ཀཾ་ཀ་ནི་ཀཾ་ཀ་ནི།	རོ་ཙ་ནི་རོ་ཙ་ནི།	ཏྲོ་ཊ་ནི་ཏྲོ་ཊ་ནི།
ॐ कंकनि कंकनि[5]	रोचनि रोचनि	त्रोटनि त्रोटनि
Oṃ kaṃkani kaṃkani	rocani rocani	troṭani troṭani
(སྡིག་པ་རྣམས་སྡིག་པ་རྣམས།	སྣྲགས་སྣྲགས།	ཆོད་ཅིག་ཆོད་ཅིག)

1. ॐ शोधनि शोधनि सर्वपापविशोधनि०- आर्यदुर्गतिपरिशोधनी नाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)
2. नास्ति- क.
3. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी' (पत्रांक- ६०a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है।
4. 'ॐ नमो भगवते अक्षोभ्याय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा' — आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a) में अधिक है।
5. 'वाकनि वाकनि' इत्यधिकम्— तत्रैव

ཏྲཱསནི་ཏྲཱསནི། པྲཏིཧན་པྲཏིཧན།

[1]त्रासनि त्रासनि प्रतिहन प्रतिहन

trāsani trāsani pratihana pratihana

(སྐྲག་པར་གྱིས་སྐྲག་པར་གྱིས། སོ་སོར་ཚོམས་སོ་སོར་ཚོམས།)

སརྦ་ཀརྨ་པ་རཾཔ་རཱ་ཎི་མེ་སརྦ་སཏྭཱ་ནཱཉྩ་སྭཱ་ཧཱ།།

सर्वकर्मपरम्पराणि मे [2]सर्वसत्त्वानाञ्च स्वाहा।

sarvakarmaparamparāṇi me sarvasattvānāñca svāhā.

(བདག་དང་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལས་གཅིག་ནས་གཅིག་ཏུ་བརྒྱུད་པ་ཐམས་ཅད།། །།)

•

(18) ༀ དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

([3]तथागतशताक्षरम् = Tathāgataśatākṣaram)

ནམསྟྲཻཡདྷྭིཀཱནཾ་ཏཐཱགཏཱནཾ། སརྦཏྲཱཔྲཏིཧཏཱཝཱཔྟི་དྷརྨཏཱ་བལཱིནཾ།

नमस्त्रैयध्विकानां तथागतानाम्। [4]सर्वत्राप्रतिहतावाप्तिधर्मताबलीनाम्।

Namastraiyadhvikānaṃ tathāgatānām sarvatrāpratihatāvāpti dharmatā-balīnām.

(དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་པར་ཁྱབ་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་སྟོབས་རྣམས་ལ།)

---

1. संत्राशय संत्राशय- आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)
2. 'सर्वसत्त्वानां च ' नास्ति— आर्य-अक्षोभ्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०a)
3. प्रस्तुत धारणी 'शताक्षरनामधारणी' (पत्रांक- ८८b) तथा 'तथागतशताक्षर' (पत्रांक- २९५a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त पण्डित कुमुदाकरमति विरचित 'त्रिसमयराजस्य साधनम्' शीर्षक से साधनमाला, भाग-१, (पृ० २) में उपलब्ध साधन के अन्तर्गत यह धारणीमन्त्र समाविष्ट है।
4. सर्वत्रप्रतिहताव्याप्ति०- 'तथागतशताक्षर' (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); सर्वत्राप्रतिहताव्याप्ति०- शताक्षर-नामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)

ཨསམ་སམ་སམནྟཏོ་ཨནནྟཱཝཱཔྟི་ཤཱསནི། ཧར་ཧར་སྨར་སྨརཎ།
1(ॐ)2असमसमसमन्ततोऽनन्तावाप्तिशासनि 3हर हर स्मर स्मरण
Oṃ asamasamasamantato'nantāvāptiśāsani hara hara smara smaraṇa
(མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་པ་ཀུན་ནས་མཐའ་ཡས་པར་ཁྱབ་པའི་བསྟན་པ།)

ཝིགཏ་རཱག་བུདྡྷ་དྷརྨ་ཏེ། སར་སར་སམ་བལ། ཧས་ཧས། ཏྲཡ་ཏྲཡ།
विगतरागबुद्धधर्मते 4सर सर समबल(ला) हस हस 5त्रय त्रय
vigatarāgabuddhadarmate sara sara samabala(lā) hasa hasa traya traya
(འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད།)

བྷགཝན྄་མཧཱ་བར་ལཀྵཎེ། ཛྭལ་ཛྭལན་སཱགརེ་སྭཱཧཱ།།
6भगवन् महावरलक्षणे 7ज्वल ज्वलनसागरे स्वाहा।
bhagavan mahāvaralakṣaṇe jvala jvalanasāgare svāhā
(བཅོམ་ལྡན་འདས་མཚན་མཆོག་ཆེན་པོ། འབར་ཞིང་འབར་བའི་རྒྱ་མཚོ།། ༎)

•

1. 'ॐ' इत्यधिकम्- 'तथागतशताक्षर' (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
2 असमसमन्ततोऽनन्तता(वा?)सिशावामणि(शासनि?)- शताक्षरनामधारणी (पत्रांक- ८८b)
3 हर हर स्मर स्मर स्मरण- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); हर स्मर स्मरणि- तथागत-शताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a)
4 सर सर सर समबला- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); सर सर समबला- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
5 त्रस त्रस- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); त्रष(स) त्रष(स)- शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)
6 गगणमहाबल(र)लक्षण- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); गगणसदालल(वर)लक्षण-शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b); गगनमहावरलक्षणे- साधनमाला, (भाग-१) पृ० २.
7 'ज्वल' नास्ति- तथागतशताक्षर (धा० सं०, पत्रांक- २९५a); ज्वल २ न(ज्वल ज्वलन)सागरे स्वाहा-शताक्षरनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ८८b)

(19) ༄ རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

([1]वज्रसत्त्वशताक्षरम्= Vajrasattvaśatākṣaram)

ཨོཾ་བཛྲ་སཏྭ་སམཡམནུཔཱལཡ།
ॐ वज्रसत्त्व समयमनुपालय
Oṃ vajrasattva samayamanupālaya
(རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དམ་ཚིག་རྗེས་སུ་སྐྱོངས།

བཛྲ་སཏྭཏྭེནོཔཏིཥྛ།
वज्रसत्त्वत्वेनोपतिष्ठ।
vajrasattvatvenopatiṣṭha
།རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ཀྱི་ཉེར་གནས་མཛོད། །)

དྲྀཌྷོ་མེ་བྷཝ།
दृढो मे भव।
dṛḍho me bhava
(བདག་ལ་བརྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

སུཏོཥྱོ་མེ་བྷཝ།
सुतोष्यो मे भव।
sutoṣyo me bhava
།བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་དགྱེས་པར་མཛོད།།)

སུཔོཥྱོ་མེ་བྷཝ།
सुपोष्यो मे भव।
supoṣyo me bhava
(བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་མཛོད།

ཨནུརཀྟོ་མེ་བྷཝ།
अनुरक्तो मे भव।
anurakto me bhava
།བདག་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་མཛོད།།)

སརྦ་སིདྡྷིམྨེ་པྲཡཙྪ།
सर्वसिद्धिं मे प्रयच्छ।
sarvasiddhiṃ me prayaccha
(བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྩོལ།

སརྦ་ཀརྨསུ་ཙ་མེ་ཙིཏྟཾ་ཤྲེཡཿ་ཀུརུ་ཧཱུྃ།
सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेय: कुरु हूँ।
sarvakarmasu ca me cittaṃ śreyaḥ kuru hūṃ.
།ལས་ཀུན་ལ་ཡང་བདག་སེམས་ལ། །དགེ་ལེགས་སུ་མཛོད་ཧཱུྃ།)

---

1. प्रस्तुत 'वज्रसत्त्वशताक्षर' मन्त्रनय में अत्यन्त प्रसिद्ध है। ॐ से लेकर आ: तक कुल एक सौ अक्षरों से युक्त मन्त्र होने के कारण इसे शताक्षर मन्त्र कहा जाता है। यह शताक्षरमन्त्र तन्त्र के ग्रन्थों में एवं साधनों में सर्वत्र सुलभ होता है। अत: इसके पाठ भी शुद्ध रूप में प्राप्त होते हैं। विभिन्न तन्त्र ग्रन्थों के अतिरिक्त साधनमाला (भाग १-२) के अनेक साधनों में इसे देखा जा सकता है।

ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿ་བྷགབན྄་སརྦ་ཏཐཱགཏ་	བཛྲ་མཱ་མེ་མུཉྩ
ह ह ह ह होः भगवन् सर्वतथागत	वज्र मा मे मुञ्च।
ha ha ha ha hoḥ bhagavan sarvatathāgata	vajra mā me muñca
(ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿ་བཅོམ་ལྡན་དེ་བཞིན་གཤེགས་ཀུན་གྱི།	།རྡོ་རྗེར་བདག་མ་འདོར་པ།[1])
བཛྲཱི་བྷ་བ།	མཧཱ་ས་མ་ཡ་སཏྭ་ཨཱཿ།།
वज्री भव।	महासमयसत्त्व आः।
vajrī bhava	mahāsamayasattva āḥ.
(རྡོ་རྗེ་ཅན་མཛོད།	དམ་ཚིག་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཨཱཿ།། །།)

•

(20) ༄༅ ཧེ་རུ་ཀའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ།

([2]हेरुकशताक्षरम् = Herukaśatākṣaram)

ཨོཾ་བཛྲ་ཧེ་རུ་ཀ་ས་མ་ཡ་མ་ནུ་པཱ་ལ་ཡ།	ཧེ་རུ་ཀ་ཏྭེ་ནོ་པ་ཏིཥྛ།
ॐ [3]वज्रहेरुक समयमनुपालय।	[4](वज्र)हेरुकत्वेनोपतिष्ठ।
Oṃ vajraheruka samayamanupālaya	(vajra)herukatvenopatiṣṭha
(ཨོཾ་རྡོ་རྗེ་ཁྲག་འཐུང་དམ་ཚིག་རྗེས་སུ་སྐྱོངས།	།ཁྲག་འཐུང་ཉིད་ཀྱིས་ཉེ་བར་གནས་པར་མཛོད།།)
དྲྀ་ཌྷོ་མེ་བྷ་བ།	སུ་ཏོ་ཥྱོ་མེ་བྷ་བ།
दृढो मे भव।	सुतोष्यो मे भव।

---

1. འདོར་- ख.
2. प्रस्तुत धारणी 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b) के अन्तर्गत पत्रांक-२९३a से प्रारम्भ कर २९३b में समाप्त किया है। यद्यपि 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदय-समुच्चयम्' इस शीर्षक से एक ही धारणीमन्त्र परिलक्षित होता है, किन्तु इसके अन्तर्गत कुल पाँच स्वतन्त्र धारणी मन्त्र उपलब्ध होते हैं और, इन्हीं में से एक हेरुकशताक्षर भी है।
3. 'श्री' इत्यधिकम्- आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b)
4. 'वज्र' इत्यधिकम्- तत्रैव

dṛḍho me bhava
(བདག་ལ་བརྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

sutoṣyo me bhava
།བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་དགྱེས་པར་མཛོད།།)

ཨནུ་རཀྟོ་མེ་བྷཝ།
अनुरक्तो मे भव।
anurakto me bhava
(བདག་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་མཛོད།

སུ་པོ་ཥྱོ་མེ་བྷཝ།
सुपोष्यो मे भव।
supoṣyo me bhava
།བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་མཛོད།།)

སརྦ་སིདྡྷིཾ་མེ་པྲ་ཡཙྪ།
सर्वसिद्धिं मे प्रयच्छ।
sarvasiddhiṃ me prayaccha
(བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྩོལ།

སརྦ་ཀརྨ་སུ་ཙ་མེ་ཙིཏྟཾ་ཤྲི་ཡཿ་ཀུ་རུ་ཧཱུྃ།
सर्वकर्मसु [1]च मे चित्तं [2]श्रेय: कुरु हूँ।
sarvakarmasu ca me cittaṃ śreyaḥ kuru hūṃ
།ལས་ཀུན་ལ་ཡང་བདག་སེམས་ལ། །དགེ་ལེགས་སུ་མཛོད་ཧཱུྃ།)

ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿ་བྷག་ཝན་བཛྲ་ཧེ་རུ་ཀ་མཱ་མེ་མུཉྩ
ह ह ह ह हो: भगवन् वज्रहेरुक मा मे मुञ्च।
ha ha ha ha hoḥ bhagavan vajraheruka mā me muñca
(ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿབཅོམ་ལྡན་རྡོ་རྗེ་ཁྲག་འཐུང་། བདག་མ་འདོར།)

ཧེ་རུ་ཀོ་བྷཝ།
[3]हेरुको भव।
heruko bhava
(ཁྲག་འཐུང་ཉིད་དུ་མཛོད།

མཧཱ་ས་མ་ཡ་སཏྭ་ཨཱཿ་ཧཱུྃ་ཕཊ།
[4]महासमयसत्त्व आ:[5] हूँ फट्।[6]
mahāsamayasattva āḥ hūṃ phaṭ
དམ་ཚིག་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཨཱཿཧཱུྃ་ཕཊ།)

---

1. 'च' नास्ति- 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b).
2. श्रियं- तत्रैव
3. 'हेरुको भव' नास्ति- तत्रैव
4. 'हेरुक' इत्यधिक:- तत्रैव
5. यद्यपि हेरुकशताक्षर यहीं पर समाप्त हो जाना चाहिए; क्योंकि शत अक्षर यहीं पूरे हो जाते हैं।
6. इसके पश्चात् 'हितसुखश्चाकरबुद्धदेशविस्तार भव से लेकर-------मंगलं भवन्तु' पर्यन्त मन्त्र धारणी संग्रह में उपलब्ध 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' शीर्षक के अन्तर्गत हेरुकशताक्षर (पत्रांक- २९३a-२९३b) में नहीं है।

ཧིཏ་སུཁ[1]ཤྩཱཀར་བུདྡྷ་དེཤབིསྟཱར་བྷབ།
हितसुखश्चाकरबुद्धदेशविस्तार भव।
hitasukhśċākarabuddhadeśavistāra bhava
(ཕན་བདེའི་འབྱུང་གནས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་བསྟན་པ་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ།)

དཱནཔཏི་སཔརིཝཱརསྱ་ཨཱཡུཿ་པུཎྱ་དྷནཤྩ་བརྡྷནཾ་ཀུརྦནྟུ།
दानपतिसपरिवारस्य आयुः पुण्यधनश्च वर्धनं कुर्वन्तु।
dānapatisaparivārasya āyuḥ puṇyadhanaśca vardhanaṃ kurvantu.
(སྦྱིན་བདག་འཁོར་དང་བཅས་པའི་ཚེ་དང་བསོད་ནམས་དང་ནོར་འཕེལ་བར་མཛད་དུ་གསོལ།)

བཱཧྱ་མདྷྱཡོཿ་སརྦ་ཨཔཀྵ་ཨུཔཤཱནྟིཾ་ཀུརྦནྟུ།
बाह्यमध्ययोः सर्व-अपक्ष-उपशान्तिं कुर्वन्तु।
vāhyamadhyayoḥ sarva apakṣa upaśāntiṃ kurvantu.
(ཕྱི་དང་ནང་གི་མི་མཐུན་པའི་ཕྱོགས་ཐམས་ཅད་ཉེ་བར་ཞི་བར་མཛད་དུ་གསོལ།)

སཾགྷ་སཔརིཝཱརསྱ་དཤ་དྷརྨ་ཙརྱཱ། སརྦ་སཱདྷནཾ་ཝརྡྷནཾ་བིསྟར་བྷབ།
संघसपरिवारस्य दश धर्मचर्या सर्वसाधनं वर्धनं विस्तर भव।
saṃghasaparivārasya daśa dharmacaryā sarvasādhanaṃ vardhanaṃ vistara bhava.
(དགེ་འདུན་འཁོར་དང་བཅས་པའི་ཆོས་སྤྱོད་བཅུའི་སྒྲུབ་པ་ཐམས་ཅད་འཕེལ་ཞིང་རྒྱས་པར་མཛད་དུ་གསོལ།)

སརྦ་སིདྡྷིམྨེ་པྲཡཙྪནྟུ། མཾགལཾ་ཀུརྦནྟུ།།
सर्वसिद्धिम्मे प्रयच्छन्तु। मंगलं कुर्वन्तु।
sarvasiddhiṃ me prayacchantu maṃgalaṃ kurvantu.
(བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྩོལ་དུ་གསོལ། བཀྲ་ཤིས་པར་མཛད་དུ་གསོལ།། ॥)

•

---

1. ཤྩ- ख.

(21) ༄ མཆོད་པ་སྤྲིན་གྱི་གཟུངས།

([1]पूजामेघधारणी = Pujāmeghadhāraṇī)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགཝཏེ་བཛྲ་སཱར་པྲམརྡནེ། ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶཾབུདྡྷཱཡ།

ॐ नमो भगवते [2]वज्रसारप्रमर्दने तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।

Oṃ namo bhagavate vajrasārapramardane tathāgatāyārhate samyak saṃ buddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྡོ་རྗེ་སྙིང་པོས་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ།
तद्यथा—
tadyathā-
(འདི་ལྟ་སྟེ།

ཨོཾ་བཛྲེ་བཛྲེ།
ॐ वज्रे वज्रे
Oṃ vajre vajre
རྡོ་རྗེ་མ་རྡོ་རྗེ་མ།)

མཧཱ་བཛྲེ།
महावज्रे
mahāvajre
(རྡོ་རྗེ་ཆེན་མོ།

མཧཱ་ཏེཛ་བཛྲེ།
[3]महातेजवज्रे
mahātejavajre
གཟི་བརྗིད་ཆེན་པོའི་རྡོ་རྗེ་མ།)

མཧཱ་བིདྱཱ་བཛྲེ།
[4]महाविद्यावज्रे
mahāvidyāvajre
(རིག་པ་ཆེན་པོའི་རྡོ་རྗེ་མ།

མཧཱ་བོདྷི་ཙིཏྟ་བཛྲེ།
[5]महाबोधिचित्तवज्रे
mahābodhicittavajre
བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཆེན་པོའི་རྡོ་རྗེ་མ།)

---

1. प्रस्तुत धारणी 'पूजामेघधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- २९५a) में उपलब्ध है।
2. वज्रधरसागरप्रमर्दनाय- पूजामेघधारणी (पत्रांक- २९५a).
3. 'महातेजवज्रे' और 'महाविद्यावज्रे' इन दोनों में व्यतिक्रम है। - तत्रैव
4. महाविद्ये वज्रे - तत्रैव
5. 'महाबोधिचित्तवज्रे' नास्ति- तत्रैव

མཧཱ་བོདྷི་མཎྜོཔསཾཀྲམཎ་བཛྲེ་སརྦ་ཀརྨ་ཨཱ་བརཎ་བི་ཤོདྷན་བཛྲེ་སྭཱཧཱ།།

महाबोधिमण्डोप[1] संक्रमणवज्रे सर्वकर्मावरणविशोधनवज्रे स्वाहा।

mahābodhimaṇḍopasaṃkramaṇavajre sarvakarmāvaraṇaviśodhanavajre svāhā.

(བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་སྙིང་པོར་ཉེ་བར་བསྒྲོད་པའི་རྡོ་རྗེ་མ། ལས་དང་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བའི་རྡོ་རྗེ་མ།།)

•

(22) ༄༅ མཆོད་རྟེན་བསྐོར་བའི་གཟུངས།

([2]चैत्यपरिक्रमाधारणी = Caityaparikramādhāraṇī)

ནམོ་བྷགབཏེ་རཏྣ་ཀེཏུ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶཾབུདྡྷཱཡ།

(ॐ)[3]नमो भगवते रत्नकेतुराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।

(Oṃ) namo bhagavate ratnaketurājāya tathāgatāyārhate samyaksaṃbuddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རིན་པོ་ཆེ་ཏོག་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་རཏྣེ་རཏྣེ་མཧཱ་རཏྣེ་རཏྣ་བིཛཡེ་སྭཱཧཱ།།

तद्यथा— ॐ रत्ने रत्ने महारत्ने [4]रत्नविजये स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ ratne ratne mahāratne ratnavijaye svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། རིན་ཆེན་མ་རིན་ཆེན་མ། རིན་ཆེན་ཆེན་མོ་རིན་ཆེན་རྣམ་རྒྱལ་མ།། ༎)

•

---

1. ०संक्रमणी सर्वकर्मावरणविशोधने स्वाहा- पूजामेघधारणी (पत्रांक- २९५a).
2. प्रस्तुत धारणी 'आर्य-अमिताभनाम धारणी' शीर्षक से धारणीसंग्रह (पत्रांक- ६५a) में तथा अद्वयवज्र विरचित कुदृष्टिनिर्घातन (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४) में 'मृत्तिकासिकतादिचैत्यकरणविधि' के अन्तर्गत उपलब्ध है।
3. 'ॐ' इत्यधिकम्- आर्य-अमिताभनामधारणी (पत्रांक- ६५a), अद्वयवज्रसंग्रह(कु० नि०, पृ० ४)
4. रत्नसंभवे- आर्य-अमिताभनामधारणी (पत्रांक- ६५a)

(23) ༄ ཡོན་སྦྱོང་བའི་གཟུངས།

(दक्षिणापरिशोधनीधारणी = Dakṣiṇāpariśodhanīdhāraṇī)

ན་མཿ་སམནྟ་པྲབྷ་རཱ་ཛཱ་ཡ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡ། ཨརྷ་ཏེ་སམྱཀྶཾ་བུདྡྷཱ་ཡ།

नमः समन्तप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।

Namaḥ samantaprabharājāya tathāgatāya arhate samayaksaṃbuddhāya.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཀུན་ནས་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ན་མོ་མཉྫུ་ཤྲི་ཡེ་ཀུ་མཱ་ར་བྷཱུ་ཏཱ་ཡ། བོ་དྷི་སཏྭཱ་ཡ་མ་ཧཱ་སཏྭཱ་ཡ་མ་ཧཱ་ཀཱ་རུ་ཎི་ཀཱ་ཡ།

नमो मञ्जुश्रिये कुमारभूताय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय।

Namo mañjuśriye kumārabhūtāya bodhisattvāya mahāsattvāya mahākāruṇikāya.

(བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་འཇམ་དཔལ་གཞོན་ནུར་གྱུར་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ།	ཨོཾ་ནི་རཱ་ལམྦེ།	ནི་རཱ་བྷཱ་སེ།	ཛ་ཡེ།
तद्यथा—	ॐ निरालम्भे(म्बे)	निराभासे	जये
Tadyathā-	Oṃ nirālambhe(be)	nirābhāse	jaye
(འདི་ལྟ་སྟེ།	དམིགས་པ་མེད་མ།	སྣང་བ་མེད་མ།	རྒྱལ་ཞིང་།)
[1]ཛ་ཡ་ལབྡྷེ།	མ་ཧཱ་མ་ཏེ།	དཀྵེ།	དཀྵི་ཎཾ་མེ་པ་རི་ཤོ་དྷ་ཡ་སྭཱཧཱ།།
जयलब्धे	महामते	दक्षे	दक्षिणं मे परिशोधय स्वाहा।
jayalabdhe	mahāmate	dakṣe	dakṣiṇaṃ me pariśodhaya svāhā.
(རྒྱལ་བ་ཐོབ་མ།	བློ་གྲོས་ཆེན་མོ།	མཁས་མ།	བདག་གི་ཡོན་ཡོངས་སུ་སྦྱོངས་ཤིག་སྭཱཧཱ།།)



---

1. ཛ་ཡ་ལབྡྷེ- ख.

(24) ཞེ [1]ཐུབ་དབང་གི་སྙིང་པོ་ནི།

([2]मुनीन्द्रहृदय[मन्त्रः] = Munīndrahṛdaya[mantraḥ])

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་མུནེ་མུནེ་མཧཱ་མུནཡེ་སྭཱཧཱ།།

तद्यथा— ॐ मुने मुने महामुनये स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ mune mune mahāmunaye svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། ཐུབ་པ་ཐུབ་པ། ཐུབ་པ་ཆེན་པོ་ལ།། ༎)

•

(25) ངེ [3]སྤྱན་རས་གཟིགས་ཀྱི་སྙིང་པོ་ནི།

([4]अवलोकितेश्वरहृदय[मन्त्रः] = Avalokiteśvarahṛdaya[mantraḥ])

ཨོཾ་མཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ།།

ॐ मणिपद्मे हूँ।

Oṃ maṇi padme hūṃ

(ཀྱེ་ནོར་བུ་པདྨ།། ༎)

•

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी 'शाक्यमुनीनां विशेषधारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १०२b) में उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी 'आर्यावलोकितेश्वरस्य नीलकण्ठनामधारणी' (पत्रांक- ५४a-५४b) तथा 'आर्यषडक्षरी महाविद्यानामधारणी' (पत्रांक- ५५a-५५b) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में उपलब्ध है। आर्य-षडक्षरी महाविद्यानामधारणी का प्रारम्भ "एवं मया श्रुतम्" से किया है तथा बुद्ध के जेतवन में अनाथपिण्डद के आराम में निवास के दौरान षडक्षरी महाविद्या के बारे में विभिन्न देवताओं सहित उपदेश करने के प्रसंग के साथ विस्तार में है, इसी सातत्य में अन्य मन्त्रों के साथ प्रस्तुत षडक्षरी मन्त्र भी है। अन्त में इस षडक्षरी महाविद्या के माहात्म्य एवं फल को भी बताया है। इसके अतिरिक्त साधनमाला (भाग-१) में आर्यषडक्षरीमहाविद्यासाधनम्, कारण्डव्यूहाम्नायेन रचितं साधनम् तथा श्रीमल्लोकनाथसाधनम् आदि अनेक साधनों में यह षडक्षरी मन्त्र उपलब्ध है। विदित है कि यह मन्त्र बौद्ध समाज में अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह अवलोकितेश्वर का हृदयमन्त्र है। इस मन्त्र में छः अक्षर होने से इसे षडक्षरी कहा जाता है। इस मन्त्र के स्वरूप एवं माहात्म्य के बारे में भोट आचार्यों ने अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ भी रचे हैं।

(26) ༄ [1]འཇམ་དབྱངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་ནི།

([2]मञ्जुघोषहृदय[मन्त्रः] = Mañjughoṣahṛdaya[mantraḥ])

ༀ་[3]ཝཱ་གཱི་ཤྭ་རི་མུཾ།།

[4]ॐ वागीश्वरि मुं।

Oṃ vāgīśvari muṃ

(གསུང་གི་དབང་ཕྱུག ॥)

•

(27) ༄ [5]ཕྱག་རྡོར་གྱི་སྙིང་པོ་ནི།

(वज्रपाणिहृदय[मन्त्रः] = Vajrapāṇihṛdaya[mantraḥ])

ༀ་བཛྲ་པཱ་ཎི་ཧཱུཾ།།

ॐ वज्रपाणि हूँ।

Oṃ vajrapāṇi hūṃ.

(ཕྱག་ན་རྡོ་རྗེ།། ॥)

•

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी साधनमाला (भाग-१) में मञ्जुघोषसाधन (पृ० १०५), वादिराट्साधन (पृ० १०९) महाराजलीलमञ्जुश्रीसाधन (पृ० १४१) और मञ्जुश्रीसाधन (पृ० १४२) शीर्षक के अन्तर्गत तथा सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पटल-३, (पृ० १९), (दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित) में उपलब्ध है।
3. ཝཱ་གཱི་ཤྭ་ར་མུཾ- ख
4. ॐ वागीश्वर मुः- साधनमाला में उपलब्ध उपर्युक्त सभी साधनों में तथा सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पटल-३, (पृ० १९); लेकिन सिद्धैकवीरमहातन्त्र के भोट पाठ, देगे तथा ल्हासा संस्करण में 'ॐ वागीश्वरि मुं', नरथंग संस्करण में 'ॐ वागीश्वर मुं' तथा पेकिंग संस्करण में 'ॐ वागीश्वरि मुः' पाठ है।
5. नास्ति- क.

(28) ༄༅། [1]འཇམ་དབྱངས་འགྲོ་བ་སྨིན་བྱེད་ནི།

([2]मञ्जुश्री-अरपचन[हृदयमन्त्रः] = Mañjuśrī-arapacana [hṛdayamantraḥ])

ཨོཾ་ཨ་ར་པ་ཙ་ན་དྷཱིཿ ॥

ॐ अरपचन धीः।

Oṃ arapacana dhīḥ.

(འགྲོ་བ་སྨིན་པར་བྱེད་པའི་སྔགས། ॥)

•

(29) ༄༅། [3]མི་གཡོ་བའི་སྙིང་པོ་ནི།

([4]अचलहृदय[मन्त्रः] = Acalahṛdaya[mantraḥ])

ཨོཾ་ཙཎྜ་མཧཱ་རོ་ཥཎ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄ ॥

ॐ चण्डमहारोषण [5]हूँ फट्।

Oṃ caṇḍamahāroṣaṇa hūṃ phaṭ.

(གཏུམ་པོ་འཇིགས་བྱེད་ཆེན་པོ། ॥)

•

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी सद्योऽनुभव-अरपचनसाधन, साधनमाला (भा०-१), पृ० १२१-१२२ में तथा 'मञ्जुश्री-मन्त्रसूत्रम्' (पत्रांक- २९८a) शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह में मञ्जुघोष के हृदयमन्त्र के रूप में उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी सिद्धैकवीरमहातन्त्र, प्रथम पटल, (पृ० ७), (दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित) और साधनमाला (भाग-१) में प्रभाकरकीर्ति विरचित चण्डमहारोषणसाधनं संकल्पं (पृ० १६९-१७१), तथा चण्डमहारोषणसाधन शीर्षक से तीन साधन क्रमशः (पृ० १७२, १७२-१७३, १७३-१७५) उपलब्ध है। सिद्धैकवीरमहातन्त्र तथा प्रभाकरकीर्ति विरचित चण्डमहारोषणसाधनं संकल्पं (पृ० १६९-१७१),में इस मन्त्र से मिलने वाले फल और विधि का विस्तार से वर्णन है।
5. साधनमाला में उपलब्ध उपर्युक्त सभी साधनों में 'हुँ' पाठ ही मिलता है।

(30) ༄༅། [1]སྒྲོལ་མའི་གཟུངས་སོ།

([2]ताराधारणी = Tārādhāraṇī)

ཨོཾ་ཏཱ་རེ་ཏུཏྟཱ་རེ་ཏུ་རེ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा।

Oṃ tāre tuttāre ture svāhā.

(སྒྲོལ་མ་ཕྱག་འཚལ་ལས་སྒྲོལ་མ།། ॥)

•

(31) ༄༅། [3]འོད་ཟེར་ཅན་མའི་གཟུངས་སོ།

([4]मारीचीधारणी = Mārīcīdhāraṇī)

ཨོཾ་མཱ་རཱི་ཙྱཻ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་པི་ཤཱ་ཙི་པརྞ་ཤ་བ་རི་སརྦ་ཛྭ་ར་པྲ་ཤ་མ་ན་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ मारीच्यै स्वाहा। ॐ पिशाचि पर्णशवरि [5]सर्वज्वरप्रशमनये स्वाहा।

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यप्रतिज्ञानामधारणी' (पत्रांक- ९५a) और 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' शीर्षक के अन्तर्गत (पत्रांक- २९३a) उपलब्ध है। 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवता-हृदयसमुच्चयम्' इस शीर्षक के अन्तर्गत आये धारणी मन्त्रों के सम्बन्ध में सूचना 'हेरुकशताक्षर' के पाद-टिप्पणी में दी जा चुकी है। इसके अतिरिक्त साधनमाला, भाग-१ (पृष्ठ संख्या १७६-२४५), साधन संख्या ८९-११६ में आर्यखदिरवणीतारा, महत्तरीतारा, वज्रतारा तथा मृत्युवञ्चनतारा आदि तारा के विविध रूपों के कुल २८ साधन उपलब्ध हैं, इनमें से अधिकांश साधनों में उपर्युक्त मन्त्र उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी किञ्चित् पाठभेद के साथ सिद्धैकवीरमहातन्त्र (पृ० ७) में उपलब्ध है। यहाँ इस मन्त्र को द्विपद और चतुष्पद प्राणियों के सभी उपद्रवों का नाश करने वाली महाविद्या कहा है। इसी के साथ मन्त्र को धारण करने का विधान भी बताया है।
   साधनमाला, भाग-१, (पृष्ठ संख्या २७४-३०६), साधन संख्या १३२-१४७ में संक्षिप्त मारीचीसाधनम्, अशोकान्तामारीच्याः साधनम् तथा अष्टभुजपीतमारीचिसाधनम् आदि अनेक मारीचीसाधन उपलब्ध हैं, इनमें से अधिकांश साधनों में उपर्युक्त धारणीमन्त्र "ॐ मारीच्यै स्वाहा" उपलब्ध है। इसी प्रकार साधन संख्या १४८-१५०, पृ० सं० ३०६-३१० में 'पर्णशवरीसाधन' तथा 'आर्यपर्णशवरीताराधारणी' शीर्षक से कुल तीन साधन उपलब्ध हैं, उनमें से पर्णशवरीसाधन में "ॐ पिशाचि पर्णशवरि सर्वमारिप्रशमनि स्वाहा।" यह धारणीमन्त्र मिलता है।
5. ॐ पिशाचि पर्णशवरि सर्वोपद्रवनाशनि स्वाहा- सिद्धैकवीरमहातन्त्र, पृ० ७; ॐ पिशाचि पर्णशवरि सर्वमारिप्रशमनि स्वाहा- पर्णशवरीसाधन, (सा० मा०, पृ० ३०६-३०८)

Oṃ mārīcyai svāhā. Oṃ piśāci parṇaśvari sarvajvarapraśamanaye svāhā.
(འོད་ཟེར་ཅན་མ། ཤ་ཟ་རི་ཁྲོད་ལོ་མ་ཅན། རིམས་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བའི་ཆེད་དུ་གཞི་ཚུགས།། ॥)

•

(32) ༄ [1]སོ་སོར་འབྲང་མའི་གཟུངས་ནི།

([2]प्रतिसराधारणी = Pratisarādhāraṇī)

ཨོཾ་མ་ཎི་དྷ་རི་བཛྲི་ཎི། མ་ཧཱ་པྲ་ཏི་ས་རེ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།།
ॐ मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।
Oṃ maṇidhari vajriṇi. Mahāpratisare hūṃ hūṃ phaṭ phaṭ svāhā.
(ནོར་བུ་འཛིན་མ་རྡོ་རྗེ་ཅན། སོ་སོར་འབྲང་བ(མ་)ཆེན་མོ།། ॥)

•

(33) ༄ [3]པདྨ་གཙུག་ཏོར་གྱི་གཟུངས་ནི།

([4]पद्मोष्णीषधारणी = Padmoṣṇīṣadhāraṇī)

ཨོཾ་པདྨོ་ཥྞཱི་ཥ་བི་མ་ལེ་ཧཱུྃ་ཕཊ།།
ॐ पद्मोष्णीषविमले हूँ फट्।
Oṃ padmoṣṇīṣavimale hūṃ. phaṭ.
(པདྨ་གཙུག་ཏོར་དྲི་མེད་མ།། ॥)

•

---

1. नास्ति- क.
2. धारण्यादिसंग्रह में आर्यमहाप्रतिसराधारणी (पत्रांक- ११५a), आर्यमहाप्रतिसरायाः साधनम् (पत्रांक- ११५a-११५b) और पञ्चरक्षामहादेव्याः साधनम् (पत्रांक-११६b-११९b) तथा साधनमाला, (भाग-२) में महाप्रतिसरासाधनम्, (पृ० ३९६), महाप्रतिसरायाः साधनम् (पृ० ३९७-३९८), प्रतिसरासाधनम्, (पृ० ३९९) तथा पञ्चरक्षाविधानम् (पृ० ४०६) शीर्षक से उपलब्ध सभी साधनों में प्रस्तुत धारणी उपलब्ध है।
3. नास्ति- क.
4. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक-. २९२b-२९३b) शीर्षक के अन्तर्गत (पत्रांक- २९३a) उपलब्ध है।

(34) ༄༅། [1]རྣམ་སྲས་ཀྱི་གཟུངས་ནི།

([2]वैश्रवणधारणी = Vaiśravaṇadhāraṇī)

ཨོཾ་བཻ་ཤྲ་བ་ཎཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་བཻ་ཤྲ་མ་ཎཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ वैश्रवणाय स्वाहा। ॐ वैश्रमणाय स्वाहा।

Oṃ vaiśravaṇāya svāhā. Oṃ vaiśramaṇāya svāhā.

(རྣམ་ཐོས་སྲས་ལ། ངལ་བསོས་པོ་ལ།། ||)

•

(35) ༄༅། འཕགས་པ་སྟོང་ཕྲག་བརྒྱ་པའི་སྔགས།

([3]आर्यशतसाहस्रिकामन्त्रः = Āryaśatasāhasrikāmantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་མུ་ནི་དྷརྨེ་སཾ་གྲ་ཧ་དྷརྨེ། ཨ་ནུ་གྲ་ཧ་དྷརྨེ་བི་མུ་ཀྟི་དྷརྨེ།

[4]तद्यथा— ॐ मुनिधर्मे संग्रहधर्मे अनुग्रहधर्मे विमुक्तिधर्मे

---

1. नास्ति- क.
2. प्रस्तुत धारणी 'साधनमाला (भा० १), पृ० ५६०-५६१, साधन संख्या २८४ में जम्भलसाधन शीर्षक से जम्भल आदि नौ प्रकार के यक्ष-मन्त्रों में वैश्रवण का मन्त्र 'ॐ वैश्रवणाय स्वाहा।' है। लेकिन, वहाँ उपलब्ध यक्षमन्त्रों में 'वैश्रमण' नाम के किसी यक्ष का मन्त्र नहीं है। साधनमाला में ही (साधनसंख्या २८५-२९९) तक के विभिन्न जम्भल-साधनों में भी वैश्रमण नाम के किसी यक्ष का वर्णन नहीं है। साधनमाला में उपलब्ध नौ प्रकार के यक्ष एवं यक्षिणियाँ इस प्रकार हैं— जम्भल, माणिभद्र, पूर्णभद्र, धनद, वैश्रवण, केलिमाली, विचित्रकुण्डली, मुखेन्द्र तथा चरेन्द्र। वसुधारा, भद्रा, सुभद्रा, सुनन्दा, गुप्ता, सुगुप्ता, सरस्वती, आर्या तथा चन्द्रकान्ता। यद्यपि साधन संख्या २८४ और २८५ में वर्णित यक्षिणियों के कुछेक नामों में परस्पर भिन्नता भी है।
3. 'आर्यशतसाहस्रिकामन्त्र ' शीर्षक के अन्तर्गत उपलब्ध धारणी मन्त्रों में से अधिकांश धारण्यादिसंग्रह में 'प्रज्ञापारमिताधारणी' (पत्रांक- २९b), 'आर्यप्रज्ञापारमिताधारणी' (पत्रांक- ३०a) तथा 'प्रज्ञापारमिता-धारणी' (पत्रांक- ३०३a) और महायानसूत्रसंग्रह(भाग-१), मिथिला संस्करण, पृ० ९६ में 'कौशिक-नाम प्रज्ञापारमितासूत्र' तथा साधनमाला(भा० १), पृ० ३१९-३२० में 'प्रज्ञापारमितासाधन' शीर्षक के अन्तर्गत उपलब्ध हैं। लेकिन, इनमें पाठभेद बहुत अधिक है, इसलिए विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सभी धारणियों को पाद टिप्पणी में दिया जा रहा है।
4. (क.)- ॐ नमो रत्नत्रयाय। तद्यथा— मुनिधर्मे संग्रह-अनुग्रहधर्म विमुक्तिधर्म सदानुग्रहधर्म वैश्रवणपरिवर्तितधर्म सर्वकार्यपरिपारणधर्म समतानुपरिवर्तितधर्म स्वाहा। ॐ प्रज्ञा धृति स्मृति विजये स्वाहा। अनया धारिण्या शतसाहस्र्या प्रज्ञापारमितावाचनात् फलं लभते। इति प्रज्ञापारमिताधारणी समाप्ता। —(धा० सं०, पत्रांक- २९b)

Tadyathā- Oṃ munidharme saṃgrahadharme anugrahadharme vimukti-dharme.

(འདི་ལྟ་སྟེ། 1ཐུབ་པའི་ཆོས་མ་བསྡུས་ཆོས་མ། །རྗེ་འཛིན་ཆོས་མ་གྲོལ་ཆོས་མ།།)

2སར་ཨནུགྲཧ་དྷརྨེ།

सर-अनुग्रहधर्मे

sara-anugrahadharme

(འབྲང་ཞིང་རྗེས་སུ་འཛིན་ཆོས་མ།

བྷཻརབ་མན་པརིབརྡྷིན་དྷརྨེ།

भैरवमनपरिवर्धिन(र्तित)धर्मे

bhairavamanaparivardhina(tita)dharme

།འཇིགས་བྱེད་ཡིད་ཡོངས་བསྒྱུར་ཆོས་མ།།)

སརྦ་ཀཱརྻ་པརིབྷྲམཎ་དྷརྨེ།

सर्वकार्यपरिभ्रमणधर्मे

sarvakāryaparibhramaṇadharme

(དགོས་ཀུན་ཡོངས་སུ་འཇལ་ཆོས་མ།

སམནྟ་ཨནུཔརིབརྟིན་དྷརྨེ་སྭཱཧཱ།

समन्त-अनुपरिवर्तिन(त)धर्मे स्वाहा।

samanta-anuparivartina(ta)dharme svāhā.

།ཀུན་དུ་(ཏུ་) རྗེས་ཡོངས་འཇུག་ཆོས་མ།།)

ཨོཾ་པྲཛྙེ་ཤྲུཏི་

3ॐ प्रज्ञे श्रुति

Oṃ prajñe śruti

(ཤེས་རབ་མ་ཀྱི་ཐོས་པ་དང་།

སྨྲིཏི་མཏི་བིཛཡེ་སྭཱཧཱ།

स्मृति मति विजये स्वाहा।

smṛti mati vijaye svāhā.

།དྲན་དང་བློ་གྲོས་རྣམ་རྒྱལ་མ།།)

(ख.)- ॐ नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै। तद्यथा— मुनिधर्मे संग्रहधर्मे अनुग्रहधर्मे विमुक्तिधर्मे वैश्रवणप्रविवित्तिधर्मे सर्वकार्यपरिघ्राण(परिमाण?)धर्मे समतानुपरिवर्तितधर्मे स्वाहा। ॐ प्रज्ञे-२ धृति स्मृति गति विजये धी धारणीये स्वाहा। अनया धारितयाऽष्टशतसाहस्रिका प्रज्ञापारमिता धारिता भवति। आर्यप्रज्ञापारमिताधारणी समाप्ता। —(धा० सं०, पत्रांक- ३०a)

(ग.)- नमो भगवत्यै आर्यप्रज्ञापारमितायै। मुनिधर्म संग्रह-अनुग्रहधर्म विमुक्तिधर्म सदानुग्रहधर्म वैश्रवण-परिवर्तितधर्म सर्वकार्यपरिप्रापनधर्म समतानुपरिवर्तितधर्मे स्वाहा। अनया धारिण्या शतसहस्रा प्रज्ञापार-मितावाचनात् फलं लभते। इति प्रज्ञापारमिताधारणी समाप्ता। —(धा० सं०, पत्रांक- ३०३a)

(घ.)- ०नमो प्रज्ञापारमितायै। तद्यथा— मुनिधर्मे संग्रहधर्मे अनुग्रहधर्मे विमुक्तिधर्मे वैश्रमणधर्मे समन्त(ा)नुपरिवर्तनधर्मे गुणिग्रहसंग्रहधर्मे सर्वत्रानुगतधर्मे सर्वकालपरिपूर्णधर्मे स्वाहा।-----नमो प्रज्ञापारमितायै। तद्यथा— ॐ ह्री श्री धी श्रुति स्मृति मति गति विजये स्वाहा। -------कौशिकनाम प्रज्ञापारमिता समाप्ता। —(महायानसूत्रसंग्रह, भाग-१, पृ० ९६)

1. ཐླུབ་- ख.

2. སྭར་- ख.

3. ॐ धी: श्रुतिस्मृतिविजये स्वाहा।— साधनमाला(भाग-१), प्रज्ञापारमितासाधन, पृ० ३१३; ॐ प्रज्ञे महाप्रज्ञे श्रुतिस्मृतिविजये धी: स्वाहा। तत्रैव, पृ० ३२०

དྷཱི་དྷཱ་ར་ཎི་སྭཱ་ཧཱ།
धी धारणी स्वाहा।
Dhī dhāraṇī svāhā.
(བློ་ནི་འཛིན་པ་ཅན་གཞི་ཚུགས།

ཨོཾ་པྲཛྙཱ་པཱ་ར་མི་ཏཱ་བལ་སྭཱ་ཧཱ།།
ॐ प्रज्ञापारमिता बल स्वाहा।
Oṃ prajñāpāramitā bala svāhā.
།ཤེས་རབ་ཕ་རོལ་ཕྱིན་པའི་སྟོབས།། ༎)

•

(36) ༄ ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་སྟོང་ཕྲག་ཉི་ཤུ་ལྔ་པའི་སྔགས།

([1]पञ्चविंशतिसाहस्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः = Pañcaviṃśatisāhasrikāprajñāpāramitāmantraḥ)

ཏདྱ་ཐཱ།	ཨོཾ་པྲཛྙཱ་པྲཛྙཱ།	པྲཛྙཱ་བ་བྷཱ་སེ་པྲཛྙཱ་བ་བྷཱ་སེ།
[2]तद्यथा—	ॐ प्रज्ञा प्रज्ञा	प्रज्ञावभासे प्रज्ञावभासे
Tadyathā-	Oṃ prajñā prajñā	prajñāvabhāse prajñāvabhāse
(འདི་ལྟ་སྟེ།	ཤེས་རབ་ཤེས་རབ།	ཤེས་རབ་སྣང་མ། ཤེས་རབ་སྣང་མ།)

པྲཛྙཱ་[3]བལ་ག་ཏི་སརྦ་དྷརྨ་ཨརྡྷ་[4]ཀ་ར་བྷི་དྷ་མ་ནི།
प्रज्ञाबलगतिसर्वधर्म-अर्धकरभिधमानि (अज्ञानविधमने)
prajñābalagatisarvadharma-ardhakarabhidhamāni (ajñānavidhamane)
(ཤེས་རབ་ཀྱི་སྣང་བས་ཐོབ་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད།)

---

1. प्रस्तुत धारणी महायानसूत्रसंग्रह (भाग-१), मिथिला संस्करण, पृ० ९६ में 'कौशिकनाम प्रज्ञापारमितासूत्र' में उपलब्ध हैं। पाठभेद की अधिकता को देखते हुए यथावत् पादटिप्पणी में दिया गया है।
2. नमो दशसु दिक्षु सर्वेषामतीतानागतप्रत्युत्पन्नानां त्रयाणां रत्नानाम्। नमो भगवत्यै प्रज्ञापारमितायै सर्वतथागतसुनिभायै सर्वतथागतानुज्ञातविज्ञातायै। (ॐ) प्रज्ञे महाप्रज्ञे प्रज्ञावभासे प्रज्ञालोककारि अज्ञानविधमने सिद्धे सुसिद्धे सिद्धयमने (भ)गवते सर्वाङ्गसुन्दरि (भ)क्तिवत्सले प्रसारहस्ते समाश्वासकरे सिध्य सिध्य बुध्य बुध्य कम्प कम्प चल चल राव राव आगच्छ भगवते मा विलम्ब स्वाहा।- कौशिकप्रज्ञापारमितासूत्र, महायानसूत्रसंग्रह, पृ० ९६.
3. བལོ་- ख.
4. ཀ་རི་- ख.

སིདྡྷེ་སུསིདྡྷེ།[1] སིདྡྷྱནྟུ་མཱྃ། བྷགབཏི།
सिद्धे सुसिद्धे सिद्ध्यन्तु मां भगवति
siddhe susiddhe siddhyantu māṃ bhagavati
(དངོས་གྲུབ་ཤིན་ཏུ་དངོས་གྲུབ། བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་བསྩོལ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ།)

སརྦ་ཛྙཱ་ན་སཾདྷ་རི་བྷགབཏི་བཙྪེལ་པྲསརདེ་ཧསྟ་མམ་སུཀར་སིདྡྷི་སིདྡྷི།
सर्वज्ञानसंधरि भगवति वच्छेल(वत्सले?) प्रसरदे हस्त मम सुकर सिद्धि सिद्धि
sarvajñānasaṃdhari bhagavati vacchela(vatsale?) prasarade hasta mama sukara siddhi siddhi
(ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་རྫོགས་པར་འཛིན་མ། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ། མཚོ་རབ་བྱིན་མ། བདག་གི་2ལག་པ་ལེགས་པར་མཛད་པའི་དངོས་གྲུབ་དངོས་གྲུབ།)

བུདྡྷ་བུདྡྷ་ཀམྤ་ཀམྤ་པཱལ་པཱལ་དྷར་དྷར་བར་བར་གརྫ་གརྫ།
बुद्ध बुद्ध कम्प कम्प पाल पाल धर धर वर वर गर्ज्ज गर्ज्ज
buddha buddha kampa kampa pāla pāla dhara dhara vara vara garjja garjja
(ཀྲུས་ཀྲུས། བརྩེ་བརྩེ། 3སྐྱོང་སྐྱོང་། འཛིན་འཛིན། མཆོག་མཆོག། སྒྲོགས་སྒྲོགས།)

ཨཱ་ག་ཙྪ་ཨཱ་ག་ཙྪ་བྷགབཏི་མཱ་བི་ལམྦ་སྭཱ་ཧཱ།།
आगच्छ आगच्छ भगवति मा विलम्ब स्वाहा।
āgaccha āgaccha bhagavati mā vilamba svāhā.
(ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན། བཅོམ་ལྡན་འདས་མ། དམིགས་པ་མེད་པ་གཞི་ཚུགས།། ॥)

•

1. སུསིདྡྷི་- ख.
2. འགྲོ་བ་- ख.
3. སྦྱོང་སྦྱོང་- ख.

(37) ༈ ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་བརྒྱད་སྟོང་པའི་སྔགས།

([1]अष्टसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्रः = Aṣṭasāhasrikāprajñāpāramitāmantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་ཧྲཱིཿ་ཤྲུཏི་སྨྲིཏི་བིཛཡེ་སྭཱཧཱ།

तद्यथा— ॐ [2]ह्रीः श्रुति स्मृति विजये स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ hrīḥ śruti smṛti vijaye svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། ཐོས་པ་དྲན་པ་རྣམ་རྒྱལ་མ།)

པྲཛྙཱ་[3]པཱརམིཏཱཡཻ་སརྦ་དུརྒཏི་ཤོདྷཱཡ་རཱཛཱཡ་སྭཱཧཱ།།

[4]प्रज्ञापारमितायै सर्वदुर्गतिशोधाय राजाय स्वाहा।

Prajñāpāramitāyai sarvadurgatiśodhāya rājāya svāhā.

(ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་མ་ངན་འགྲོ་ཐམས་ཅད་སྦྱོང་བའི་རྒྱལ་པོ་ལ་སྭཱཧཱ།། ༎)

•

(38) ༈ ཤེས་རབ་སྙིང་པོའི་སྔགས།

([5]प्रज्ञापारमिताहृदयमन्त्रः = Prajñāpāramitāhṛdayamantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་གཏེ་གཏེ། པཱརགཏེ། པཱརསཾགཏེ་བོདྷི་སྭཱཧཱ།།

---

1. 'अष्टसाहस्त्रिकाप्रज्ञापारमितामन्त्र' नामक प्रस्तुत धारणी का आंशिक मन्त्र ही साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३ में पीतवर्णसंक्षिप्तप्रज्ञापारमितासाधनं तथा धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a) में आर्यश्रीपीतवर्ण-प्रज्ञापारमिताधारणी शीर्षक से उपलब्ध है।
2. धीः- साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३, धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a)
3. པཱརམིཏཱཡེ་- ख.
4. 'प्रज्ञापारमितायै सर्वदुर्गतिशोधाय राजाय स्वाहा।' नास्ति- साधनमाला (भाग-१) पृ० ३१३; धारण्यादि-संग्रह (पत्रांक- ३०a)
5. प्रस्तुत धारणी 'कौशिकनाम प्रज्ञापारमितासूत्र' (पृ० ९६) और प्रज्ञापारमिताहृदयसूत्र (पृ० ९८-९९) महायानसूत्रसंग्रह(भाग-१), मिथिला संस्करण में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम्' (पत्रांक- २९२b-२९३b) शीर्षक से उपलब्ध धारणी में अनेक मन्त्रों के साथ उपर्युक्त मन्त्र भी समाविष्ट है।

[1]तद्यथा— ॐ गते गते पारगते पारसंगते बोधि स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ gate gate pāragate pārasaṃgate bodhi svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། སོང་མ་སོང་མ། ཕ་རོལ་ཏུ་སོང་མ། ཕ་རོལ་ཏུ་ཡང་དག་པར་སོང་མ་བྱང་ཆུབ་གཞི་ཚུགས།། ༎)

•

(39) ༄ ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ་དྲུག་གི་སྙིང་པོའི་གཟུངས།
(**षट्पारमिताहृदयधारणी** = Ṣaṭpāramitāhṛdayadhāraṇī)

ན་མོ་དྷརྨ་ཀཱ་ཡ་སཾ་བྷོ་ག་ཀཱ་ཡ་ནིརྨཱ་ཎ་ཀཱ་ཡ།

नमो धर्मकाय सम्भोगकाय निर्माणकाय।

Namo dharmakāya saṃbhogakāya nirmāṇakāya.

(ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པའི་སྐུ་སྤྲུལ་པའི་སྐུ།)

ཏདྱ་ཐཱ། དཱ་ན་པཱ་ར་མི་ཏཱ། ཤཱི་ལ་པཱ་ར་མི་ཏཱ།

तद्यथा— दानपारमिता शीलपारमिता

Tadyathā- dānapāramitā śīlapāramitā

(འདི་ལྟ་སྟེ། སྦྱིན་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ། ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ།)

ཀྵཱནྟི་པཱ་ར་མི་ཏཱ། བཱི་རྱ་པཱ་ར་མི་ཏཱ། དྷྱཱ་ན་པཱ་ར་མི་ཏཱ།

क्षान्तिपारमिता वीर्यपारमिता ध्यानपारमिता

kṣāntipāramitā vīryapāramitā dhyānapāramitā

(བཟོད་པའི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ། བརྩོན་འགྲུས་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ། བསམ་གཏན་གྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ།)

---

1. नमः प्रज्ञापारमितायै। तद्यथा— महायानसूत्रसंग्रह(भाग-१), मिथिला संस्करण, पृ० ९६; 'तद्यथा नास्ति— आर्यप्रज्ञापारमितानि देवताहृदयसमुच्चयम् (धा० सं०. पत्रांक- २९२b-२९३b)

པྲཛྙཱ་པཱ་ར་མི་ཏཱ། སརྦ་དྷརྨ་ཤཱུནྱ་ཏཱ་སྭཱ་ཧཱ།།

प्रज्ञापारमिता सर्वधर्मशून्यता स्वाहा।

prajñāpāramitā sarvadharmaśūnyatā svāhā

(ཤེས་རབ་ཀྱི་ཕ་རོལ་ཏུ་ཕྱིན་པ། ཆོས་ཐམས་ཅད་སྟོང་པ་ཉིད།། ॥)

•

(40) ༄ བྱམས་པས་དམ་བཅས་པའི་གཟུངས།

([1]मैत्रेयप्रतिज्ञाधारणी = Maitreyapratijñādhāraṇī)

ན་མོ་རཏྣ་ཏྲ་ཡཱ་ཡ། ན་མོ་བྷ་ག་ཝ་ཏེ་ཤཱཀྱ་མུ་ན་ཡེ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏཱ་ཡཱརྷ་ཏེ་སམྱཀྶམྦུདྡྷཱ་ཡ།

[2]नमो रत्नत्रयाय। नमो भगवते शाक्यमुनये तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय।

Namo ratnatrayāya. Namo bhagavate śākyamunaye tathāgatāyārhate samyaksaṃbuddhāya.

(དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་ཤཱཀྱ་ཐུབ་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱ་ཐཱ། ༀ་ཨ་ཛི་ཏེ་ཨ་ཛི་ཏེ། ཨ་པ་རཱ་ཛི་ཏེ། ཨ་ཛི་ཏཉྫ་ཡ་ཧ་ར་ཧ་ར་མཻ་ཏྲི། ཨ་ཝ་ལོ་ཀི་ཏེ་ཀ་ར་ཀ་ར། མ་ཧཱ་ས་མ་ཡ་སིདྡྷི། བྷ་ར་བྷ་ར། མ་ཧཱ་བོ་དྷི་མཎྜ་བཱི་ཛེ་སྨ་ར་སྨ་ར་ཨསྨཱ་ཀཾ་ས་མ་ཡ་བོ་དྷི་བོ་དྷི་མ་ཧཱ་བོ་དྷི་སྭཱ་ཧཱ།།

---

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ३०a) में 'आर्यमैत्रीयप्रतिज्ञानाम धारणी' शीर्षक के अन्तर्गत उपलब्ध है।
2. ॐ नमः श्रीभगवते आर्यमैत्रेय बोधिसत्त्वाय। नमो भगवते शाक्यमुनये तथागतायार्हते सम्यक्सम्बुद्धाय। नमो मैत्रीयाय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय। - आर्यमैत्रीयप्रतिज्ञानामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- ३०a)

तद्यथा— ॐ अजिते अजिते [1]अपरजिते अजितञ्जय हर हर [2]मैत्रि अवलोकिते कर कर महासमय[3]सिद्धे भर भर महाबोधिमण्डबीजे स्मर स्मर अस्माकं [4]समय बोधि बोधि महाबोधि स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ ajite ajite aparajite ajitañjaya hara hara maitri avalokite kara kara mahāsamayasiddhe bhara bhara mahābodhimaṇḍabīje smara smara asmākaṃ samaya bodhi bodhi mahābodhi svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། མི་ཕམ་པ་མི་ཕམ་པ། གཞན་གྱིས་མི་ཐུབ་པ། མི་ཕམ་རྒྱལ་བ། འཕྲོག་འཕྲོག། བྱམས་པ། སྤྱན་རས་གཟིགས། བྱེད་བྱེད། དམ་ཚིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ། རྒྱས་རྒྱས། བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་སྙིང་པོའི་ས་བོན། དྲན་པ་དྲན་པ། བདག་ཅག་རྣམས་ཀྱི་དམ་ཚིག་བྱང་ཆུབ་བྱང་ཆུབ། བྱང་ཆུབ་ཆེན་པོའི་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་མོ་ཧི་མོ་ཧི་མ་ཧཱ་མོ་ཧི་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ मोहि मोहि महामोहि स्वाहा।
Oṃ mohi mohi mahāmohi svāhā.

ཨོཾ་མུ་ནི་མུ་ནི་སྨ་ར་སྭཱ་ཧཱ།།
[5]ॐ मुनि मुनि स्मर स्वाहा।
Oṃ muni muni smara svāhā.
(ཐུབ་པ་ཐུབ་པ་དྲན་པ་ལེགས་པ་སྦྱིན།། །།)

•

(41) ཧཱུཾ བར་དུ་གཅོད་པ་སེལ་བའི་རིག་སྔགས།

(**विघ्नविनायकविद्यामन्त्रः** = Vighnavināyakavidyāmantraḥ)

ཏདྱ་ཐཱ། ཨོཾ་བཛྲ་ཙཎྜ་མ་ཧཱ་རོ་ཥ་ཎ་ཧཱུྃ་ཕཊ། ཨ་པྲ་ཏི་ཧ་ཏ་བ་ལ་ཧཱུྃ་ཕཊ།
तद्यथा— ॐ वज्रचण्डमहारोषण हूँ फट्। अप्रतिहतबल हूँ फट्।
Tadyathā- Oṃ vajracaṇḍamahāroṣaṇa hūṃ phaṭ Apratihatabala hūṃ phaṭa.
(འདི་ལྟ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་གཏུམ་པོ་འཇིགས་རུང་ཆེན་པོ། ཐོགས་པ་མེད་པའི་སྟོབས།)

---

1. 'अपरजिते' नास्ति- आर्यमैत्रीयप्रतिज्ञानामधारणी, (धा० सं०, पत्रांक- ३०a)
2. महामैत्रावलोकिते- वहीं
3. ०सिद्धि- तत्रैव
4. समयसिद्धिं- तत्रैव
5. मति मति स्मरे स्वाहा- तत्रैव

སརྦ་བིགྷྣཱནྟར[ནྟཱ]ཡ་བིནཱཤཀར་མཱརཡ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄ ༎

सर्वविघ्नान्तराय विनाशकर मारय हूँ फट्।

sarvavighnāntarāya vināśakara māraya hūṃ phaṭ.

(བགེགས་ཐམས་ཅད་མཐར་གྱིས་ཞིང་རྣམ་པར་ཉམས་པར་བྱེད་པ་དང་གསད་པར་གྱིས་ཤིག ༎)

•

(42) ༁ བདུད་སྐྲག་པར་བྱེད་པའི་སྔགས།

([1]मारत्रासकरीमन्त्रः = Māratrāsakarīmantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་མཎི་ཤཏ་དཱིཔཏེ་ཛྭལ་ཛྭལ་དྷརྨ་དྷཱཏུ་གརྦྷེ་མཎི་མཎི་མཧཱ་མཎི་ཧྲྀདཡ་མཎི་སྭཱཧཱ༎

[2]ॐ सर्वतथागतमणिशतदीपते(दीप्ते) ज्वाल ज्वाल(ज्वल ज्वल) धर्मधातुगर्भे मणि मणि महामणि हृदयमणि स्वाहा।

Oṃ sarvatathāgatamaṇiśatadīpate(dīpte) jvāla jvāla (jvala jvala) dharmadhātugarbhe maṇi maṇi hṛdayamaṇi svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ནོར་བུ་མར་མེ་བརྒྱ་ཕྲག་ཁྱོད་ལ་(?)འབར་བ་འབར་བ་ཆོས་དབྱིངས་སྙིང་པོ་ནོར་བུ་ནོར་བུ་ནོར་བུ་ཆེན་པོའི་སྙིང་པོ་ནོར་བུ། ༎)

(प्रतिष्ठामन्त्रः = Pratiṣṭhā-mantraḥ)

•

---

1. प्रस्तुत धारणी अद्वयवज्रसंग्रह पृ० ७ में 'कुदृष्टिनिर्घातनम्' शीर्षक से महामण्डलव्यूहतन्त्र के अनुसार सर्वकताडनविधि के अन्तर्गत किञ्चित् पाठभेद के साथ प्रतिष्ठामन्त्र के नाम से उपलब्ध हैं।
2. ॐ सर्वतथागतमणिशतदीप्ते ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा। प्रतिष्ठामन्त्रः।- कुदृष्टिनिर्घातन, अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७.

(43) ༈ བཅིང་བ་ལས་གྲོལ་བའི་སྔགས།

(बन्धमोचनीमन्त्रः = Bandhamocanī-mantraḥ)

ཏཱ་རེ་ཏཱ་རེ་ཏཱ་ར་ཡ་བྷ་ག་བ་ཏེ་བནྡྷ་མོ་ཙ་ནི་སྭཱ་ཧཱ།

[1]तारे तारे तारय भगवते बन्धमोचनि स्वाहा।

Tāre tāre tāraya bhagavate bandhamocani svāhā.

(སྒྲོལ་མ་སྒྲོལ་མ་སྒྲོལ་བར་གྱིས་བཅོམ་ལྡན་འདས་མ། བཅིངས་པ་གྲོལ། ॥)

*

(44) ༈ ཕལ་པོ་ཆེ་གཟུང་བར་འགྱུར་བའི་སྔགས།

([2]अवतंसकधारिकामन्त्रः = Avataṃsakadhārikā-mantraḥ)

ཨོཾ་ནྠཱི།

[3]ॐ न्थी।

Oṃ nthī

ན་མཿ་སརྦ་བུདྡྷཱ་ནཱཾ།

नमः सर्वबुद्धानाम्।

Namaḥ sarvabuddhānām

(སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། ।)

ཨོཾ་མཱཾ་བྷྲཱུཾ་མཱུཾ

ॐ मां भ्रूं मूं

Oṃ māṃ bhrūṃ mūṃ

ཏདྱ་ཐཱ།

तद्यथा—

tadyathā-

(འདི་ལྟ་སྟེ།

ཨོཾ་བྷྲཱུཾ།

ॐ भ्रूं।

Oṃ bhrūṃ.

---

1. ॐ तारे तुत्तारे तुरे अमुकस्य बन्धनमुक्तिं कुरु स्वाहा।- वज्रतारासाधनम्, साधनमाला, पृ० १८८.
2. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ९३b) में 'गंधव्यूहो(गण्डव्यूहो)नाम धारणी' शीर्षक से उपलब्ध है। लेकिन इसमें प्रारम्भ के कई मन्त्र उपलब्ध नहीं हैं।
3. गण्डव्यूहनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ९३b) में 'ॐ न्थी' से लेकर 'अप्रतिहतशासनानाम्' तक का मन्त्र उपलब्ध नहीं है।

ནམཿ་སམནྟ་བུདྡྷཱ་ནཱཾ། ཨཔྲ་ཏི་ཧ་ཏ་ཤཱ་ས་ནཱ་ནཱཾ།

नमः समन्तबुद्धानां अप्रतिहतशासनानाम्।

Namaḥ samantabuddhānāṃ apratihataśāsanānām

(ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོགས་པ་མེད་པའི་བསྟན་པ་རྣམས་ལ།)

ཨོཾ་ཀི་ཎི་ཀི་ཎི། ཏ་ཐཱ་ག་ཏོ་དྦྷ་ཝ་ཤཱནྟེ་བ་ར་ཏེ་ཨུ་ཏྟ་མོ་ཏྟ་མ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏོ་དྦྷ་ཝ་ཧཱུཾ་ཕཊ྄།།

1ॐ किणि किणि तथागतोद्भवशान्ते 2वर ते(वरदे) उत्तमोत्तमतथागतो3द्भव(वे) हूँ फट्4 (स्वाहा)।

Oṃ kiṇi kiṇi tathāgatodbhavaśānte vara te (varade) uttamottamatathāgato-dbhava(ve) hūṃ phaṭ (svāhā).

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འབྱུང་བ་ཞི་བ་མཆོག་བྱིན་ལ་(?)མཆོག་གི་མཆོག་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་འབྱུང་བ།།)

•

(45) ཏཾ ཏིང་ངེ་འཛིན་རྒྱལ་པོའི་མདོའི་སྔགས།

(5समाधिराजसूत्रमन्त्रः = Samādhirājasūtra-mantraḥ)

ནམཿ་སམནྟ་བུདྡྷཱ་ནཱཾ། ཨཔྲ་ཏི་ཧ་ཏ་ཤཱ་སཱ[ས་ནཱ]་ནཱཾ།

6नमः समन्तबुद्धानाम्। अप्रतिहतशासा(सना)नाम्।

Namaḥ samantabuddhānām apratihataśāsā(sanā)nām.

(ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐོགས་པ་མེད་པའི་བསྟན་པ་རྣམས་ལ།)

---

1. इसके पूर्व "ॐ नमो रत्नत्रयाय। ॐ नमः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यः। तद्यथा-" से प्रस्तुत धारणी प्रारम्भ है- गण्डव्यूहनामधारणी (धा० सं०, पत्रांक- ९३b)
2. वरदे- तत्रैव
3. ०द्भवे- तत्रैव
4. स्वाहा- इत्यधिकम्, तत्रैव
5. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ९३b) में 'समाधिराजनाम धारणी' शीर्षक से उपलब्ध है।
6. ॐ नमो बुद्धाय। नमो धर्माय। नमः संघाय। ॐ नमो रत्नत्रयाय।- समाधिराजनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ९३b)

ཨོཾ་དྷུན་དྷུན་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄་ཕཊ྄་སྭཱཧཱ།།

(तद्यथा)[1]— ॐ धुन धुन हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।[2]

(Tadyathā)- Oṃ dhuna dhuna hūṃ hūṃ phaṭ phaṭ svāhā.

•

(46) ཏྃ ཤེས་རབ་བསྐྱེད་པའི་སྔགས།

([3]प्रज्ञोत्पन्नामन्त्रः = Prajñotpannā-mantraḥ)

ཧཱུྃ་པིཙུ་པིཙུ་པྲཛྙཱ་ཝརྡྷནི་ཛྭལ་ཛྭལ་མེདྷ་ཝརྡྷནི་དྷིརི་དྷིརི་བུདྡྷི་ཝརྡྷནི་སྭཱཧཱ།།

[4]हूँ (ॐ) पिचु पिचु प्रज्ञा[5]वर्धनि ज्वल ज्वल [6]मेध(धा)वर्धनि धिरि धिरि बुद्धि[7]वर्धनि स्वाहा।

Hūṃ (Oṃ) picu picu prajñāvardhani jvala jvala medha(ā)vardhani dhiri dhiri buddhivardhni svāhā.

(འཇམ་པོ་འཇམ་པོ་ཤེས་རབ་འཕེལ་ཞིང་འབར་བ་འབར་བ་ཡིད་གཞུངས་འཕེལ་བ་བློ་འཕེལ་བ།། ||)

•

---

1. 'तद्यथा'- इत्यधिकः, समाधिराजनाम धारणी(धा० सं०, पत्रांक- ९३b)
2. य इमां कश्चिद् धारयेत् संजयो भवति। इति समाधिराजनाम धारणी समाप्ता।- इत्यधिकम्, समाधिराजनाम धारणी(धा० सं०, पत्रांक- ९३b)
3. प्रस्तुत धारणी 'आर्यवज्रसरस्वतीसाधनं' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- १०२a), कृष्णयमारितन्त्र के सातवें पटल, पृ० ५३ में, तथा पण्डितश्रीपद्मवर्द्धनपाद विरचित 'शुक्लप्रज्ञापारमितासाधन' साधन-माला (भाग-१), साधन संख्या-१५५, पृ० ३१५-३१७ में उपलब्ध है।
4. ॐ- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a), कृष्णयामारितन्त्र (सप्तम पटल, पृ० ५३), साधनमाला (भाग-१), पृ० ३१६
5. ०वर्धनी -धा० सं०, (पत्रांक- १०२a)
6. मेधावर्धनी- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a), मेधा०- कृष्णयामारितन्त्र (सप्तम पटल, पृ० ५३), साधनमाला (भाग-१), पृ० ३१६
7. ०वर्धनी- धा० सं०, (पत्रांक- १०२a)

(47) ༄༅། སྟོང་འགྱུར་གྱི་སྔགས།

([1]सहस्रावर्तिमन्त्रः = Sahasrāvarti-mantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་ཛཡེ་ཛཡེ་མཧཱ་ཛཡེ་ཛཡཱཝཧིནི་ཛཡོཏྟརི་ཀལ་ཀལ་མལ་མལ་ཙལ་ཙལ་
ཀྵཎི་ཀྵཎི་སརྦ་ཀརྨཱཝརཎཱནི་མེ་སརྦ་ཛྙཱནཱདྷིཥྛིཏེ་སྭཱཧཱ།

[2]तद्यथा— ॐ जये जये महाजये जयावहिनि जयोत्तरि कल कल मल मल चल चल क्षणि क्षणि सर्वकर्मावरणानि मे सर्वज्ञानाधिष्ठिते स्वाहा।

Tadyathā- Oṃ jaye jaye mahājaye jayāvahini jayottari kala kala mala mala cala cala kṣaṇi kṣaṇi sarvakarmāvaraṇāni me sarvajñānādhiśṭhite svāhā.

(འདི་ལྟར་ཨོཾ། རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་རྒྱལ་བ་ཆེན་པོ་རྒྱལ་བ། རྒྱལ་བའི་བླ་མ། ཚོད་པ་ཚོད་པ། དྲི་མ་དྲི་མ། གཡོ་བ་གཡོ་བ། བདག་གི་ལས་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་ཅིང་ཟད་པར། ཡེ་ཤེས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ་གཞི་ཚུགས།)

ནམོ་བྷགཝཏེ་སཧསྲ་ཝརྟེ་སརྦ་བུདྡྷཱཝལོཀིཏེ།
नमो भगवते सहस्रवर्ते सर्वबुद्धावलोकिते।
Namo bhagavate sahasravarte sarvabuddhāvalokite
(བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །སྟོང་བསྒྱུར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱན་རས་གཟིགས།)

---

1. प्रस्तुत धारणी 'आर्यसहस्रावर्तानाम धारणी' शीर्षक से धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ५४b-५५a) में उपलब्ध है। इसमें पाठान्तर अधिक है, इसलिए पूरी धारणी को पादटिप्पणी में दिया जा रहा है।
2. ॐ नमो आर्यावलोकितेश्वराय बोधिसत्त्वाय महासत्त्वाय महाकारुणिकाय। तद्यथा- ॐ जय जय महाजयवाहिनि जयोत्तरी कल कल मल मल चल चल हुलु हुलु छिणि छिणि सर्वकर्मावरणानि मम भगवति सहस्रावर्त्ति सर्वबुद्धावलोकित-चक्षुः-श्रोत्र-घ्राण-जिह्वा-(काय)मनोविज्ञानविशोधनि, तद्यथा- ॐ सुरु सुरु प्रसुरु प्रसुरु भर भर संभर संभर स्मर स्मर ॐ सर्वबुद्धाधिष्ठिते स्वाहा। ॐ सर्वबुद्धा-वलोकिते स्वाहा। ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा। ॐ अभावस्वभावधर्मावबोधनि स्वाहा।
   अस्या धारण्या अयमुपचारः कल्पसहस्रं चित्तं कर्मावरणं एकवारोच्चारितेन परिक्षयं गच्छति। बुद्धसहस्रावलो(रो)पितं कुशलमूलं भवति जातिपरिवर्त्तेन चक्रवर्तिराज्यैश्वर्यं शतसहस्रं प्रतिलभते। मरणकाले च बुद्धसहस्रं पश्यति। प्रतिदिनं सहस्रावर्त्तं कुर्वन् एकविंशतिदिवसेन बोधिसत्त्वसंख्या-ङ्गच्छति। परिशुद्धेषु बुद्धक्षेत्रेषूपपद्यते। त्रिकृत्वा रात्रौ त्रिकृत्वो दिवसस्य जपेत्। यथेप्सितानि स्वप्नानि पश्यति। सुवर्णवर्णं तथागतं पश्यति। अपरिमितानुसंसारबोधिसत्त्वसंगातिश्रुते पश्यंते। सततसमीतं मनसि कर्तव्या। आर्यासहस्रावर्त्ता नाम धारणी समाप्ता।- धारण्यादिसंग्रह (पत्रांक- ५४b-५५a).

ཙཀྵུཿ་ཤྲོཏྲ་གྷྲཱཎ་ཛིཧྭཱ་ཀཱཡ་མནོབིཛྙཱན་བིཤོདྷནི་སྭཱཧཱ།

चक्षुः-श्रोत्र-घ्राण-जिह्वा-काय-मनोविज्ञान-विशोधनि स्वाहा।

cakṣu śrotra ghrāṇa jihvā kāya manovijñāna viśodhani svāha.

(མིག་དང་རྣ་བ་དང་སྣ་དང་ལྕེ་དང་ལུས་དང་ཡིད་ཀྱི་རྣམ་པར་ཤེས་པ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་གཞི་ཚུགས།)

ཕུ་རུ་ཕུ་རུ་སུ་རུ་སུ་རུ་ཕུ་རཱ་ཕུ་རཱ་པྲཕུ་རཱ་པྲཕུ་རཱ་སརྦ་བུདྡྷཱ་དྷིཥྛི་ཏེ་སྭཱཧཱ།

फुरु फुरु सुरु सुरु फुरा फुरा प्रफुरा प्रफुरा सर्वबुद्धाधिष्ठिते स्वाहा।

phuru phuru suru suru phurā phurā praphurā praphurā sarvabuddhādhiṣṭhite svāhā.

(སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་བྱིན་གྱིས་བརླབས་པ།)

དྷརྨ་དྷཱ་ཏུ་གརྦྷེ་སྭཱཧཱ།	ཨབྷཱ་ཝ་སྭཱཧཱ།	སརྦ་དྷརྨཱ་བ་བོ་དྷ་ནི་སྭཱཧཱ།།
धर्मधातुगर्भे स्वाहा।	अभाव स्वाहा।	सर्वधर्मावबोधनि स्वाहा।
dharmadhātugarbhe svāhā.	Abhāva svāhā.	Sarvadharmāvabodhani svāhā.
(ཆོས་དབྱིངས་སྙིང་པོ།	དངོས་པོ་མེད་པ།	ཆོས་ཐམས་ཅད་རྟོགས་པ།། ༎)

•

(48) ༄ ཕྱག་བྱ་བའི་སྔགས།

(वन्दनामन्त्रः = Vandanā-mantraḥ)

ཨོཾ་ན་མོ་མཉྫུ་ཤྲི་ཡེ།།	ན་མཿ་སུ་ཤྲི་ཡེ།།	ན་མ་ཨུཏྟ་མ་ཤྲི་ཡེ་སྭཱཧཱ།།
ॐ नमो मञ्जुश्रिये।	नमः सुश्रिये।	नम उत्तमश्रिये स्वाहा।
Oṃ namo mañjuśriye	Namaḥ suśriye	Nama uttamaśriye svāhā.

(འཇམ་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ལེགས་པའི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །མཆོག་གི་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།)

•

(49) ༈ སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་བྱེད་པའི་སྔགས།

(सर्वपापशमनीमन्त्रः = Sarvapāpaśamanī-mantraḥ)

ཨོཾ་ཀུམཱར་རཱུཔ་དྷརིཎི་བིཤྭ་སམྦྷཝ་ཨཱགཙྪ་ཨཱགཙྪ་ལགྷུ་ལགྷུ།

ॐ कुमाररूपधरिणि विश्वसम्भव आगच्छ आगच्छ लघु लघु

Oṃ kumārarūpadhariṇi viśvasaṃbhava āgaccha āgaccha laghu laghu.

(གཞོན་ནུའི་གཟུགས་འཆང་བ་སྣ་ཚོགས་འབྱུང་བ་ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན་བསྒྱུས་པ་བསྒྱུས་པ།)

བྷྲཱུཾ་བྷྲཱུཾ་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཛིནཛིགམཉྫུཤྲིཡེ་ཏཱརཡ་མཱཾ་སརྦ་དུཿཁེབྷྱཿ་ཕཊ་ཕཊ།

भ्रूं भ्रूं हूँ हूँ जिनजिग्मञ्जुश्रिये तारय मां सर्वदु:खेभ्यः फट् फट्।

Bhrūṃ bhrūṃ hūṃ hūṃ jinajigmañjuśriye tāraya māṃ sarvaduḥkhebhyaḥ phaṭ phaṭ.

(རྒྱལ་བས་རྒྱལ་བ་འཇམ་དཔལ་ལ་བདག་གི་སྡུག་བསྔལ་ཐམས་ཅད་སྒྲོལ་བར་མཛོད།)

སམཡ་སམཡ་ཨམིཏོདྦྷཝོདྦྷཝ་པཱཔཾ་མེ་ནཱཤཡ་སྭཱཧཱ།།

समय समय अमितोद्भवोद्भव पापं मे नाशय स्वाहा।

samaya samaya amitodbhavodbhava pāpaṃ me nāśaya svāhā.

(དམ་ཚིག་དམ་ཚིག་དཔག་ཏུ་མེད་པ་འབྱུང་བ་འབྱུང་བ། བདག་གི་སྡིག་པ་ཉམས་པར་མཛོད།། །།)

•

(50) ༈ དཀོན་ཅོག་གི་རྟེན་ལ་སྐོར་བ་བྱེད་པའི་སྔགས།

(त्रिरत्नाश्रयप्रदक्षिणामन्त्रः = Triratnāśrayapradakṣiṇā-mantraḥ)

ནམོ་དཤ་དིཀྟྲིཀཱལ་སརྦ་རཏྣ་ཏྲཡཱཡ།

नमो दशदिक्-त्रिकाल-सर्वरत्नत्रयाय।

Namo daśadik trikāla sarva ratnatrayāya.

(ཕྱོགས་བཅུ་དུས་གསུམ་གྱི་དཀོན་ཅོག་གསུམ་པོ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ནམཿ་པྲདཀྵ་སུཔྲདཀྵ་སརྦ་པཱཔ་བིཤོདྷནི་སྭཱཧཱ།།
नमः प्रदक्ष सुप्रदक्ष सर्वपापविशोधनि स्वाहा।
Namaḥ pradakṣa supradakṣa sarva pāpaviśodhani svāhā.
(ཕྱག་འཚལ་བསྐོར་བ་ལེགས་པར་བསྐོར་བ་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ།། ॥)

•

(51) ༀ ཚིག་བཙན་པའི་སྔགས།
(वचनप्रभावकरीमन्त्रः = Vacanaprabhāvakarī-mantraḥ)

ནམོ་བྷགབཏེ་ཨུཥྞཱིཥཱཡ་དྷརེ་རཾ་ཏེ་སྭཱཧཱ།
नमो भगवते उष्णीषाय धरे रं ते स्वाहा।
Namo bhagavate uṣṇīṣāya dhare raṃ te svāhā.
(བཅོམ་ལྡན་འདས་གཙུག་ཏོར་ཅན་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།། ॥)

•

(52) ༀ ངན་སོང་ཐམས་ཅད་ཡོངས་སུ་སྦྱོང་བའི་སྔགས།
([1]सर्वदुर्गतिपरिशोधनमन्त्रः = Sarvadurgatipriśodhana-mantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་ཤོདྷནི་བིཤོདྷནེ་མམ་སརྦ་པཱཔ་བིཤོདྷནེ།ཤུདྡྷེ་བིཤུདྡྷེ་སརྦ་ཀརྨ་ཨཱབ་རཎ་བིཤུདྡྷེ་སྭཱཧཱ།།

(ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।) [2]तद्यथा— ॐ शोधनि विशोधने मम सर्वपापविशोधने शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे स्वाहा।

---

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्यदुर्गतिपरिशोधनीनाम धारणी' (पत्रांक- ६०b) शीर्षक से उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में ही 'आर्यसर्वदुर्गतिपरिशोधनराजस्य तथागतायार्हन्ते-सम्यक्संबुद्धस्य कल्पदेशः' (पत्रांक- २२६b-२३१b) शीर्षक के अन्तर्गत विविध मन्त्रों का संग्रह है, जिसमें प्रस्तुत धारणीमन्त्र भी अनेकशः उपलब्ध है।
2. ॐ नमो भगवते सर्वदुर्गतिपरिशोधनराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा- ॐ शोधनि शोधनि सर्वपापविशोधनि शुद्धे विशुद्धे सर्वकर्मावरणविशुद्धे स्वाहा॥- धारण्यादिसंग्रह, (पत्रांक- ६०a, २२६b-२३१b)

(Oṃ namo bhagavate sarvadurgatipariśodhanarājāya tathāgatāyārhate samyaksaṃbuddhāya), Tadyathā- Oṃ śodhani viśodhane mama sarvapāpaviśodhane śuddhe viśuddhe sarvakarmāvaraṇaviśuddhe svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། སྦྱོང་ཞིང་རྣམ་པར་སྦྱོང་མ། བདག་གི་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་སྦྱོང་མ། དག་ཅིང་རྣམ་དག་མ་ལས་ཀྱིས་སྒྲིབ་པ་རྣམ་པར་དག་མ། ॥)

•

(53) ༀ སྨན་གཏོང་བའི་ཚེ་སྨན་ལ་གདབ་པའི་སྔགས།

([1]भैषज्यदाने भैषज्याभिमन्त्रणमन्त्रः= Vaiṣajyadāne bhaiṣajyābhimantraṇa-mantraḥ)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་བྷཻཥཛྱེ་བྷཻཥཛྱེ་མཧཱ་བྷཻཥཛྱེ་བྷཻཥཛྱེ་[ཛྱ]རཱཛ[2]་སམུདྒཏེ་སྭཱཧཱ།།

(ॐ नमो भगवते भैषज्यवैडूर्यप्रभराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।) [3]तद्यथा— ॐ भैषज्ये भैषज्ये महाभैषज्ये [4]भैषज्यराजसमुद्गते स्वाहा।

(Oṃ namo bhagavate bhaiṣajyavaiḍūryaprabharājāya tathāgatāyārhate samyaksaṃbuddhāya) Tadyathā- Oṃ bhaiṣajye bhaiṣajye mahābhaiṣajye bhaiṣajyarājasamudgate svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། སྨན་སྨན། སྨན་ཆེན་པོ། སྨན་གྱི་རྒྱལ་པོ་ཡང་དག་པར་འཕགས་ཏེ་འགྲོ་མ། ॥)

•

---

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'भैषज्यनाम धारणी' (पत्रांक- ६०b) शीर्षक से उपलब्ध है।
2. རཱཛ་- क.
3. ॐ नमो भगवते भैषज्यवैडूर्यप्रभराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।- इत्यधिकम्, भैषज्यनाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ६०b)
4. सुभैषज्ये स्वाहा।- तत्रैव

(54) ཀྃ ནད་ཐམས་ཅད་རབ་ཏུ་ཞི་བར་བྱེད་པའི་སྔགས།

(सर्वव्याधिप्रशमनीमन्त्रः = Sarvavyādhipraśamanī-mantraḥ)

ཏདྱཐཱ། བཛྲ་བཛྲ་མཧཱ་བཛྲ་སརྦ་བྱཱདྷི་ཧན་ཧན་བཛྲཎ་སྭཱཧཱ།

तद्यथा— वज्र वज्र महावज्र सर्वव्याधि हन हन वज्रण स्वाहा।

Tadyathā- vajra vajra mahāvajra sarvavyādhi hana hana vajraṇa svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། རྡོ་རྗེ་རྡོ་རྗེ་རྡོ་རྗེ་ཆེན་པོ་ནད་ཐམས་ཅད་ལ་སྣུན་སྣུན་རྡོ་རྗེ་གཞི་ཚུགས།)

སངྒྷ་སཔརིཝཱར་དཱནཔཏི་སཔརིཝཱརསྱ་ཙ་སརྦ་བྱཱདྷི་ཤཱནྟིཾ་ཀུ་རུ་ཀུ་རུ་སྭཱཧཱ།།

संघसपरिवार दानपतिसपरिवारस्य च सर्वव्याधि शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

saṃghasaparivāra dānapatisaparivārasya ca sarvavyādhi śāntiṃ kuru kuru svāhā.

(དགེ་འདུན་འཁོར་བཅས་དང་སྦྱིན་བདག་འཁོར་བཅས་ཀྱི་ནད་ཐམས་ཅད་ཞི་བར་མཛོད་མཛོད་ལེགས་པ་སྦྱིན།། ༎)

•

(55) ཀྃ ཡོན་ཏན་བསྔགས་པ་དཔག་ཏུ་མེད་པའི་སྔགས།

([1]अपरिमितगुणानुशंसामन्त्रः = Aparimitaguṇānuśaṃsā-mantraḥ)

ནམོ་རཏྣ་ཏྲཡཱཡ། ནམོ་བྷགབཏེ་ཨམིཏཱབྷཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡཱརྷཏེ་སམྱཀྶམྦུདྡྷཱཡ།

[2]नमो रत्नत्रयाय। नमो भगवते अमिताभाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय।

---

1. प्रस्तुत धारणी धारण्यादिसंग्रह में 'आर्य-अमिताभनाम धारणी' (पत्रांक- ६०a) शीर्षक से उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त धारण्यादिसंग्रह में 'आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी' (पत्रांक- १२५b-१२६b) तथा साधनमाला (भाग-२), पृ० ४१७-४१८ में 'आर्योष्णीषविजयासाधन' नाम से उपलब्ध दोनों साधनों में भी यह मन्त्र मिलता है। यह मन्त्र उपर्युक्त सभी धारणी एवं साधनों में मालामन्त्र के रूप में वर्णित है।
2. ''नमो-------संबुद्धाय'' नास्ति- 'आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी' (धा० सं०, पत्रांक- १२५b-१२६b); आर्योष्णीषविजयासाधन (साधनमाला, भाग-२), पृ० ४१८.

Namo ratnatrayāya. Namo bhagavate amitābhāya tathāgatāyārhate samyak-sambhuddhāya.

(དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་འོད་དཔག་ཏུ་མེད་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་ཨམིཏེ། ཨམིཏོདྦྷཝེ། ཨམིཏ་སམྦྷཝེ། ཨམིཏ་བིཀྲཱནྟེ། ཨམིཏ་གཱམིནི། གགན་ཀཱིརྟིཀརེ། སརྦ་ཀླེཤ་ཀྵཡཾཀ་རི་སྭཱཧཱ།།

1तद्यथा— ॐ अमिते अमितोद्भवे अमितसम्भवे अमितविक्रान्ते अमितगामिनि गगनकीर्ति-करे सर्वक्लेशक्षयंकरि स्वाहा ।

Tadyathā- Oṃ amite amitodbhave amitasambhave amitavikrānte amita-gāmini gaganakīrtikare sarvakleśakṣayaṃkari svāhā.

(འདི་ལྟ་སྟེ། དཔག་ཏུ་མེད་མ། དཔག་ཏུ་མེད་པ་འབྱུང་མ། དཔག་ཏུ་མེད་པ་འབྱུང་བ། དཔག་ཏུ་མེད་པ་རྣམ་པར་གནོན་མ། དཔག་ཏུ་མེད་པར་འགྲོ་བ། ནམ་མཁར་སྒྲོག་པར་བྱེད་མ། ཉོན་མོངས་ཐམས་ཅད་ཟད་པར་བྱེད་གཞི་ཚུགས།། ॥)

(मालामन्त्रः = **Mālā-mantraḥ**)



1. तद्यथा- अमिते-२ अमितोद्भवे अमितसंभवे अमितसिद्धे अमिततेजे-२ अमितविक्रान्ते अमितगामिने अमितगगणकीर्त्तकरे अमितदुंदुभिस्वरे सवार्थसाधने सर्वकर्मक्लेशक्षयंकरि स्वाहा। आर्य-अमिताभ-धारणी समाप्ता- धारण्यादिसंग्रह, (पत्रांक- ६०a)
ॐ अमिते अमितोद्भवे अमितच(वि)क्रान्ते अमितगात्रे अमितगामिनि अमितायुर्ददे गगनकीर्त्तिकरि सर्वक्लेशक्षयंकरीये स्वाहा— इति मालामन्त्रः।- आर्योष्णीषविजयासाधनधारणी (पत्रांक- १२५b-१२६b), आर्योष्णीषविजयासाधन (साधनमाला,भाग-२), पृ० ४१७-४१८.

(56) ༀ ཆོས་སྤྱོད་རབ་གསལ་གྱི་སྔགས་གོང་དུ་མ་འདུས་པ་རྣམས་ནི།
(पूर्व-असंगृहीत-धर्मचर्याप्रकाशकमन्त्रः =
Purva-asaṃgṛhīta-dharmacaryāprakāśaka-mantraḥ)

བཛྲ་སམཱཛཿ།	ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱ་གཏ།	ཨརྒྷཾ།
वज्रसमाजः ।	ॐ सर्वतथागत	अर्घं
Vajrasamājaḥ	Oṃ sarvatathāgata	arghaṃ
(རྡོ་རྗེ་བསྡུ་བ	དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ།	མཆོད་ཡོན།)
པཱདྱཾ།	པུཥྤེ།	དྷཱུ་པེ།
पाद्यं	पुष्पे	धूपे
pādyaṃ	puśpe	dhūpe
(ཞབས་བསིལ།	མེ་ཏོག་མ།	བདུག་སྤོས་མ།)
ཨཱ་ལོ་ཀེ།།	གནྡྷེ།	ནཻ་ཝི[ཝེ]དྱེ།
आलोके	गन्धे	नैवेद्ये
āloke	gandhe	naivedye
(སྣང་གསལ་མ།	དྲི་ཆབ་མ།	ཞལ་ཟས་མ།)

ཤབྡ་ཨཱཿ་ཧཱུྃ།།

शब्द आः हूँ।

śabda āḥ hūṃ

(རོལ་སྒྲ་མ།། ॥)

•

(57) ༄༅། སྐུ་ཁྲུས་གསོལ་བའི་སྔགས་ནི།

([1]कायस्नानमन्त्रः = Kāyasnāna-mantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨབྷིཥེཀཏ་སམཡ་ཤྲིཡེ་ཧཱུྃ།

[2]ॐ सर्वतथागत–अभिषेकत(तः) समयश्रिये हूँ।

Oṃ sarvatathāgata-abhiṣekata(taḥ) samayaśriye hūṃ.
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བའི་དམ་ཚིག་དཔལ་གྱི་ཕྱིར་དུ། ॥)

•

(58) ༄༅། ཆུ་སྦྱིན་གྱི་སྔགས་ནི།

(जलदानमन्त्रः = Jaladāna-mantraḥ)

ཨོཾ་མ་ཎི་པདྨེ་ཧཱུྃ།

ॐ मणिपद्मे हूँ।

Oṃ maṇipadme hūṃ.
(ཀྱེ་ནོར་བུ་པདྨ་ཅན།)

ཨོཾ་ཨཱཿཧྲཱིཿཧཱུྃ།

ॐ आः ह्रीः हूँ।

Oṃ Āḥ hrīḥ hūṃ.

ཨོཾ་ཛལམིདཾ་སརྦ་པྲེཏེབྷྱཿསྭཱཧཱ།

ॐ जलमिदं सर्वप्रेतेभ्यः स्वाहा।

Oṃ jalamidaṃ sarvapretebhyaḥ svāhā.
(ཆུ་འདི་ཡི་དྭགས་ཐམས་ཅད་ལ་ཕེབས་པ་སྦྱིན། ॥)

•

---

1. प्रस्तुत धारणी साधनमाला के विविध साधनों (पृ० ६५, ४१६, ४२९, ४९३) के अन्तर्गत अभिषेक के द्वारा कायशुद्धि के प्रसंग में उपलब्ध होती है। साधनमाला के पृ० १०३ में इस मन्त्र को प्रतिमा–आदि का स्नानमन्त्र भी कहा है। शुभाकरगुप्त विरचित अभिसमयमञ्जरी नामक ग्रन्थ में भी यह मन्त्र उपलब्ध है। उपलब्ध सभी पाठों को पादटिप्पणी में दिया गया है।
2. ॐ सर्वतथागताभिषेकसमयश्रिये हुँ फट् स्वाहा।– सा० मा०, पृ० ६५;
ॐ आः सर्वतथागताभिषेकसमयश्रिये हुँ हुँ– प्रतिमादेः स्नानमन्त्रः।– सा० मा०, पृ० १०३;
ॐ सर्वतथागताभिषेकसमयश्रिये आः हुँ स्वाहा।– सा० मा०, पृ० ४१६;
ॐ सर्वतथागताभिषेकसमयश्रिये हुँ – सा० मा०, पृ० ४२९, ४९३
ॐ सर्वतथागताभिषेकतः समयश्रिये हूँ– अभिसमयमञ्जरी,(भोटपाठ) पृ० ११ (अभिसमयमञ्जरी की सभी संस्कृतमातृकाओं में "ॐ सर्वतथागत–अभिषेकसमयश्रिये हूँ" पाठ है।

(59) ༄༅ ཛམྦྷ་ལ་སེར་པོའི་སྔགས་ནི།
([1]पीतजम्भलमन्त्रः = Pītajambhala-mantraḥ)

བི[བཱི]ཛ་པཱུ་རཀ། ཛ[ཿ] ཧཱུྃ་བཾ་ཧོཿ ཛམྦྷ་ལ་སཔ་རི་ཝཱ་ར།

बीजपूरक(कं)। जः हूँ वं होः जम्भल सपरिवार।

Bījapūraka(kaṃ) jaḥ hūṃ vaṃ hoḥ jambhala saparivāra

(ས་བོན་གྱིས་གང་བ། རྨུགས་འཛིན་འཁོར་དང་བཅས་པ།)

ཨོཾ་ཛམྦྷ་ལ་ཛ་ལེནྡྲ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ། བྲཱུྃ་ཛྲཱིཾ་ཨཱཾ་ཁཱཾ་ཧཱུྃ།

[2]ॐ जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा। [3]व्रूँ ज्रीँ आँ खाँ हूँ।

Oṃ jambhalajalendrāya svāhā. Vrūṃ jrīṃ āṃ khāṃ hūṃ.

(རྨུགས་འཛིན་ཆུའི་དབང་པོ་ལ་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་ཨི་ནྡྲ་ནི་[ཨི་ནྡྲཱ་ཎི་] མུཁ་[4]བྷྲ་མ་རི་སྭཱ་ཧཱ། ཨོཾ་ཛླུཾ་སྭཱ་ཧཱ།།

[5]ॐ इन्द्रनि (इन्द्राणि) मुखभ्रमरि स्वाहा। [6]ॐ ज्लुं स्वाहा।

Oṃ indrani (indrāṇi) mukhabhramari svāhā. Oṃ jluṃ svāhā.

(དབང་པོ་(མོ་) ཁ་གཡོ་བ་ལ་ཞིམས་པ་སྦྱིན།། ||)

•

---

1. प्रस्तुत पीतजम्भल से सम्बद्ध मन्त्र साधनमाला (साधन संख्या २८४-२९९, पृ० ५६०-५८२) में विविध जम्भल साधन के अन्तर्गत उपलब्ध है।
2. यह यक्ष (जम्भल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा०, पृ० ५६१; सिद्धैकवीरमहातन्त्र(द्वितीय पटल), पृ० १४. कुदृष्टिनिर्घातनम्, अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४.
3. वुँ आँ जिँ खँ हुँ- द्र०- सा० मा० (भा० २), पृ० ५६९, ५८१; साधनमाला के पृ० ५२९, ५३२ और ५३७ में रक्तयमारि के विभिन्न साधनों के अन्तर्गत उपलब्ध इन वुँ आँ जिँ खँ हुँ आदि बीजाक्षरों को 'समयाधिष्ठानमन्त्रः' कहा है। ये बीजाक्षर वैरोचन आदि पञ्च ध्यानी बुद्धों से सम्बद्ध हैं।
4. མུཁཱ་- ख.
5. यह चुलुक मन्त्र है। द्र०- सा० मा० (भा० २), पृ० ५७४
6. यह उदक (जल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा० (भा० २); पृ० ५७४

(60) ༈ ཛམྦྷ་ལ་ནག་པོའི་ཆུ་སྦྱིན་གྱི་སྔགས་ནི།

([1]कृष्णजम्भलजलदानमन्त्रः = Kṛṣṇajambhalajaladāna-mantraḥ)

ན་མོ་མ་ཎི་བྷ་དྲ་ཡ། མཧཱ་ཡཀྵ་སེ་ནཱ་པ་ཏ་ཡེ།

[2]नमो मणिभद्राय महायक्षसेनापतये।

Namo maṇibhadrāya mahāyakṣasenāpataye

(ནོར་བུ་བཟང་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །གནོད་སྦྱིན་གྱི་སྡེ་དཔོན་ཆེན་པོ་ལ།)

ཏདྱཐཱ། ཨོཾ་ཛམྦྷ་ལ་ཛ་ལེནྡྲཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ། ཨིདཾ་བ་ལིཾ་ཁ་ཁ་ཁཱ་ཧི་ཁཱ་ཧི།།

तद्यथा— [3]ॐ जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा। इदं बलिं ख ख खाहि खाहि।

Tadyathā- Oṃ jambhalajalendrāya svāhā. Idaṃ baliṃ kha kha khāhi khāhi

(འདི་ལྟ་སྟེ། རྨུགས་འཛིན་ཆུའི་དབང་པོ་ལ་གཞི་ཚུགས། གཏོར་མ་འདི་ཟོ་ཟོ་ཟོ་ཞིག་ཟོ་ཞིག །།)

•

(61) ༈ བདུད་རྩི་འཁྱིལ་པའི་སྔགས།

(अमृतकुण्डलीमन्त्रः = Amṛtakuṇḍalī-mantraḥ)

ཨོཾ་བཛྲ་ཨམྲྀཏ་ཀུཎྜ་ལི་ཧན་ཧན་ཧཱུྃ་ཕཊ྄།

ॐ वज्र-अमृतकुण्डलि हन हन हूँ फट् ।

Oṃ vajra amṛtakuṇḍali hana hana hūṃ phaṭ.

(རྡོ་རྗེ་བདུད་རྩི་འཁྱིལ་བ་སྣུན་སྣུན།། ।།)

•

1. प्रस्तुत कृष्णजम्भलमन्त्र साधनमाला में पण्डित-अभयाकरगुप्तविरचितं उच्छुष्मजम्भलसाधनम् (संख्या २९५, पृ० ५७६-५७९) में कुछ भिन्नता के साथ उपलब्ध है, जिसे पादटिप्पणी में दिया गया है।
2. नमो रत्नत्रयाय। नमो माणिभद्राय महायक्षसेनापतये।ॐ जम्भलजलेन्द्राय स्वाहा।- सा० मा०, पृ० ५७८
3. यह यक्ष (जम्भल) मन्त्र है। द्र०- सा० मा०, पृ० ५६१; सिद्धैकवीरमहातन्त्र(द्वितीय पटल), पृ० १४.

(62) ༄ མ་དག་པ་སྦྱོང་བའི་སྔགས།

(अशुद्धशोधनमन्त्रः = Aśuddhaśodhana-mantraḥ)

ཨོཾ་སྭབྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷཱཿ་སརྦ་དྷརྨཱཿ་སྭབྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ།

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम्।

Oṃ svabhāvaśuddhāḥ sarvadharmāḥ svabhāvaśuddho'ham.

(རང་བཞིན་དག་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་དག་པའོ། ||)

•

(63) ༄ མི་གཡོ་བའི་གཏོར་སྔགས།

(अचलबलिमन्त्रः = Acalabali-mantraḥ)

ཨཱརྱ་ཨཙལ་སཔརིཝཱར་ཨིདཾ་བལིནྟ་ཁ་ཁཱཧི་ཁཱཧི།

आर्य अचल सपरिवार इदं बलिं ख ख खाहि खाहि।

Ārya acala saparivāra idaṃ baliṃ kha kha khāhi khāhi.

འཕགས་པ་མི་གཡོ་བ་འཁོར་དང་བཅས་པ་གཏོར་མ་འདི་ཟོ་ཟོ་ཟོ་ཞིག་ཟོ་ཞིག ||

•

(64) ༄ སྒྲོལ་མའི་གཏོར་མ་འབུལ་བའི་སྔགས།

(ताराबल्यर्पणमन्त्रः = Tārābalyarpaṇa-mantraḥ)

སརྦ་བུདྡྷ་བོདྷི་སཏྭཱ་ནཱཾ། ཨཔྲཏིཧཏ་ཤཱསནཱནཱཾ།

सर्वबुद्धबोधिसत्त्वानां अप्रतिहतशासनानां

Sarvabuddhabodhisattvānāṃ apratihataśāsanānāṃ

(སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ། ཐོགས་པ་མེད་པའི་བསྟན་པ་རྣམས་ལ།)

ཧེ་ཧེ་བྷགཝཏེ།

हे हे भगवते

he he bhagavate

(ཀྱེ་ཀྱེ་བཅོམ་ལྡན་འདས་ལ།

མཧཱ་སཏྭ་སརྦ་བུདྡྷ་ཨཝལོཀིཏེ།

महासत्त्वसर्वबुद्ध–अवलोकिते

mahāsattvasarvabuddha-avalokite

སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀུན་གཟིགས་ལ།)

མཱ་བིལམྦ།

मा विलम्ब

mā vilamba

(དམིགས་པ་མེད་པ།

མཱ་བིལམྦ།

मा विलम्ब

mā vilamba

དམིགས་པ་མེད་པ།

ཨིདམྦལིགྲྀཧྞཱཔཡ་གྲྀཧྞཱཔཡ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ། སརྦ་བིསཉྩར་སྭཱཧཱ།།

इदं बलिं गृह्णापय गृह्णापय हूँ हूँ सर्वविसञ्चर स्वाहा।

idaṃ baliṃ gṛhṇāpaya gṛhṇāpaya hūṃ hūṃ sarvavisañcara svāhā.

(གཏོར་མ་འདི་འཛིན་པར་གྱིས་འཛིན་པར་གྱིས། ཐམས་ཅད་རྣམ་པར་ཀུན་ཏུ་འགྲོ་བ།། །།)

•

(65) ༈ ཀླུ་གཏོར་གྱི་སྔགས་ནི།

(नागबलिमन्त्रः = Nāgabalimantraḥ)

ཨོཾ་བཛྲ་ཡཀྵ་ཧཱུྃ།

ॐ वज्रयक्ष हूँ।

Oṃ vajrayakṣa hūṃ.

(རྡོ་རྗེ་གནོད་སྦྱིན།

ཨོཾ་བཛྲ་ཛྭལ་ཨནལ་ཧན་དཧ་པཙ་མཐ་བྷཉྩརཎ་ཧཱུྃ་ཕཊ྄།

ॐ वज्र ज्वालानल हन दह पच मथ भञ्चरण हूँ फट्।

Oṃ vajra jvālānala hana daha paca matha bhañcaraṇa hūṃ phaṭ.

རྡོ་རྗེ་འབར་བ་སྣུན་སྲེགས་ཆོས་ཆོམས་ཐུལ།)

ཨོཾ་ཨ་ཀཱ་རོ་མུ་ཁཾ་སརྦ་དྷརྨཱ་ཎཱ་མཱདྱ་ནུཏྤནྣ་ཏྭཱཏ། ཨོཾ་ཨཱཿ་ཧཱུཾ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།

1ॐ अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वात्। ॐ आः हूँ फट् स्वाहा।

Oṃ akāro mukhaṃ sarvadharmāṇāmādyanutpannatvāt. Oṃ āḥ hūṃ phaṭ svāhā.

(ཨ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མ་སྐྱེས་པའི་ཕྱིར་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒོའོ། །)

(सार्वभौतिकबलिमन्त्रः = Sārvabhautikabalimantraḥ)

ཨོཾ་བདལི་བདལི་མཧཱ་བདལི་ཧཱུཾ་ཧཱུཾ་ཛཿ་ཛཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ वतलि वतलि महावतलि हूँ हूँ जः जः स्वाहा।

Oṃ vatali vatali mahāvatali hūṃ hūṃ jaḥ jaḥ svāhā.

ཨོཾ་ཨཱ་གཙྪཱ་གཙྪ་མཧཱ་ནཱ་ག་ཨདྷི་པ་ཏ་ཡེ་སརྦ་བྷུརྦྷུ་ཝཿ་ཕྲུཾ་ཕུ་སྭཱཧཱ།

2ॐ आगच्छागच्छ महानाग–अधिपतये सर्व भुर्भुवः फ्रुँ फु स्वाहा।

Oṃ āgacchāgacch mahānāga-adhipataye sarva bhurbhuvaḥ phruṃ phu svāhā.

(ཀླུའི་བདག་པོ། [ཀླུ་ཆེན་པོའི་བདག་པོ་ལ།] ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན། ས་འོག་ས་སྟེང་ཐམས་ཅད།)

མཧཱ་ནཱ་ག་ཨདྷི་པ་ཏ་ཡེ་གྲྀཧྞེ་དཾ་ཨརྒྷཾ། ཨོཾ་ཧི་ལི་ཧི་ལི་མཧཱ་ཧི་ལི་ཕྲུཾ་ཕྲུཾ་སྭཱཧཱ།

महानाग–अधिपतये गृह्णेदं अर्घम्। ॐ हिलि हिलि महाहिलि फ्रुँ फ्रुँ स्वाहा।

Mahānāga-adhipataye gṛhṇedam arghaṃ. Oṃ hili hili mahāhili phruṃ phruṃ svāha.

(ཀླུ་ཆེན་པོའི་བདག་པོ་ལ། མཆོད་ཡོན་འདི་བཟུང་།)

---

1. यह मन्त्र 'सार्वभौतिकबलिमन्त्र' नाम से साधनमाला (भाग-१), पृ० १०३ में उपलब्ध है; इसके अतिरिक्त यह बलिमन्त्र के रूप में कुदृष्टिनिर्घातनम्, (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९) में भी उपलब्ध है।
2. ॐ भक्ष भक्ष आगच्छ आगच्छ महानागाधिपति सर्व भुर्भुवः हूँ हूँ फट् स्वाहा।– महामेघसमाधि-वर्षापणम्। (धा० सं०, पत्रांक- १७२a- १७६b)
   ॐ भक्ष भक्ष आगच्छ आगच्छ महानागाधिपति सर्व भुर्भुवः ङु ङु स्वाहा।– वर्षापणविधिः, कृतिरियं महापण्डिताभयाकरगुप्त (धा० सं०, पत्रांक- १७६b-१७७a)

ཨོཾ་བྷཀྵཱཡ་བྷཀྵཱཡ་སམཡ་ཏིཥྛ་ཕྲུཾ་ཕུ་ཧཱུཾ་སྭཱཧཱ།

ॐ भक्षय भक्षय समय तिष्ठ फ्रुँ फु हूँ स्वाहा।

Oṃ bhakṣaya bhakṣaya samaya tiṣṭha phruṃ phu hūṃ svāha.

(ཟོ་ཞིག་ཟོ་ཞིག དམ་ཚིག་ལ་གནས་པར་གྱིས།)

ཨོཾ་ནཱག་ཨདྷིཔཏི་སཔརིཝཱར་གཙྪ།

ॐ नाग-अधिपति सपरिवार गच्छ।

Oṃ nāga-adhipati saparivāra gaccha.

(ཀླུའི་བདག་པོ་འཁོར་དང་བཅས་པ་སོང་ཞིག

ཨོཾ་གརུཌ་ཧཾས་ཧེ་ཙལེ་ཙལེ་སྭཱཧཱ།།

[1]ॐ गरुड हंस हे चले चले स्वाहा।

Oṃ garuḍa haṃsa cale cale svāhā

ནམ་མཁའ་ལྡིང་གི་རྒྱལ་པོ་གཡོ་བ་གཡོ་བ།། །།)



(66) ༈ སུརཱུཔའི་སྔགས་ནི།

(सुरूपमन्त्रः = Surūpamantraḥ)

ནམཿ་སུརཱུཔཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶམྦུདྡྷཱཡ།

नमः सुरूपाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।

Namaḥ surūpāya tathāgatāya arhate samyaksaṃbuddhāya.

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་གཟུགས་མཛེས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

ཏདྱཐཱ།	ཨོཾ་སུརུ་སུརུ	པྲསུརུ་པྲསུརུ
तद्यथा—	ॐ सुरु सुरु	प्रसुरु प्रसुरु
Tadyathā-	Oṃ suru suru	prasuru prasuru
(འདི་ལྟ་སྟེ།	གཟུགས་མཛེས་གཟུགས་མཛེས།	རབ་ཏུ་གཟུགས་མཛེས་རབ་ཏུ་གཟུགས་མཛེས།)

---

1. ॐ गरुड हंस हे चल चल स्वाहा।– सिद्धैकवीरमहातन्त्र (प्रथम पटल), पृ० २.

ཏ་ར་ཏ་ར། བྷ་ར་བྷ་ར། སམྦྷ་ར་སམྦྷ་ར།

तर तर भर भर सम्भर सम्भर

tara tara bhara bhara sambhara sambhara

(སྒྲོལ་སྒྲོལ། ཁྲུས་པ་ཁྲུས་པ། ཡང་དག་པར་ཁྲུས་པ་ཡང་དག་པར་ཁྲུས་པ།)

སྨ་ར་སྨ་ར། སནྟརྤ་ཡ་སནྟརྤ་ཡ། སརྦ་པྲེཏཱནཱཾ་སྭཱཧཱ།

स्मर स्मर सन्तर्पय सन्तर्पय सर्वप्रेतानां स्वाहा।

smara smara santarpaya santarpaya sarvapretānāṃ svāhā.

(དྲན་པ་དྲན་པ། ཀུན་ཏུ་ཚིམ་པར་གྱིས་ཀུན་ཏུ་ཚིམ་པར་གྱིས། ཡི་དྭགས་རྣམས་ཐམས་ཅད་ལ་ཞིམས་པ་སྦྱིན།)

ཨཔསརནྟུ་ཨཝཏཱར་པྲེཀྵིཎོ་དདཱམྱཧཾ་སརྦ་ལོཀ་དྷཱཏུ་ཝཱསིནཱཾ་པྲེཏཱནཱམཱཧརཾ།།

अपसरन्तु अवतारप्रेक्षिणो ददाम्यहं सर्वलोकधातुवासिनां प्रेतानामाहरम्।

Apasarantu avatārapreksịṇo dadāmyahaṃ sarvalokadhātuvāsināṃ pretānāmāharam.

(འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པའི་ཡི་དྭགས་རྣམས་ལ་བདག་བཟའ་བ་འདི་སྦྱིན་གྱི། གླགས་ལྟ་བ་རྣམས་ཕྱིར་དེངས་ཤིག ॥)

•

(67) ༀ ཕུད་མཆོད་འབུལ་བའི་སྔགས།

(अग्रपूजार्पणमन्त्रः = Agrapūjārpaṇa-mantraḥ)

ཨོཾ་གུ་རུ་བཛྲ་ནཻཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿཧཱུྃ།

ॐ गुरु वज्र नैवेद्य आः हूँ।

Oṃ guru vajra naivedya āḥ hūṃ.

(བླ་མ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།)

ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་བོདྷི་སཏྭེ་བྷྱོ་བཛྲ་ནཻ་ཝི་དྱ་ཨཱཿ་ཧཱུྃ།

1ॐ सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यो वज्रनैविद्य (नैवेद्ये) आः हूँ।

Oṃ sarvabuddhbodhisattvebhyo vajranaividya (naivedye) āḥ hūṃ.

(སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།)

ཨོཾ་ཀཱམ་དེཝ་མཎྜལ་བཛྲ་ནཻ་ཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿ་ཧཱུྃ།

ॐ कामदेवमण्डलवज्रनैवि(वे)द्य आः हूँ।

ōṃ kāmadevamaṇḍalavajranaivi(ve)dya āḥ hūṃ.

(འདོད་ལྷའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།)

ཨོཾཿ་ཤྲཱིདྷརྨ་པཱལ་བཛྲ་ནཻ་ཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿ་ཧཱུྃ།།

ॐ श्रीधर्मपालवज्रनैवि(वे)द्य आः हूँ।

Oṃ śrīdharmapālavajranaivi(ve)dya āḥ hūṃ.

(དཔལ་ལྡན་ཆོས་སྐྱོང་བ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།། ༎)

•

(68) ༄ ཚང་བུའི་སྔགས།

(2पिण्डमन्त्रः = Piṇḍa-mantraḥ)

ཨོཾ་ཧ་རི་ཏེ་སྭཱ་ཧཱ།

3ॐ हरिते स्वाहा।

Oṃ harite svāhā.

(འཕྲོག་མ་ལ་ལེགས་པ་སྦྱིན།)

---

1. ॐ आः सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यो वज्रनैवेद्ये हूँ। द्र०- कुदृष्टिनिर्घातन; अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९.
2. प्रस्तुत पिण्डमन्त्र के अन्तर्गत आये मन्त्र क्रमशः 'हारीतीमन्त्र', 'अग्रपिण्डमन्त्र' और 'उत्सृष्टपिण्डमन्त्र' के नाम से साधनमाला (साधन संख्या ४८, पृ० ९९-१०३) में वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं शीर्षक से उपलब्ध है।
3. 'ॐ हरिते स्वाहा।' नास्ति-वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं, साधनमाला (पृ० ९९-१०३)

ཨོཾ་ཧ་རི་ཏེ་མ་ཧཱ་བཛྲ་ཡཀྵི་ཎི་ཧ་ར་ཧ་ར་སརྦ་པཱ་པཾ་མཀྵིཾ་[མེ་ཀྵཱིཾ་] སྭཱ་ཧཱ།

1ॐ हरिते महावज्रयक्षिणि हर हर सर्वपापं मक्षिं (मे क्षीँ) स्वाहा।

Oṃ harite mahāvajrayakṣiṇi hara hara sarvapāpaṃ makṣiṃ(me kṣīṃ) svāhā.

(འཕྲོག་མ་རྡོ་རྗེ་གནོད་སྦྱིན་ཆེན་མོ་ཕྲོགས་ཕྲོགས་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད།)

(हारीतीमन्त्रः = Hārītī-mantraḥ)

ཨོཾ་ཨགྲ་པིཎྜ་ཨ་ཤི་བྷྱཿ་སྭཱ་ཧཱ།

2ॐ अग्रपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा।

Oṃ agrapiṇḍa-aśibhyaḥ svāhā.

(ཕུད་ཀྱི་ཚང་བུ་ལ་དབང་བ་རྣམས་ལ་ཕེགས་པ་སྦྱིན།)

(अग्रपिण्डमन्त्रः = Agrapiṇḍa-mantraḥ)

ཨོཾ་ཨུཙྪིཥྚ་པིཎྜ་ཨ་ཤི་བྷྱཿ་སྭཱ་ཧཱ།།

3ॐ उच्छिष्टपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा।

Oṃ ucchiṣṭapiṇḍa-aśibhyaḥ svāhā.

(ལྷག་མའི་ཚང་བུ་ལ་དབང་བ་རྣམས་ལ་ཕེགས་པ་སྦྱིན།། །།)

(उच्छिष्टपिण्डमन्त्रः = Ucchiṣṭapiṇḍa-mantraḥ)

•

---

1. ॐ हारीत्यै महायक्षिण्यै हर हर सर्वपापानि में क्षीँ सर्वयक्षिणि प्रवेशनि स्वाहा। हारीतीमन्त्रः- वज्रयोगिनीभाषितं वादिराजमञ्जुश्रीसाधनं, साधनमाला (पृ० ९९-१०३)
   ॐ हारीति महायक्षिणि हर हर सर्वपापान् क्षीँ स्वाहा।- कुदृष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ९)
2. ॐ अग्रपिण्डास(श)नेभ्यः स्वाहा, अग्रपिण्डमन्त्रः।- तत्रैव
3. ॐ उत्सृष्टपिण्डास(श)नेभ्यः स्वाहा, उत्सृष्टपिण्डमन्त्रः।- तत्रैव

(69) ༄ སྦྱོང་བ་ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའི་སྔགས།
([1]शोधन-धर्मताविशुद्धिमन्त्रः = Śodhana-dharmatāviśuddhimantraḥ)

ཨོཾ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷཱཿ་སརྦ་དྷརྨཱཿ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ།

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम्।

Oṃ svabhāvaśuddhāḥ sarvadharmāḥ svabhāvaśuddho'ham.

(རང་བཞིན་དག་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་དག་པའོ།། ༎)

•

(70) ༄ སྤེལ་བ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་སྔགས།
(संवर्द्धनगगनगञ्जमन्त्रः = Saṃvarddhanagaganagañja-mantraḥ)

ནམསྶརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏེ་བྷྱོ་བི་ཤྭ་མུ་ཁེ་བྷྱཿ།

नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः।

Namassarvatathāgatebhyo viśvamukhebhyaḥ

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྣ་ཚོགས་ནས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

སརྦ་ཐཱ་ཁཾ་ཨུདྒ་ཏེ་སྥ་ར་ཎ་ཨི་མཾ་ག་ག་ན་ཁཾ་སྭཱ་ཧཱ།།

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं स्वाहा।

sarvathā khaṃ udgate spharaṇa imaṃ gagana khaṃ svāhā.

(རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁར་འཕགས་ཤིང་ཁྱབ་པ་འདི་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་གཞི་ཚུགས།། ༎)

•

---

1. साधनमाला के विविध साधनों में शून्यतादृढीकरण हेतु इस मन्त्र की भावना का उल्लेख है

(71) ༀ སྤྱོད་པར་དབང་བ་ཤུགས་ལྡན་འོད་ཀྱི་སྔགས།

([1]चर्यावशितावेगवदंशुमन्त्रः=
Caryāvaśitāvegavadaṃśu-mantraḥ)

ནམསྶརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨཝལོཀིཏེ།	ཨོཾ་སམྦྷར་སམྦྷར་ཧཱུྃ།།
[2]नमस्सर्वतथागतावलोकिते।	ॐ सम्भर सम्भर हूँ[3] (फट् स्वाहा)।
Namassarvatathāgatāvalokite.	Oṃ sambhara sambhara hūṃ (phaṭ svāhā.)

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་གཟིགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཡང་དག་པར་རྒྱས་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱས་པ།། ||)

•

(72) ༀ ཡེ་ཤེས་སྐར་མདའི་སྔགས།

(ज्ञानोल्कामन्त्रः = Jñānolkā-mantraḥ)

ཨོཾ་ཛྙཱན་ཨཝལོཀིཏེ།	ནམསྶམནྟ་སྥརཎ་རཤྨི་སམྦྷཝ་སམཡ།
ॐ ज्ञान-अवलोकिते	नमस्समन्तस्फरणरश्मिसम्भवसमय
Oṃ jñāna-avalokite.	Namassamantaspharaṇaraśmisambhavasamaya
(ཡེ་ཤེས་སྐར་མདའ།	ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཀུན་ནས་འཕྲོ་བའི་འོད་ཟེར་འབྱུང་བ་དམ་ཚིག)

མཧཱ་མཎི།	དུ་རུ་དུ་རུ	ཧྲིདཡ་ཛྭལནི་ཧཱུྃ།།
महामणि	दुरु दुरु	हृदयजलनि हूँ।
mahāmaṇi	duru duru	hṛdayajalani hūṃ.
(ནོར་བུ་ཆེན་པོ།		སྙིང་པོ་ཆུ་ནམས།། ||)

•

---

1. प्रस्तुत मन्त्र कुदृष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४) में उपलब्ध है।
2. नमः समन्तबुद्धानां सर्वतथागतावलोकिनि- कुदृष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ४)
3. फट् स्वाहा- इत्यधिकः, तत्रैव

(73) ༁ དབང་བསྒྱུར་འཁོར་ལོའི་སྔགས།
(वशिताचक्रमन्त्रः = Vaśitācakra-mantraḥ)

ནམསྶམནྟ་བུདྡྷཱ་ནཱཾ།

नमस्समन्तबुद्धानाम्।

Namassamantabuddhānām.

(ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

གྲཧེཤྭ་རི་པྲབྷཉྩ་ཛ[ཉྫ]ཏི་མཧཱ་སམཡ་སྭཱཧཱ།།

ग्रहेश्वरि प्रभञ्च(ञ्ज)ति महासमय स्वाहा।

graheśvari prabhañca(ñja)ti mahāsamaya svāhā.

(གཟའི་དབང་ཕྱུག་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་དམ་ཚིག་ཆེན་པོ་གཞི་ཚུགས།། ༎)

•

(74) ༁ ཡང་ཆུ་གཏོར་ལུགས་གཅིག་གི་སྔགས།
(पुनः आम्नायान्तरेण जलबलिमन्त्रः = Punaḥ āmnāyāntareṇa jalabalimantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཀ་རི་ཧཱུཾ།

ॐ सर्वकरि हूँ।

Oṃ sarvakari hūṃ.

(ཐམས་ཅད་བྱེད་པ།

ཨོཾ་སརྦ་སིདྡྷི་ཧཱུཾ།

ॐ सर्वसिद्धि हूँ।

Oṃ sarvasiddhi hūṃ.

ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ།། ༎)

•

(75) ༄༅ ཀླུ་གཏོར་གྱི་སྔགས།

(नागबलिमन्त्रः = Nāga-balimantraḥ)

ཨོཾ་ནཱ་ག་སཔ་རི་ཝཱ་ར་སམ་ཡ་ཧཱུྃ་ཛཿཛཿ།
ॐ नाग सपरिवार समय हूँ जः जः।
Oṃ nāga saparivāra samaya hūṃ jaḥ jaḥ
(ཀླུ་འཁོར་དང་བཅས་པ་དམ་ཚིག)

ཨོཾ་བཱ་སུ་ཀི་མཱཾ་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ वासुकि मां स्वाहा।
Oṃ vāsuki māṃ svāhā.
(ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ)

ཨོཾ་ནཱ་ག་སཔ་རི་ཝཱ་ར་གཙྪ།
ॐ नाग सपरिवार गच्छ।
Oṃ nāga saparivāra gaccha.
(ཀླུ་འཁོར་དང་བཅས་པ་སོང༌། །)

•

(76) ༄༅ ལྷ་མོ་འོད་ཟེར་ཅན་གྱི་སྔགས།

(मारीचीदेवीमन्त्रः = Mārīcīdevī-mantraḥ)

ཨོཾ་མ་རི[མཱ་རཱི]ཙྱཻ་མཱཾ་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ मरि(मारी)च्यै मां स्वाहा।
Oṃ mari(mārī)cyai māṃ svāhā.
(འོད་ཟེར་ཅན་མ། །)

(77) ༄༅། ཕྱོགས་སྐྱོང་བཅུའི་སྔགས།

([1]दशदिक्पालमन्त्रः = Daśadikpāla-mantraḥ)

དཤ་དི་ཀ྄་ལོ་ཀ་པཱ་ལ་སཔ་རི་ཝཱ་ར་ཨེ་ཧྱེ་ཧི་པདྨ་ཀ་མ་ལ་སྟྭཾ། ས་མ་ཡ་སྟྭཾ།

[2]दशदिक्लोकपाल सपरिवार एह्येहि पद्मकमलस्त्वं समयस्त्वम्।

Daśadiklokapāla saparivāra ehyehi padmakamalastvaṃ samayastvam.

(ཕྱོགས་བཅུ་འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན། པད་མ་པད་མ་ཁྱོད།དམ་ཚིག་ཁྱོད།)

ཨོཾ་ཨིནྡྲཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ इन्द्राय स्वाहा।

Oṃ indrāya svāhā.

(དབང་པོ་ལ་ལེགས་པ་སྦྱིན།

ཨོཾ་ཨགྣ་ཡེ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ अग्नये स्वाहा।

Oṃ agnaye svāhā.

མེ་ལྷ་ལ་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་ཡ་མཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ यमाय स्वाहा।

Oṃ yamāya svāhā.

(གཤིན་རྗེ་ལ།

ཨོཾ་ནཻ་ཪྀཏྱ་[ཏྱེ] སྭཱ་ཧཱ།

ॐ नैर्ऋत्य(त्ये) स्वाहा।

Oṃ nairṛtya(tye) svāhā.

བདེན་བྲལ་ལ།)

ཨོཾ་བ་རུ་ཎཱ་ཡ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ वरुणाय स्वाहा।

Oṃ varuṇāya svāhā.

(ཆུ་ལྷ་ལ།

ཨོཾ་ཝཱ་ཡ་ཝེ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ वायवे स्वाहा।

Oṃ vāyave svāhā.

རླུང་ལྷ་ལ།)

---

1. प्रस्तुत दिक्पालमन्त्र धी: के ३३वें अंक में प्रकाशित 'नित्यकर्मपूजाविधि:' के अन्तर्गत पृ० १६० में व्यतिक्रम एवं पाठभेद के साथ उपलब्ध है। किन्तु दिक्पालों के अन्त में वर्णित बलिमन्त्र नित्यकर्म-पूजाविधि में उपलब्ध नहीं है ।
2. ॐइन्द्राय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ कुबेराय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ नैर्ऋत्ये स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ अध: पृथिवीभ्य: स्वाहा। ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये स्वाहा। ॐ चन्द्रादिनक्षत्राधिपतये स्वाहा। ॐ नागेभ्य: स्वाहा। ॐ असुरेभ्य: स्वाहा। ॐ यक्षेभ्य: स्वाहा। ॐ सर्वदिग्विदिग्लोकपालेभ्य: स्वाहा।- नित्यकर्मपूजाविधि:, धी:-३३, पृ० १६०, दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध अनुभाग से प्रकाशित।

ཨོཾ་ཀུབེརཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ कुबेराय स्वाहा।

Oṃ kuberāya svāhā.

ཨོཾ་ཨཱིཤཱནཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ ईशानाय स्वाहा।

Oṃ īśānāya svāhā.

(ལུས་ངན་ལ། དབང་ལྡན་ལ།)

ཨོཾ་བྲཧྨཎེ་སྭཱཧཱ།

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।

Oṃ brahmaṇe svāhā.

ཨོཾ་སུ[སཱུ]རྱཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ सूर्याय स्वाहा।

Oṃ sūryāya svāhā.

(ཚངས་པ་ལ། ཉི་མ་ལ།)

ཨོཾ་ཙནྡྲཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ चन्द्राय स्वाहा।

Oṃ candrāya svāhā.

ཨོཾ་པྲྀཐིཝཱིབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा।

Oṃ pṛthivībhyaḥ svāhā.

(ཟླ་བ་ལ། སའི་ལྷ་མོ་ལ།)

ཨོཾ་ནཱགེབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ नागेभ्यः स्वाहा।

Oṃ nāgebhyaḥ svāhā.

ཨོཾ་ཨསུརེབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा।

Oṃ asurebhyaḥ svahā.

(ཀླུ་རྣམས་ལ། ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་ལ་ལེགས་པ་སྦྱིན།)

ནམསྶརྦ་ཏཐཱགཏེབྷྱོ་བིཤྭ་མུཁེབྷྱཿ།

[1]नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः।

Namassarvatathāgatebheyo viśvamukhebhyaḥ.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྣ་ཚོགས་ནས་ཕྱག་འཚལ་ལོ།)

1. "नमस्सर्व----स्वाहा"- नास्ति, नित्यकर्मपूजाविधि:, धी:-३३, पृ० १६०

སརྦ་ཐཱ་ཁཾ་ཨུདྒ་ཏེ་སྥ་ར་ཎ་ཨི་མཾ་ག་ག་ན་ཁཾ།

सर्वथा खं उद्‌गते स्फरण इमं गगन खं।

sarvathā khaṃ udgate spharaṇa imaṃ gagana khaṃ.

(རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁར་འཕགས་ཤིང་ཁྱབ་པ་འདི་ནམས་ཁའི་དབྱིངས་སུ)

གྲྀཧྣེ་དམ་བལྱཱ་དི་སྭཱ་ཧཱ།།

गृह्णेदं बल्यादि स्वाहा।

gṛhṇedaṃ balyādi svāhā.

(གཏོར་མ་ལ་སོགས་པ་འདི་བཟུང་།། ।།)

•

(78) ༄༅ སྡེ་བརྒྱད་ཀྱི་སྔགས།

(अष्टसेनमन्त्रः = Aṣṭasena-mantraḥ)

ཨོཾ་དེ་ཝ་ནཱ་ག་ཡཀྵ་རཱཀྵ་ས་གནྡྷརྦ་ཨ་སུ་ར་ག་རུ་ཊ་ཀིནྣ་ར་མ་ཧོ་ར་ག་མ་ནུ་ཥྱ་ཨ་མ་ནུ་ཥྱ་ཨེ་ཧྱེ་ཧི་

པདྨ་ཀ་མ་ལ་ཡ་སྟྭཾ། ཨོཾ་ཊཀྐི་ཧཱུཾ་ཛཿ།།

ॐ देव नाग यक्ष राक्षस गन्धर्व असुर गरुड किन्नर महोरग मनुष्य अमनुष्य एह्येहि पद्मकमलयस्त्वम्। ॐ टक्कि हूँ जः।

Oṃ deva nāga yakṣa rākṣasa gandharva asura garuḍa kinnara mahoraga manuṣya amanuṣya ehyehi padmakamalayastvam. Oṃ ṭakki hūṃ jaḥ.

(ལྷ་ཀླུ་གནོད་སྦྱིན་སྲིན་པོ་དྲི་ཟ་ལྷ་མ་ཡིན་ནམ་མཁའ་ལྡིང་མི་འམ་ཅི་ལྟོ་འཕྱེ་ཆེན་པོ་མི་དང་མི་མ་ཡིན་ཚུར་བྱོན་

ཚུར་བྱོན་པདྨ་པདྨ་ལ་ཁྱོད། འདོད་པ།། ।།)

•

(79) ༄ འབྱུང་གཏོར་གྱི་སྔགས།

(भूतबलिमन्त्रः = Bhūtabalimantraḥ)

ཨོཾ་གུང྄་ཀ་རི་གུང྄་ཀ་རི་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ गुङ्करि गुङ्करि स्वाहा।
Oṃ guṅkari guṅkari svāhā.

ཨོཾ་པི་ཙི་པི་ཙི་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ पिचि पिचि स्वाहा।
Oṃ pici pici svāhā.

ཨོཾ་གུང྄་གུང྄་སྭཱ་ཧཱ།
ॐ गुङ् गुङ् स्वाहा।
Oṃ guṅ guṅ svāhā.

ཨོཾ་གྲྀཧྞེ་དཾ།
ॐ गृह्णेदं
Oṃ gṛhṇedaṃ.
(འདི་བཟུང་།)

སརྦ་བིགྷྣན྄།
सर्वविघ्न(ना)न्।
sarvavighna(nā)n
(བགེགས་ཐམས་ཅད།

ཨོཾ་སརྦ་བྷུ་ཏ་གཙྪ།
ॐ सर्वभूत गच्छ।
Oṃ sarvabhūta gacch.
འབྱུང་[1]པོ་ཐམས་ཅད་སོང་།། ༎)

•

(80) ༄ ཚྭ་ཚྭའི་གཟུངས།

([2]छ्व छ्व (सञ्चक) धारणी = Sañcaka-dhāraṇī)

ཨོཾ་བཛྲ་ཁན་ཁན་ཧཱུཾ།
[3]ॐ वज्र खन खन हूँ।

---

1. པོ་- ख.
2. प्रस्तुत सञ्चक-धारणी के अन्तर्गत आये अधिकाँश धारणीमन्त्र अद्वयवज्र विरचित 'कुदृष्टिनिर्घातनम्' (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० १-१२) में और आंशिक रूप से धारण्यादिसंग्रह में 'आर्य-वैरोचननाम धारणी' (पत्रांक- ५९b-६०a) तथा चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a) में उपलब्ध हैं।
3. ॐ वज्र खन खन हूँ। नास्ति- कुदृष्टिनिर्घातनम् (अ० व० सं०), आर्यवैरोचननाम धारणी (धा० सं०, पत्रांक- ५९-६०), चैत्यपुद्गलस्यहृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a)

Oṃ vajra khana khana hūṃ.

(རྡོ་རྗེ་བཀོ་བཀོ།)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགཝཏེ་བཻརོཙན་པྲབྷ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶཾབུདྡྷཱཡ།

1ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्संबुद्धाय।

Oṃ namo bhagavate vairocanaprabharājāya tathāgatāya arhate samyak-saṃbuddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་རྣམ་པར་སྣང་མཛད་འོད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཏདྱཐཱ།	ཨོཾ་སུ[སཱུ]ཀྵྨེ་2སུ[སཱུ]ཀྵྨེ།	སམེ་སམཡེ།
तद्यथा—	ॐ सु(सू)क्ष्मे सु(सू)क्ष्मे	समे समये
Tadyathā-	Oṃ sūkṣme sūkṣme	same samaye
(འདི་ལྟ་སྟེ།	ཕྲུལ་ཕྲན་ཕྲུལ་ཕྲན།	མཉམ་ཞིང་དམ་ཚིག་མ།)

---

1. ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा- ॐ सूक्ष्मे सूक्ष्मे समे समये शान्ते दान्ते समारोपे अनालम्बे तरम्बे यशोवति महातेजे निराकुलनिर्वाणे सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा। अनया धारण्या मृत्पिण्डं वालुकापिण्डं वा एकविंशतिवारान् परिजप्य चैत्यं कुर्यात्। यावन्त-स्तस्मिन् परमाणवस्तावन्त्यः कोट्यः चैत्यानि कृतानि भवन्ति, परमाणुसंख्यातानि पुण्यानि प्रतिलभते, दशभूमिश्वरो भवति, क्षिप्रं चानुत्तरां सम्यक्संबोधिमभिसम्भोत्स्यत इदमवोचद् भगवान् वैरोचनस्तथागतः। महानुशंसाधारणी। — कुदृष्टिनिर्घातनम् (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ८)

   ॐ नमो भगवते वैरोचनप्रभकेतुराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा- ॐ शू(सू)क्ष्मे शू(सू)क्ष्मे समे समे समये समये शान्ते शान्ते दान्ते दान्ते समारोपे अनारम्ब(लम्बे) तरम्बे यथो (शो)भवति महाते(तेजे) निरालम्बे निराकुले निर्वाणे सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा। आर्य वैरोचननाम धारणी समाप्ता॥— आर्य-वैरोचननाम धारणी (पत्रांक- ५९b-६०a)

   ॐ नमो भगवत्ये वैरोचने प्रभकेतुराजाय तथागतायार्हन्ते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा- ॐ सूक्ष्मे सूक्ष्मे स्मय(समये) स्मय(समये) दान्ते दान्ते शान्ते शान्ते समारु(रो)पे अनालम्बे जसभवते(यशोभवति?) महातेजे निरालम्बे निलाकुरे (निराकुले) निर्वाने(णे) सर्वबुद्धाधिष्ठानाधिष्ठिते स्वाहा।----चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a)

2. སུགྨ- ख.

ཤཱནྟེ། དཱནྟེ། ཨསམཱརོཔེ།

शान्ते दान्ते असमारोपे

ṣānte dānte asamārope

(ཞི་མ། དུལ་མ།)

ཨནལམྦྷེ། ཏརམྦྷེ། ཡཤོཝཏི།

अनलम्भे(म्बे) तरम्भे यशोवति

analambhe(mbe) tarambhe yaśovati

(དམིགས་པ་མེད་པ། སྙན་གྲགས་ལྡན་པ།)

མཧཱ་ཏེཛ། ཉིརཀུལེ། ཉིརིཝཎེ།

महातेज(जे) निरकूले(निराकुले) निरिवणे(निर्वाणे)

mahāteja(je) nirakūle (nirākule) nirivaṇe (nirvāṇe)

(གཟི་བརྗིད་ཆེན་པོ། རིགས་སྒྲུལ་མ།)

སརྦ་བུདྡྷ་ཨདྷིཥྛཱན་ཨདྷིཥྛིཏེ་སྭཱཧཱ།

सर्वबुद्ध-अधिष्ठान-अधिष्ठिते स्वाहा।

sarvabuddha-adhiṣṭhāna-adhiṣṭhite svāhā.

(སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་བྱིན་གྱིས་བརླབས་ཀྱིས་བྱིན་བརླབས་མ།)

ནམསྶམནྟ་བུདྡྷཱནཾ།

[1]नमस्समन्तबुद्धानाम्।

---

1. "नमस्समन्तबुद्धानां------ॐ आकाशधातुगर्भे स्वाहा।" तक का मन्त्र महामण्डलव्यूहतन्त्रानुसारेण सञ्चकताड़नविधि के अन्तर्गत 'कुदृष्टिनिर्घातनम्' (अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७) में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त चैत्यपुद्गलस्य हृदयनाम धारणी (पत्रांक- २५०b-२५१a) में भी कुछ व्यतिक्रम एवं पाठभेद के साथ पूर्व में दिये पादटिप्पणी के सातत्य में आंशिक रूप से मिलता है, उपर्युक्त दोनों पाठों को पादटिप्पणी में दिया जा रहा है। —
नमः समन्तबुद्धानाम्। ॐ वज्रपुष्पे स्वाहा। मृतिकाग्रहणमन्त्रः। ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा। बिम्बबलन-मन्त्रः। ॐ अरजे विरजे स्वाहा। तैलम्रक्षणमन्त्रः। ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा। मुद्राक्षेपनमन्त्रः। ॐ

Namassamantabuddhānām.
(ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །)

ཨོཾ་བཛྲ་ཨཱཡུཥེ་སྭཱཧཱ།
ॐ वज्रायुषे स्वाहा।
Oṃ vajrāyuṣe svāhā.
(རྡོ་རྗེའི་ཚེ་ལ་གཞི་ཚུགས།)

(मृत्तिकाग्रहणमन्त्रः = Mṛtikāgrahaṇa-mantraḥ)

ཨོཾ་བསུདྷ[དྷཱཡ]་སྭཱཧཱ།
1ॐ वसुधाय स्वाहा।
Oṃ vasudhāya svāhā.
(ནོར་འཛིན་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་བཛྲ་ཨུདྦྷཱཝཱཡ་སྭཱཧཱ།
ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा।
Oṃ vajrodbhavāya svāhā.
(རྡོ་རྗེ་འབྱུང་བ་ལ་གཞི་ཚུགས།)

(बिम्बबलनमन्त्रः = Bimbabalana-mantraḥ)

ཨོཾ་ཨརཛེ་བིརཛེ་སྭཱཧཱ།
ॐ अरजे विरजे स्वाहा।

वज्रमुद्राकोटन स्वाहा। आकोटनमन्त्रः। ॐ धर्मरते स्वाहा। आकर्षणमन्त्रः। ॐ अप्रतिष्ठितवज्रे स्वाहा। स्थापनमन्त्रः। ॐ सर्वतथागतमणिशतदीप्ते ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा। प्रतिष्ठामन्त्रः। — कुदृष्टिनिर्घातनम्, अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७

ॐ वसुधे स्वाहा। ॐ वज्रोद्भवाय स्वाहा। ॐ अल(र)जे विल(र)जे स्वाहा। ॐ वज्रकर्तिच्छेदे-२ स्वाहा। ॐ वज्रमुद्गरानां आकोटय-२ स्वाहा। ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा। ॐ धर्मरचिते स्वाहा। ॐ सुप्रतिष्ठितवज्रे आंशने स्वाहा। इति श्रीचैत्यपुद्गर(ल)स्य हृदयनामधारणी समाप्ता। — धा० सं०, (पत्रांक-२५०b-२५१a)

1. नास्ति- अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७

Oṃ araje viraje svāhā

(རྡུལ་མེད་རྡུལ་བྲལ་མ།)

(तैलम्रक्षणमन्त्रः = Tailamrakṣaṇa-mantraḥ)

ཨོཾ་བཛྲ་དྷཱ་ཏུ་གརྦྷེ་སྭཱ་ཧཱ།

[1]ॐ वज्रधातुगर्भे स्वाहा।

Oṃ vajradhātugarbhe svāhā.

(རྡོ་རྗེ་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་མ།)

ཨོཾ་དྷརྨ་དྷཱ་ཏུ་གརྦྷེ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ धर्मधातुगर्भे स्वाहा।

Oṃ dharmadhātugarbhe svāhā.

(ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་མ།)

(मुद्राक्षेपणमन्त्रः = Mudrākṣepana-mantraḥ)

ཨོཾ་བཛྲ་མུདྒ་རེ་ཨ[ཨཱ]ཀོ་ཊ་ཡ་ཨ་ཀོ་ཊ་ཡ་ཧཱུྃ་ཕཊ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ वज्रमुद्गरे आकोटय आकोटय हूँ फट् स्वाहा।

Oṃ vajramudgare ākoṭaya ākoṭaya hūṃ phaṭ svāhā.

(རྡོ་རྗེ་ཐོ་བ་མ། རྡུངས་ཤིག རྡུངས་ཤིག)

(आकोटनमन्त्रः = Ākoṭāna-mantraḥ)

ཨོཾ་དྷརྨ་ར་ཏེ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ धर्मरते स्वाहा।

Oṃ dharmarate svāhā.

(ཆོས་ཀྱི་དགའ་བ་མ།)

(आकर्षणमन्त्रः = Ākarṣaṇa-mantraḥ)

---

1. नास्ति- अद्वयवज्रसंग्रह, पृ० ७

ཨོཾ་སུཔྲཏིཥྛ་བཛྲ་སྭཱཧཱ།

ॐ सुप्रतिष्ठवज्र(वज्रे) स्वाहा।

Oṃ supratiṣṭhavajra(vajre) svāhā.

(ལེགས་པར་རབ་གནས་རྡོ་རྗེ་མ།)

(स्थापनमन्त्रः = Sathāpana-mantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་མཎི་ཤཏ་དཱིཔཏེ་ཛྭལ་ཛྭལ་དྷརྨ་དྷཱཏུ་གརྦྷེ་སྭཱཧཱ།

ॐ सर्वतथागतमणिशतदीपते(प्ते) ज्वल ज्वल धर्मधातुगर्भे स्वाहा।

Oṃ sarvatathāgatamaṇiśatadīpate(pte) jvala jvala dharmadhātugarbhe svāhā.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནོར་བུ་བརྒྱ་ཕྲག་མར་མེ་མ། འབར་བ་འབར་བ་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་མ།)

(प्रतिष्ठामन्त्रः = Pratiṣṭhā-mantraḥ)

ཨོཾ་སྭབྷཱཝ་བིཤུདྡྷེ་ཨཱཧར་ཨཱགཙྪ་ཨཱགཙྪ་དྷརྨ་དྷཱཏུ་གརྦྷེ་སྭཱཧཱ།

ॐ स्वभावविशुद्धे आहर आगच्छ आगच्छ धर्मधातुगर्भे स्वाहा।

Oṃ svabhābha viśuddhe āhara āgaccha āgaccha dharmadhātugarbhe svāhā.

(རང་བཞིན་རྣམ་པར་དག་མ་ཀུན་བསྡུས་ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན། ཆོས་དབྱིངས་སྙིང་པོ་མ།)

(विसर्जनमन्त्रः = Visarjana-mantraḥ)

ཨོཾ་ཨཱཀཱཤ་དྷཱཏུ་གརྦྷེ་སྭཱཧཱ།

ॐ आकाशधातुगर्भे स्वाहा।

Oṃ ākāśadhātugarbhe svāhā.

(ནམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་སྙིང་པོ་མ།

(क्षमापनमन्त्रः = Kṣamāpana-mantraḥ)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་དྷརྨ་ཀཱཡ་མཧཱ་སུཁ་བཛྲ་སུརཏ་སམཡསྟྭཾ།

ॐ सर्वतथागत धर्मकाय महासुख वज्रसुरत समयस्त्वम्।

Oṃ sarvatathāgata dharmakāya mahāsukh vajrasurata samayastvam.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆོས་སྐུ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་རྡོ་རྗེ་ཤིན་ཏུ་དགའ་བའི་དམ་ཚིག་ཁྱོད།)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་སམྦྷོག་ཀཱཡ་སམཡསྟྭཾ།

ॐ सर्वतथागत सम्भोगकाय समयस्त्वम्।

Oṃ sarvatathāgata sambhogakāya samayastvam.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་སྐུའི་དམ་ཚིག་ཁྱོད།)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་ནིརྨཱཎ་ཀཱཡ་སམཡསྟྭཾ།

ॐ सर्वतथागत निर्माणकाय समयस्त्वम्।

Oṃ sarvatathāgata nirmāṇakāya samayastvam.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྲུལ་པའི་སྐུའི་དམ་ཚིག་ཁྱོད།)

ཨོཾ་བཛྲ་པྲམརྡནཱཡ་པྲམརྡནཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ वज्रप्रमर्दनाय प्रमर्दनाय स्वाहा।

Oṃ vajrapramardanāya pramardanāya svāhā.

(རྡོ་རྗེ་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་ལ་རབ་ཏུ་འཇོམས་པའི་ཕྱིར་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་ཨཱཿ་བིགྷྣཱནྟཀྲིཏ་ཧཱུཾ་ཕཊ།

ॐ आः विघ्नान्तकृत् हूँ फट्।

Oṃ āḥ vighnāntakṛt hūṃ phaṭ.

(བགེགས་མཐར་བྱེད།)

ཨོཾ་སརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨབྷིཥེཀཏ་སམཡ་ཤྲིཡེ་ཧཱུཾ།

1ॐ सर्वतथागत-अभिषेकत(तः) समयश्रिये हूँ।

---

1. द्र०- कायस्नानमन्त्रः (पृ० ९६)

Oṃ sarvatathāgata-abhiṣekata(taḥ) samayaśriye hūṃ.

(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དབང་བསྐུར་བའི་དམ་ཚིག་དཔལ་གྱི་ཕྱིར་དུ།)

ཨོཾ་ཧཱུཾ་ཏྲཱཾ་ཧྲཱིཿ་ཨཱ་ཀཱཡ་བིཤོདྷནི་སྭཱཧཱ།

ॐ हूँ त्राँ ह्रीः आ कायविशोधनि स्वाहा।

Oṃ hūṃ trāṃ hrīḥ ā kāyaviśodhani svāhā.

(སྐུ་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་ཙཀྵུ་ཙཀྵུ་སམནྟ་ཙཀྵུ་བིཤོདྷནི་སྭཱཧཱ།

ॐ चक्षु चक्षु समन्तचक्षु विशोधनि स्वाहा।

Oṃ cakṣu cakṣu samantacakṣu viśodhani svāhā.

(སྤྱན་སྤྱན་ཀུན་ནས་སྤྱན་རྣམ་པར་སྦྱོང་བ་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་ཧཱུཾ་ཧྲཱིཿ་བྷུ་ཁཾ་བཛྲི[ཛྲཱི]་བྷཝ་དྲྀཌྷ་ཏིཥྛ་བྷུ་ཁཾ་སྭཱཧཱ།

ॐ हूँ ह्रीः भु ख़ं वज्री भव दृढ तिष्ठ भु खं स्वाहा।

Oṃ hūṃ hrīḥ bhu khaṃ vajrī bhava dṛḍha tiṣṭha bhu khaṃ svāhā.

(རྡོ་རྗེ་ཅན་མཛོད། བརྟན་པར་བཞུགས།)

ཨོཾ་ནམོ་བྷགཝཏེ་པུཥྤ་ཀེཏུ་རཱཛཱཡ་ཏཐཱགཏཱཡ་ཨརྷཏེ་སམྱཀྶམྦུདྡྷཱཡ།

1ॐ नमो भगवते पुष्पकेतुराजाय तथागताय अर्हते सम्यक्सम्बुद्धाय।

Oṃ namo bhagavate puṣpaketurājāya tathāgatāya arhate samyaksaṃ-buddhāya.

(བཅོམ་ལྡན་འདས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དགྲ་བཅོམ་པ་ཡང་དག་པར་རྫོགས་པའི་སངས་རྒྱས་མེ་ཏོག་གི་རྒྱལ་པོ་ལ་

ཕྱག་འཚལ་ལོ །)

---

1. ॐ नमो भगवते पुष्पकेतुराजाय तथागतायार्हते सम्यक्संबुद्धाय। तद्यथा— ॐ पुष्पे-२ महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पोद्भवे पुष्पसंभवे पुष्पावकिरणे स्वाहा। - नित्यकर्मपूजाविधिः, धीः-३३, पृ० १५७

ཏདྱཐཱ།
तद्यथा—
Tadyathā-
(འདི་ལྟ་སྟེ།

ཨོཾ་པུཥྤེ་པུཥྤེ་སྭཱཧཱ།
ॐ पुष्पे पुष्पे स्वाहा।
Oṃ puśpe puśpe svāhā.
མེ་ཏོག་མ་མེ་ཏོག་མ་གཞི་ཚུགས།)

པུཥྤེ་སུཔུཥྤེ་[1]སུཔུཥྤ་ཨུདྦྷཝེ།
पुष्पे सुपुष्पे सुपुष्पोद्भवे
puśpe supuśpe supuśpodbhave
(མེ་ཏོག་མ་ཤིན་ཏུ་མེ་ཏོག་མ་ཤིན་ཏུ་མེ་ཏོག་འབྱུང་མ།

པུཥྤ་ཨཝཀི་རཎེ་སྭཱཧཱ།
पुष्पावकिरणे स्वाहा।
puśpāvakiraṇe svāhā.
མེ་ཏོག་ཀུན་བྱེད་མ་གཞི་ཚུགས།)

ཨོཾ་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་ཨི་དཾ་གུ་རུ་བུདྡྷ་དྷརྨ་སངྒྷ་བོ་དྷི་སཏྭ་མཎྜ་ལ་ཀཾ་ནིར[ཡཱ]ཏཡཱམི།།
ॐ सर्वतथागत इदं गुरुबुद्धधर्मसङ्घबोधिसत्त्वमण्डलकं निर्यातयामि।
Oṃ sarvatathāgata idaṃ gurubuddhadharmasaṅghabodhisattvamaṇḍalakaṃ niryātayāmi.
(དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་བླ་མ་སངས་རྒྱས་ཆོས་དགེ་འདུན་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དཀྱིལ་འཁོར་བ་ལ་འདི་འབུལ་བར་བགྱིའོ།། ।།)

●

1. སུཔུཥྤི- ख.

(81) ༁ མགོན་པོའི་སྔགས་ནི།

([1]महाकालमन्त्रः = Mahākālamantraḥ)

ཨོཾ་མཧཱ་ཀཱལཱཡ།	ཤཱ་སན་ཨུཔཧཱ[ཀཱ]རིཎེ།	ཨེཥ་ཨཔཤྩིམ་ཀཱལོ་ཨཡཾ།
[2]ॐ महाकालाय	शासन-उपकारिणे	एष अपश्चिमकालोऽयम्
Oṃ mahākālāya	śāsana-upakāriṇe	eṣa apaścimakālo'yam
(ནག་པོ་ཆེན་པོ།	བསྟན་པ་ལ་ཕན་པ་ཉེ་བར་བསྒྲུབ་པ།	འདི་ཕྱི་མ་མིན་པའི་དུས་འདི་དང་།)

ཨིདཾ་ རཏྣ་ཏྲཡཱཡ་ཨཔཀཱ་རིཎཾ་ཡདི་པྲཏཱི་ཛྙ་[པྲཏཱི་ཛྙཱཾ་] སྨ་ར་སི་ཏདཱ་ཨི་མཾ་དུཥྚཾ་ཁ་ཁ།

इदं रत्नत्रयाय अपकारिणं यदि प्रतीज्ञ(ज्ञां) स्मरसि तदा इमं दुष्टं ख ख

Idaṃ ratnatrayāya apakāriṇaṃ yadi pratījña(jñāṃ) smarasi tadā imaṃ duṣṭaṃ kha kha.

(འདིར་དཀོན་ཅོག་གསུམ་ལ་གནོད་པར་བྱེད་པ་གལ་ཏེ་འདུང་ན་དམ་བཅའ་དྲན་པར་གྱིས་ལ་དེའི་ཚེ་གདུག་པ་ཅན་འདི་ཟོ་ཟོ།)

ཁཱཧི་ཁཱཧི་།	མ[མཱ]ར་མ[མཱ]ར།	གྲྀཧྣ་གྲྀཧྣ།
खाहि खाहि	मार मार	गृह्ण गृह्ण
khāhi khāhi	māra māra	gṛhṇa gṛhṇa
(ཟ་རུ་ཆུག་ཟ་རུ་ཆུག	སོད་སོད།	ཟུང་ཟུང་།)

---

1. प्रस्तुत महाकालमन्त्र साधनमाला में 'श्रीमहाकालसाधनम्' (संख्या ३०१,पृ० ५८५-५८६), 'महाकाल-साधनम्' (साधन संख्या ३००, पृ० ५८३-५८४) तथा कवि करुणाभिधान द्वारा विरचित 'वज्रमहाकाल-साधनम्' (साधन संख्या ३०३, पृ० ५८७-५९०) आदि साधनों में उपलब्ध है।
2. तद्यथा— ॐ महाकालाय शासनोपकारिणे एषोऽपश्चिमकालोऽयं रत्नत्रयापकारिणं यदि प्रतिज्ञां स्मरसि तदा इमं दुष्टं ख ख खाहि खाहि मार मार गृह्ण गृह्ण बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनैकेन मारय हुँ हुँ फट् फट्।- श्रीमहाकालसाधनम्, सा० मा०, पृ० ५८५
मन्त्रः- ॐ महाकालाय शासनोपकारिणे सद्योमुक्तिश्मशानवासिमातृगणनमस्कृताय एषोऽपश्चिमकालोऽयं यदि त्वं प्रतिज्ञां स्मरसि तदा इमं रत्नत्रयापकारिणं अमुकनाम दुष्टं ख ख खाहि खाहि मार मार गृह्ण गृह्ण बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनैकेन मारय मारय हुँ हुँ हुँ फट् (फट्) सर्वयक्षराक्षसभूतप्रेत-पिशाचोन्मादबलिं गृह्ण गृह्ण मम सिद्धिं कुरु शान्तिं कुरु रक्षां कुरु। बलिः- महाकालसाधनम्, पृ० ५८३-५८४; वज्रमहाकालसाधनम् (पृ० ५८८-५८९)

བནྡྷ་བནྡྷ། ཧན་ཧན། དཧ་དཧ། པཙ་པཙ། དིནམེཀེན་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཧཱུྃ། །

बन्ध बन्ध हन हन दह दह पच पच दिनमेकेन हूँ फट् हूँ।

bandha bandha hana hana daha daha paca paca dinamekena hūṃ phaṭ hūṃ.

(ཆིངས་ཆིངས། སྣུན་སྣུན། སྲེགས་སྲེགས། ཚོས་ཚོས། ཉི་མ་གཅིག་གིས་སོ། །)

ཨོཾ་མཧཱ་ཀཱལ་ཧཱུྃ་ཕཊ།

ॐ महाकाल हूँ फट्।

Oṃ mahākāla hūṃ phaṭ.

(ནག་པོ་ཆེན་པོ།)

ཨོཾ་མཧཱ་ཀཱལཱཡ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།

ॐ महाकालाय हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा।

Oṃ mahākālāya hūṃ hūṃ phaṭ phaṭ svāhā.

(ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ།། ༎)

•

(82) ༈ ལྷ་མོའི་སྔགས་ནི།

(देवी[महाकाली]मन्त्रः = Devi (Mahākālī) mantraḥ)

ཨོཾ་རུ་རུ་རོ་རུ་བིཏིཥྛ་1བདྷྭསི་ཀམལ་རཱཀྵསི་ཧཱུྃ་བྷྱོ་ཧཱུྃ།།

ॐ रु रु रो रु वितिष्ठ वध्वसि कमल राक्षसि हूँ भ्यो हूँ।

Oṃ ru ru ro ru vitiṣṭha vadhvasi kamala rākṣasi hūṃ bhyo hūṃ.

(སྒྲ་སྒྲོགས་སྒྲ་དབྱུངས་ལྷ་མོ་པདྨ་ལ་རྣམ་པར་གནས་པའི་སྲིན་པོའི་བུ་མོ།། ༎)

•

1. བདྷྭསི- ख.

༄ བསྔོ་བའི་ཚིགས་བཅད།

(परिणामनाश्लोका: = Pariṇāmanāślokāḥ)

ཡཱནཱིཧ་བྷཱུཏཱནི་སམཱགཏཱ[ཏཱ]ནི་སྠིཏཱནི་བྷཱུམཱཝཐཱནྟརཱིཀྵེ།

यानीह भूतानि समागतानि स्थितानि भूमावथान्तरीक्षे ।

Yanīha bhūtāni samāgatāni sthitāni bhūmāvathāntarīkṣe.

འབྱུང་པོ་གང་དག་འདིར་ནི་ཞུགས་གྱུར་ཏམ། །ས་འམ་འོན་ཏེ་བར་སྣང་འཁོད་པའང་རུང་། །

ཀུརྦནྟུ་མཻཏྲི[ཏྲཱི]་སཏཏཾ་པྲཛཱསུ་དིཝཱ་ཙ་རཱཏྲཽ་ཙ་ཙརནྟུ་དྷརྨཾ།།

कुर्वन्तु मैत्रीं सततं प्रजासु दिवा च रात्रौ च चरन्तु धर्मम् ॥

Kurvantu maitrīṃ satataṃ prajāsu divā ca rātrau ca carantu dharmam.

སྐྱེ་རྒུ་རྣམས་ལ་རྟག་ཏུ་བྱམས་བྱེད་ཅིང་། །ཉིན་དང་མཚན་དུ་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག། ༎

ཅེས་འཕགས་པ་དོན་ཡོད་ཞགས་པའི་གཟུངས་ནས་ངལ་བསོས་པོའི་མཚན་ཐུགས་ཀྱི་བར་ནི་ཇེ་བླ་མ་ཞྭ་ལུ་ལོ་ཙཱ་བ་ཆེན་པོས་ཕྱོགས་གཅིག་ཏུ་བཀོད་ཅིང་སྤྱན་རས་ཀྱིས་བཅས་པའི་གླེགས་བམ་བཞིན་ལ། ཕྱོད་སྐད་དུ་གཟུངས་ཐུགས་སྔགས་ཆེ་བ་འདི་དང་འདི་རྣམས་བཀོད་དེ་མཚན་བྱུར་ཡང་ཕྱིས་ཤོག་ཅེས་ས་སྐྱོང་བ་དམ་པའི་བཀའ་སྐྱོ་བོར་ནོད་དེ། བཙུན་པ་དབང་པོས་བད་སྦྱོད་པའི་གཞུང་ལུགས་བཞིན་དུ་དག་པར་བགྱིས་པ་འདིས་ནི་རྒྱལ་བའི་བསྟན་པ་རིན་པོ་ཆེ་ཕྱོགས་དུས་ཐམས་ཅད་དུ་དར་ཞིང་རྒྱས་པའི་རྒྱུར་གྱུར་ཅིག །

[1]དགའ་བའི་དཔལ་ལྡན་ཕྱོགས་ལས་རྣམ་པར་རྒྱལ། །

---

1. ཨོཾ་སྭསྟི།

གང་ཞིག་མཚན་ཙམ་ལན་གཅིག་ནར་ལྷུང་ཡང་། །
མི་བཟད་ངན་འགྲོའི་ཉེས་བརྒྱའི་ནད་རོ་རྣམས། །
དྲུང་ནས་འབྱིན་བྱེད་སྨན་མཆོག་ཟླ་མེད་པ། །
བླ་མ་བདེ་གཤེགས་སྲས་བཅས་རྣམས་ཀྱི་མཚན། །
མཁས་མཆོག་ཞྭ་ལུ་ལོ་ཆེན་ལ་སོགས་པས། །

སྡེ་བཞིའི་འབྱུང་གནས་གྲུ་འཛིན་པོ་བྲང་ནས། ।
འཛམ་གླིང་སྐྱེ་རྒུའི་བསོད་ནམས་དགའ་སྟོན་དུ། ।
མི་ཟད་པར་དུ་བསྐྲུབས་འདི་ཨེ་མ་ཕུལ། །

ཞེས་རབ་བརྟན་ལྷུན་པོ་སྐད་དུ་པར་དུ་བསྐྲུབས་པ་བཞིན་ཡོང་རྟེས་ཀྱིས། སླར་ཡང་དགའ་ལྡན་ཕུན་ཚོགས་གླིང་དུ་གསར་དུ་བཀོས་པ་དགེ་ལེགས་སུ་གྱུར་ཅིག།

སརྦ་མངྒལཾ།།

• • •

ཉེར་མཁོ་ལེགས་སྦྱར་བོད་སྐད་མཆན་གསལ་འདི། །
ལགོང་ས་ལྔ་པས་པར་དུ་བསྐྲུན་ན་འང་། །
ད་ཅང་འགྲོ་ཆེས་བགྲེས་ཟད་ཉམས་སྐྱོན་ཕྱིར། །
རྒྱལ་བསྟན་ནོར་འཛིན་ལ་སྤྲོད་ཞིང་པའི་ཚོགས། །
ཕན་བདེའི་འབྲས་བཟང་ལོངས་སུ་སྤྲོད་པའི་ཕྱིར། །
གནམ་བསྐོས་དགའ་བ་བརྒྱ་ལྡན་པོ་བྲང་ནས། །
འཛད་མེད་ཆོས་སྦྱིན་གྲུ་ཆར་འདི་ཕབ་བོ། །
ཞེས་པ་འདི་ཡང་གཟུངས་འབུམ་རྟེང་བགྲེས་ཟད་ལ་བརྟེན་སྐབས་མགོན་སྲིད་སྐྱོང་སྟག་བྲག་པཎྜིཏའི་བཀའ་དགོངས་བཞིན་རབ་བྱུང་བཅུ་དྲུག་པའི་ཤི་སྒྲོལ་བྱེད་ཅེས་ཤིང་ཕོ་སྦྲུལ་ལོར་པར་གསར་བསྐྲུན་གྱིས་ཞལ་པར་ཁང་ཆེན་མོ་གངས་ཅན་ཕན་བདེའི་གཏེར་མཛོད་གླིང་དུ་བཞུགས།། ॥– ख.

ནམ་ཨཱརྱ་ཨབ་ལོ་ཀི་ཏེ་ཤྭ་རཱ་ཡ། བོ་དྷི་སཏྭཱ་ཡ། མཧཱ་སཏྭཱ་ཡ། མཧཱ་ཀཱ་རུ་ཎི་ཀཱ་ཡ།

नम आर्य-अवलोकितेश्वराय। बोधिसत्त्वाय। महासत्त्वाय । महाकारुणिकाय।

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཐུགས་རྗེ་ཆེན་པོ་དང་ལྡན་པ་འཕགས་པ་སྤྱན་རས་གཟིགས་དབང་ཕྱུག་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཏདྱ་ཐཱ། ཨོཾ་དྷ་ར་དྷ་ར། དྷི་རི་དྷི་རི། དྷུ་རུ་དྷུ་རུ། [1]ཨི་ཊྚེ་བ་ཊྚེ། ཙ་ལེ་ཙ་ལེ།

तद्यथा । ॐ धर धर। धिरि धिरि । धुरु धुरु । इट्टे वट्टे । चले चले ।

འདི་ལྟ་སྟེ།

པྲ་ཙ་ལེ་པྲ་ཙ་ལེ། ཀུ་སུ་མེ་ཀུ་སུ་མ་བ་རེ་ཨི་ལི་མི་ལི། ཙི་ཏི་ཛྭ་ལམཱ་པ་ན་ཡ་སྭཱ་ཧཱ།།

प्रचले प्रचले कुसुमे कुसुमवरे इलि मिलि। चितिज्वलमापनाय स्वाहा ।

མེ་ཏོག་མ། མེ་ཏོག་མཆོག་མ། མཛེའི་ནད་སེལ་བ་བཞི་ཚུགས།། ॥

༈ ཚུལ་ཁྲིམས་རྣམ་དག་གི་གཟུངས། (शीलविशुद्धिधारणी)

ཨོཾ་ཨ་མོ་གྷ་ཤཱི་ལ་སཾ་བྷ་ར། བྷ་ར་བྷ་ར། མཧཱ་ཤུདྡྷ་སཏྭ།

ॐ अमोघशीलसंभर। भर भर । महाशुद्धसत्त्व ।

དོན་ཡོད་པའི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཀྱི་ཚོགས། རྒྱས་པ་རྒྱས་པ། སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེན་པོ།

པདྨ་བི་བྷཱུ་ཥི་ཏ་བྷུ་ཛ། དྷ་ར་དྷ་ར། ས་མནྟ་ཨ་བ་ལོ་ཀི་ཏེ་ཧཱུྃ་ཕཊ།།

पद्मविभूषितभुज । धर धर । समन्त-अवलोकिते हूँ फट् ।

པདྨས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པའི་ཕྱག། འཛིན་པ་འཛིན་པ། ཀུན་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས།། ॥

དོན་ཡོད་པ་ཡི་ཚུལ་ཁྲིམས་ཚོགས།།
རྒྱས་རྒྱས་སེམས་དཔའ་དག་པ་ཆེ།།
པདྨས་རྣམ་པར་བརྒྱན་པའི་ཕྱག།
འཛིན་འཛིན་ཀུན་ནས་སྤྱན་རས་གཟིགས།།

---

1. ཨི་ཊྚེ་ - ख.

༄ དེ་བཞིན་གཤེགས་པའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ། (तथागतशताक्षर])

ནམསྟྲཻཡདྷྭིཀཱནཱཾ་ཏཐཱགཏཱནཱཾ།   སརྦཏྲཱཔྲཏིཧཏཱཝཱཔྟི་དྷརྨཏཱ་བལཱིནཱཾ།

नमस्त्रैयध्विकानां तथागतानाम्।   सर्वत्राप्रतिहतावाप्तिधर्मताबलीनाम्।

དུས་གསུམ་གྱི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །ཐམས་ཅད་དུ་ཐོགས་པ་མེད་པར་ཐོབ་པའི་ཆོས་ཉིད་ཀྱི་སྟོབས་རྣམས་ལ།

ཨསམ་སམ་སམནྟཏོ྅ནནྟཱཝཱཔྟི་ཤཱསནི།   ཧར་ཧར་སྨར་སྨརཎ།

असमसमसमन्ततोऽनन्तावाप्तिशासनि ।   हर हर स्मर स्मरण । — ?

མི་མཉམ་པ་དང་མཉམ་པ་ཀུན་ནས་མཐའ་ཡས་པར་ཐོབ་པའི་བསྟན་པ།

བིགཏ་རཱག་བུདྡྷ་དྷརྨཏེ།   སར་སར་སམ་བལ།

विगतरागबुद्धधर्मते ।   सर सर समबल ।

འདོད་ཆགས་དང་བྲལ་བའི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་ཉིད།

ཧས་ཧས།   ཏྲཡ་ཏྲཡ།

हस हस । смейся?   त्रय त्रय ।

བྷགཝན྄་མཧཱ་བར་ལཀྵེ།   ཛྭལ་ཛྭལན་སཱགརེ་སྭཱཧཱ།།

भगवन् महावरलक्षणे ।   ज्वल ज्वलनसागरे स्वाहा ।

བཅོམ་ལྡན་འདས་མཚན་མཆོག་ཆེན་པོ།   འབར་ཞིང་འབར་བའི་རྒྱ་མཚོ།། །།

༄ རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའི་ཡི་གེ་བརྒྱ་པ། (वज्रसत्त्वशताक्षर)

ཨོཾ་བཛྲ་སཏྭ་སམཡམནུཔཱལཡ།   བཛྲ་སཏྭཏྭེནོཔཏིཥྛ།

ॐ वज्रसत्त्व समयमनुपालय ।   वज्रसत्त्वत्वेनोपतिष्ठ ।

རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་དམ་ཚིག་རྗེས་སུ་སྐྱོངས། །རྡོ་རྗེ་སེམས་དཔའ་ཉིད་ཀྱི་ཉེར་གནས་མཛོད། །

Ваджрасатва храни обеты   Стань приближённым самого Ваджрасатвы

OM Vajrasattva keep (your) pledge   Vajrasattva reside (in me)

དྲྀ་ཌྷོ་མེ་བྷ་ཝ།

दृढो मे भव ।

བདག་ལ་བརྟན་པར་མཛད་དུ་གསོལ།

Укрепи(упрочь) меня
Make me firm

སུ་ཏོ་ཥྱོ་མེ་བྷ་ཝ

सुतोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་དགྱེས་པར་མཛོད།

Совершенно(очень) обрадуй
Make me satisfied.

སུ་པོ་ཥྱོ་མེ་བྷ་ཝ།

सुपोष्यो मे भव ।

བདག་ལ་ཤིན་ཏུ་རྒྱས་པར་མཛོད།

Fulfill me
(увеличь) меня

ཨ་ནུ་རཀྟོ་མེ་བྷ་ཝ།

अनुरक्तो मे भव ।

བདག་ལ་རྗེས་སུ་ཆགས་པར་མཛོད།

Прояви ко мне сострада
Make me compassionate

སརྦ་སིདྡྷིམྨེ་པྲ་ཡཙྪ།

सर्वसिद्धिम्मे प्रयच्छ ।

བདག་ལ་དངོས་གྲུབ་ཐམས་ཅད་སྩོལ།

Grant me all feats
Даруй мне все Сиддхи

སརྦ་ཀརྨ་སུ་ཙ་མེ་ཙིཏྟཾ་ཤྲེ་ཡཿ་ཀུ་རུ་ཧཱུྃ།

सर्वकर्मसु च मे चित्तं श्रेयः कुरु हूँ ।

ལས་ཀུན་ལ་ཡང་བདག་སེམས་ལ། །དགེ་ལེགས་སུ་མཛོད་ཧཱུྃ།

А также во всех действиях в моём ум
Also make my mind virtuous in
Соверши благо Хум.
(Зделай благо

ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿ་བྷ་ག་ཝན་སརྦ་ཏ་ཐཱ་ག་ཏ་

ह ह ह ह होः भगवन् सर्वतथागत

བཛྲ་མཱ་མེ་མུ་ཉྩ།

वज्र मा मे मुञ्च ।

ཧ་ཧ་ཧ་ཧ་ཧོཿ་བཅོམ་ལྡན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི། །རྡོ་རྗེ་ར་བདག་མ་འདོར[1]།

all the supramundane victorious Ones Gone Thus, do not
Всех Победителей и Так Ушедших
me; make me indivisible.

བཛྲཱི་བྷ་ཝ།

वज्री भव ।

རྡོ་རྗེ་ཅན་མཛོད།

Соверши, Ваджрный

Great Pledge being,

མ་ཧཱ་ས་མ་ཡ་ས་ཏྭ་ཨཱཿ།

महासमयसत्त्व आः ।

དམ་ཚིག་སེམས་དཔའ་ཆེན་པོ་ཨཱཿ། །

МахаСамая Сатва
Великое Существо Обета Аа.

1. འདོར་- ख.

ཨཔསརནྟུ་ཨཝཏཱར་པྲེཀྵིཎོ་དདམྱཧཾ་སརྦ་ལོཀ་དྷཱཏུ་ཝཱསིནཱཾ་པྲེཏཱནཱམཱཧ་རཾ།།

अपसरन्तु अवतारप्रेक्षिणो ददाम्यहं सर्वलोकधातुवासिनां प्रेतानामाहरम्।

འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ཐམས་ཅད་ན་གནས་པའི་ཡི་དྭགས་རྣམས་ལ་བདག་བཟའ་བ་འདི་སྦྱེར་གྱི། གླགས་ལྟ་པ་རྣམས་ཕྱིར་དེངས་ཤིག། །།

༈ ཕུད་མཆོད་འབུལ་བའི་སྔགས།

(अग्रपूजार्पणमन्त्र)

ཨོཾ་གུ་རུ་བཛྲ་ནཻཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿཧཱུཾ།

ॐ गुरु वज्र नैवेद्य आ: हूँ ।

བླ་མ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།

चतुर्थी

ཨོཾ་སརྦ་བུདྡྷ་བོདྷི་སཏྭེ་བྷྱོ་བཛྲ་ནཻཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿཧཱུཾ།

ॐ सर्वबुद्धबोधिसत्त्वेभ्यो वज्रनैवेद्य आ: हूँ ।

སངས་རྒྱས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་ཐམས་ཅད་ལ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།

ཨོཾ་ཀཱམ་དེཝ་མཎྜལ་བཛྲ་ནཻཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿཧཱུཾ། कामदेवमण्डलाय ? वज्रनैवे 4.

ॐ कामदेवमण्डलवज्रनैवेद्य आ: हूँ ।

འདོད་ལྷའི་དཀྱིལ་འཁོར་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།

ཨོཾཿ ཤྲཱི་དྷརྨ་པཱལ་བཛྲ་ནཻཝི[ཝེ]དྱ་ཨཱཿཧཱུཾ།།

ॐ श्रीधर्मपालवज्रनैवेद्य आ: हूँ ।

དཔལ་ལྡན་ཆོས་སྐྱོང་བ་རྡོ་རྗེའི་ཞལ་ཟས།། །། श्रीधर्मपालेभ्यः वज्रनैवेद 4

༄ ཚང་བུའི་སྔགས། (पिण्डमन्त्र)

ཨོཾ་ཧ་རི་ཏེ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ हरिते स्वाहा ।

འཕྲོག་མ་ལ་ལིགས་པ་སྦྱིན།

ཨོཾ་ཧ་རི་ཏེ་མ་ཧཱ་བཛྲ་ཡཀྵི་ཎི་ཧ་ར་ཧ་ར་སརྦ་པཱ་པཾ་མཀྵིཾ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ हरिते महावज्रयक्षिणि हर हर सर्वपापं मक्षिं स्वाहा ।

འཕྲོག་མ་རྡོ་རྗེ་གནོད་སྦྱིན་ཆེན་མོ་ཕྲོགས་ཕྲོགས་སྡིག་པ་ཐམས་ཅད།

ཨོཾ་ཨགྲ་པིཎྜ་ཨ་ཤི་བྷྱཿ་སྭཱ་ཧཱ།

ॐ अग्रपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

ཕུད་ཀྱི་ཚང་བུ་ལ་དབང་བ་རྣམས་ལ་ལིགས་པ་སྦྱིན།

ཨོཾ་ཨུཙྪིཥྚ་པིཎྜ་ཨ་ཤི་བྷྱཿ་སྭཱ་ཧཱ།།

ॐ उच्छिष्टपिण्ड-अशिभ्यः स्वाहा ।

ལྷག་མའི་ཚང་བུ་ལ་དབང་བ་རྣམས་ལ་ལིགས་པ་སྦྱིན།། །།

༄ སྦྱོང་བ་ཆོས་ཉིད་རྣམ་པར་དག་པའི་སྔགས།
(शोधनधर्मताविशुद्धिमन्त्र)

ཨོཾ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷཱཿ་སརྦ་དྷརྨཱཿ་སྭ་བྷཱ་ཝ་ཤུདྡྷོ྅ཧཾ།

ॐ स्वभावशुद्धाः सर्वधर्माः स्वभावशुद्धोऽहम् ।

རང་བཞིན་དག་པའི་ཆོས་ཐམས་ཅད་རང་བཞིན་དག་པའོ།། །།

༄ སྤེལ་བ་ནམ་མཁའ་མཛོད་ཀྱི་སྔགས།

(संवर्द्धनगगनगञ्जमन्त्र)

ནམསྶརྦ་ཏཐཱགཏེབྷྱོ་བིཤྭ་མུཁེབྷྱཿ།

नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྒོ་སྣ་ཚོགས་ནས་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

སརྦཐཱ་ཁཾ་ཨུདྒཏེ་སྥ་ར་ཎ་ཨི་མཾ་ག་ག་ན་ཁཾ་སྭཱ་ཧཱ།།

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं स्वाहा ।

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁར་འཕགས་ཤིང་ཁྱབ་པ་འདི་ནམ་མཁའི་དབྱིངས་སུ་གཞི་ཚུགས།། ॥

༄ བདུད་རྩི་འཁྱིལ་བའི་སྔགས།

(अमृतकुण्डलीमन्त्र)

ཨོཾ་བཛྲ་ཨམྲྀ་ཏ་ཀུཎྜ་ལི་ཧ་ན་ཧ་ན་ཧཱུྃ་ཕཊ།

ॐ वज्र-अमृतकुण्डलि हन हन हूँ फट् ।

རྡོ་རྗེ་བདུད་རྩི་འཁྱིལ་པ་སྣུན་སྣུན།། ॥

༄ སྤྱོད་པར་དབང་བ་ཤུགས་ལྡན་འོད་ཀྱི་སྔགས།

(चर्यावशितावेगवदंशुमन्त्र)

ནམསྶརྦ་ཏཐཱགཏ་ཨཝལོཀིཏེ།

नमस्सर्वतथागत-अवलोकिते ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ཀུན་ཏུ་གཟིགས་པ་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ། །

ཨོཾ་སམྦྷར་སམྦྷར་ཧཱུྃ།།

ॐ सम्भर सम्भर हूँ ।

ཡང་དག་པར་རྒྱས་པ་ཡང་དག་པར་རྒྱས་པ།། །།

༈ ཡེ་ཤེས་སྐར་མདའི་སྔགས། (**ज्ञानोल्कामन्त्र**)

ཨོཾ་ཛྙཱན་ཨཱཝལོཀིཏེ།

ॐ ज्ञान–अवलोकिते ।

ཡེ་ཤེས་སྐར་མདའ།

ནམསྶམནྟ་སྥརཎ་རཤྨི་སམྦྷཝ་སམཡ།

नमस्समन्तस्फरणरश्मिसम्भवसमय ।

ཕྱག་འཚལ་ལོ་ཀུན་ནས་འཕྲོ་བའི་འོད་ཟེར་
འབྱུང་བ་དམ་ཚིག

མཧཱ་མཎི། དུ་རུ་དུ་རུ།

महामणि । दुरु दुरु ।

ནོར་བུ་ཆེན་པོ།

ཧྲིདཡ་ཛལནི་ཧཱུྃ།།

हृदयजलनि हूँ ।

སྙིང་པོ་ཆུ་རྣམས།། །།

༈ དབང་བསྒྱུར་འཁོར་ལོའི་སྔགས། (**वशिताचक्रमन्त्र**)

ནམསྶམནྟ་བུདྡྷཱནཱཾ།

नमस्समन्तबुद्धानाम्।

ཀུན་ནས་སངས་རྒྱས་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

གྲཧེཤྭརི་པྲབྷཉྫ་ཛ[ཛྙ]ཏི་མཧཱ་སམཡ་སྭཱཧཱ།།

ग्रहेश्वरि प्रभञ्जति महासमय स्वाहा ।

གཟའི་དབང་ཕྱུག་རབ་ཏུ་འཇོམས་པ་དམ་ཚིག་ཆེན་པོ་གཞི་ཚུགས།། །།

༄ ཡང་ཆུ་གཏོར་ལུགས་གཅིག་གི་སྔགས།

(पुनः आम्नायान्तरेण जलबलिमन्त्र)

ཨོཾ་སརྦ་ཀ་རི་ཧཱུཾ།
ॐ सर्वकरि हूँ ।
ཐམས་ཅད་བྱེད་པ།

ཨོཾ་སརྦ་སིདྡྷི་ཧཱུཾ།
ॐ सर्वसिद्धि हूँ ।
ཐམས་ཅད་གྲུབ་པ།། ||

༄ ཀླུ་གཏོར་གྱི་སྔགས།

(नागबलिमन्त्र)

ཨོཾ་ནཱ་ག་སཔ་རིཝཱར་སམཡ་ཧཱུཾ་ཛཿཛཿ།
ॐ नागसपरिवारसमय हूँ जः जः।
ཀླུ་འཁོར་དང་བཅས་པ་དམ་ཚིག

ཨོཾ་བཱསུགི་མཾ་སྭཱཧཱ།
ॐ वासुकि मां स्वाहा ।
ནོར་རྒྱས་ཀྱི་བུ

ཨོཾ་ནཱ་ག་སཔ་རིཝཱར་གཙྪ།།
ॐ नागसपरिवार गच्छ ।
ཀླུ་འཁོར་དང་བཅས་པ་སོང་།། ||

༄ ལྷ་མོ་འོད་ཟེར་ཅན་གྱི་སྔགས།

(मारीचीदेवीमन्त्र)

ཨོཾ་མ་རི[མཱརཱི]ཙྱཻ་མཾ་སྭཱཧཱ།
ॐ मारीच्यै मां स्वाहा ।
འོད་ཟེར་ཅན་མ།། ||

༄༅ ཕྱོགས་སྐྱོང་བཅུའི་སྔགས།

(दशदिक्पालमन्त्र)

དཤ་དི་ཀ་ལོ་ཀ་པཱ་ལ་སཔ་རི་ཝཱ་ར་ཨེ་ཧྱེ་ཧི་པདྨ་ཀ་མ་ལ་སྟྭཾ། སམ་ཡ་སྟྭཾ།

दशदिक्लोकपालसपरिवार एह्येहि पद्मकमलस्त्वम्। समयस्त्वम्।

ཕྱོགས་བཅུ་འཇིག་རྟེན་སྐྱོང་བ་འཁོར་དང་བཅས་པ་ཚུར་བྱོན་ཚུར་བྱོན། པད་མ་པད་མ་ཁྱོད། དམ་ཚིག་ཁྱོད།

ཨོཾ་ཨིནྡྲཱ་ཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।

དབང་པོ་ལ་ཞེགས་པ་སྦྱིན།

ཨོཾ་ཨགྣ་ཡེ་སྭཱཧཱ།

ॐ अग्नये स्वाहा ।

མེ་ལྷ་ལ་གཞི་ཚུགས།

ཨོཾ་ཡམཱ་ཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ यमाय स्वाहा ।

གཤིན་རྗེ་ལ།

ཨོཾ་ནཻརྀ་ཏྱ་[ནཻརྀ་ཏ་ཡེ་] སྭཱཧཱ།

ॐ निर्ऋतये स्वाहा ।

བདེན་བྲལ་ལ།

ཨོཾ་བ་རུ་ཎཱ་ཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ वरुणाय स्वाहा ।

ཆུ་ལྷ་ལ།

ཨོཾ་ཝཱ་ཡ་ཝེ་སྭཱཧཱ།

ॐ वायवे स्वाहा ।

རླུང་ལྷ་ལ།

ཨོཾ་ཀུ་བེ་རཱ་ཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ कुबेराय स्वाहा ।

ལུས་ངན་ལ།

ཨོཾ་ཨཱི་ཤཱ་ནཱ་ཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ ईशानाय स्वाहा ।

དབང་ལྡན་ལ།

ཨོཾ་བྲཧྨཎེ་སྭཱཧཱ།

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।

ཚངས་པ་ལ།

ཨོཾ་སུ[སཱུ]རྱཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ सूर्याय स्वाहा ।

ཉི་མ་ལ།

ཨོཾ་ཙནྡྲཱཡ་སྭཱཧཱ།

ॐ चन्द्राय स्वाहा ।

ཟླ་བ་ལ།

ཨོཾ་པྲྀཐིཝཱིབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ पृथिवीभ्यः स्वाहा ।

སའི་ལྷ་མོ་ལ།

ཨོཾ་ནཱགེབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ नागेभ्यः स्वाहा ।

ཀླུ་རྣམས་ལ།

ཨོཾ་ཨསུརེབྷྱཿ་སྭཱཧཱ།

ॐ असुरेभ्यः स्वाहा ।

ལྷ་མ་ཡིན་རྣམས་ལ་ལེགས་པ་སྦྱིན།

ནམསྶརྦ་ཏཐཱགཏེབྷྱོ་བིཤྭ་མུཁེབྷྱཿ།

नमस्सर्वतथागतेभ्यो विश्वमुखेभ्यः ।

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་ལ་སྒོ་སྣ་ཚོགས་ནས་ཕྱག་འཚལ་ལོ།།

སརྦ་ཐཱ་ཁཾ་ཨུདྒཏེ་སྥ་རཎ་ཨིམཾ་གགན་ཁཾ།

सर्वथा खं उद्गते स्फरण इमं गगन खं ।

རྣམ་པ་ཐམས་ཅད་དུ་ནམ་མཁར་འཕགས་ཤིང་ཁྱབ་པ་འདི་ནམ་ཁའི་དབྱིངས་སུ།

གྲྀཧྣེདམྦལྱཱདི་སྭཱཧཱ།།

गृह्णेदम्बल्यादि स्वाहा ।

གཏོར་མ་ལ་སོགས་པ་འདི་བཟུང་།། །།

བནྡྷ་བནྡྷ། ཧན་ཧན། དཧ་དཧ། པཙ་པཙ་[1]དིནམེཀེན་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཧཱུྃ།།

बन्ध बन्ध । हन हन । दह दह । पच पच दिनमेकेन हूँ फट् हूँ ।

ཆིངས་ཆིངས། སྲུན་སྲུན། སྲེགས་སྲེགས། ཆོས་ཆོས་ཉི་མ་གཅིག་གིས་སོ།།

ཨོཾ་མཧཱ་ཀཱལ་ཧཱུྃ་ཕཊ། ཨོཾ་མཧཱ་ཀཱལཱཡ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ་སྭཱཧཱ།།

ॐ महाकाल हूँ फट् । ॐ महाकालाय हूँ हूँ फट् फट् स्वाहा ।

ནག་པོ་ཆེན་པོ། ནག་པོ་ཆེན་པོ་ལ།། ||

༄ ལྷ་མོའི་སྔགས་ནི། (देवी[महाकाली]मन्त्र)

ཨོཾ་རུ་རུ་རོ་རུ་ བིཏིཥྛ་[2]བདྷྭསི་ཀམལ་རཱཀྵསི་ཧཱུྃ་བྷྱོ་ཧཱུྃ།།

ॐ रु रु रो रु वितिष्ठ वध्वसि कमल राक्षसि हूँ भ्यो हूँ ।

སྲྀ་སྲྀགས་སྲྀ་དབྱངས་ལྷ་མོ་པདྨ་ལ་རྣམ་པར་གནས་པའི་སྲིན་པོའི་བུ་མོ།། ||

༄ བསྔོ་བའི་ཚིགས་བཅད། (परिणामनाश्लोक)

ཡཱནཱིཧ་བྷཱུཏཱནི་སམཱགཏཱ[ཏཱ]ནི་སྠིཏཱནི་བྷཱུམཱཝཐཱནྟརཱིཀྵེ།

यानीह भूतानि समागतानि स्थितानि भूमावथान्तरीक्षे ।

འབྱུང་པོ་གང་དག་འདིར་ནི་ལྷགས་གྱུར་ཏམ། །ས་འམ་འོན་ཏེ་བར་སྣང་འགྲོད་པའང་རུང་། །

ཀུརྦནྟུ་མཻཏྲི[ཏྲཱིཾ]་སཏཏཾ་པྲཛཱསུ་དིཝཱ་ཙ་རཱཏྲཽ་ཙ་ཙརནྟུ་དྷརྨཾ།།

कुर्वन्तु मैत्रीं सततं प्रजासु दिवा च रात्रौ च चरन्तु धर्मम् ॥

སྐྱེ་དགུ་རྣམས་ལ་རྟག་ཏུ་བྱམས་བྱེད་ཅིང་། །ཉིན་དང་མཚན་དུ་ཆོས་ལ་སྤྱོད་པར་ཤོག། ||

---

1. བནྡྷི- ख.
2. དིནཻཀེན་མཧཱཀཱལཱཡ་ཧཱུྃ་ཧཱུྃ་ཕཊ་ཕཊ། - सा० मा० (भा० २), पृ० ५८५.

ISBN: 81-87127-55-4